स्त्रीदर्पण

जिस में विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवी-
णता और निपुणता और उत्तम वार्त्ता
लाप का वर्णन अति सरलता और
सुगमता सहित किया गया है

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ़ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ
दूसरी बार
मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ॥

अक्तूबर सन् १८७९ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन् १८७९ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लि[illegible]
तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घ[illegible]
कर नियत हुवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार
की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीम[illegible]
का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
व्याकरण और ज्योतिष।	अमरविनोद	भगवद्गीता
सिद्धान्त चन्द्रिका	जगदविनोद	भगवतीगीता
लघुकौमुदी	औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	श्रीमद्भागवत सटीक
मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी	निघण्ट भाषा	तथा दशम स्कन्ध
शीघ्रबोध	वैद्यदर्पण	हनुमान बाहुक
पाराशरी सटीक	रामविनोद	सांख्यतत्त्व कौमुदी
मुहूर्त्त गणपति	कोष और इतिहास ॥	सुखसागर टेपका
सङ्ग्रह शिरोमणि	शिवसिंह सरोज	ब्रह्मसार
जातक चन्द्रिका	सामुद्रिक	परमार्त्थ सार
लघुजातक भाषाटीका	गणित कामधेनु	प्रेमसागर
सहित	कमीशन बड़ोदा	सूरसागर
भाषाजातकालङ्कार	शब्दार्त्थ कोष	रागप्रकाश
संस्कृत जातकालङ्कार	अमरकोष तीनों काण्ड-	भक्तमाल
जातकाभरण	भाषाटीका सहित	अवधयात्रा
मूहूर्त्त दीपक	अमरकोष प्रथम काण्ड	कथा गंगाजी
होरा मकरन्द	अनेकार्त्थ कोष	रामायण टेप की
मुहूर्त्त चिन्तामणि	ब्रजविलास	रामायण जिल्दबन्दी
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड	दुर्गापाठ सटीक	रामायण तुलसीकृत प-
वैद्यक	दुर्गापाठ मूल	त्थर के छापे की
शार्ङ्गधर सटीक	अपराध भञ्जन स्तोत्र	सतसई रामायण
वैद्यजीवन	महिम्न स्तोत्र	कवितावली रामायण
वैद्य मनोत्सव	श्री गोपाल सहस्त्रनाम	गीतावली रामायण
अमृत सार बड़ी	शिवार्जुन	रामायण दोहावली
[illegible] सागर	गङ्गालहरी	सुन्दरी चरित्र

स्त्री दर्पण ॥

—·※·—

जिसमें विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का परमार्थ साधन और गृह कार्य्य की प्रवीणता और निपुणता और उत्तम वार्त्तालाप का वर्णन अति सरलता और सुगमता सहित किया गया है ॥

—o—

काश्मीरि पण्डित माधव प्रसाद साहब ऐक्स्ट्रासिस्टेन्ट कमिश्नर
ज़िलअ सुल्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ

दूसरी वार

मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
मुद्रित हुआ ॥

—o—

अक्टूबर सन् १८७९ ई०

भूमिका ॥

धन्य है उस परमेश्वर सर्व शक्ति प्रभु को जिसने अपनी इच्छा से इस संसार को प्रकट किया जिसको देख कर बड़े बड़े ज्ञानवान और ज्योतिषी और पण्डितों की बुद्धि इस संसार रूपी सागर की रचना में डूबती और उछलती है और वार बार पार नहीं पाती और यथार्थ में गुणानुवाद और प्रशंसा के योग्य वही परमात्मा है जिसकी माया के चरित्र अद्भुत और चित्र बिचित्र भासते हैं और बड़े २ बुद्धिमान उसके यश कीर्तन में नेति नेति पुकारते हैं यह जगत उसका प्रकाश और वही इसका प्रकाशक है उसने अपनी कृपा से कदाचित् जिसके हृदय में सूर्य्य रूपी ज्ञान उदय कर दिया उसको तो निःसन्देह इस प्रकाशका चमत्कार ऐसे माया रूपीअन्धकार में सुझाई दिया नहीं तो बहुतों ने इसमें खोज किया परन्तु आदि अन्त न पाया उसकी लीला की गति अपरम्पार है वही सब का कर्ता है अब हमको भी उचित है कि अपने परमात्मा परमधाम के चरण कमल में शीस नवावें और मन बच कर्म से ज्ञान रूपी ज्योति के प्रकाश होने का अपने हृदय में उससे कांक्षा करें कि वही सब जगत के मनुष्यों का अज्ञान रूपी सागर से बेड़ा पार करेगा लिखनेका प्रयोजन इस पुस्तक के और कारण इस कहनावत के कहनेका यह है कि इन दिनों में गवर्नमेण्ट इण्डिया की अभिलाषा इस बात पर विशेष करके है कि स्त्रियों को भी लिखना पढ़ना सिख-लाना और सुहाग बुद्धिसे शृंगार देना चाहिये और मेरी बुद्धि में भी स्त्रियों के पढ़ाने लिखाने की आवश्यकता इसलिये विशेष है कि वे अपने धर्म कर्म की बातों से जानकारी प्राप्त कर घरका बंदोबस्त अच्छे प्रकार से कर सकें और नन्हे नन्हें बच्चे जब तक कि पाठशाला नहीं जा सकते उनको बातों बातों में लिखने पढ़ने की बातें सिखा सकें कि उस से उन बच्चों को पढ़ने के समयमें बहुत लाभ हो परन्तु बहुत से मनुष्य हमारे देश के स्त्रियों का पढ़ना उत्तम नहीं समझते विद्या ऐसे पदार्थ का स्त्रियों को प्राप्त होने में अच्छा नहीं जानते इस जगह उनके संदेह व शंका का खण्डन करना नहीं चाहता परन्तु मैं उनसे यह कहूंगा कि वे प्राचीन कालका वृत्तान्त पुस्तकों से देख लें कि जब हिन्दुओं का राज्य था स्त्रियों के पढ़ने लिखने की कितनी चर्चा थी कि गान्धारीजी जो राजाधृतराष्ट्र की रानी और कौरवों की माता थी लिखने पढ़ने में बड़ी प्रवीण थीं व्यासजी ऐसे ऋषि उससे सम्मति लेते थे अखीर समय में राजा भोज की रानी लीलावती बड़ी पण्डिता हुई जिसका भोजप्रबन्ध में बिस्तार सहित वृत्तान्त

लखा है प्रयोजन यह है कि अगले समय में बहुत पढ़ी लिखी स्त्रियां होंगई कि जिनका वृत्तान्त जो लिखा जाय तो एक जुदी पोथी बनजाय कई बर्ष हुये कि मैंने एक पुस्तक उर्दू भाषा में देखी जो किसी मुसल्मान डिपुटी कलक्टर ने लड़कियों के शिक्षा के हेतु बनाई थी उस पुस्तकके देखने से मुझको प्रकट हुआ कि यह पुस्तक इस प्रकार की बनी है कि कदाचित्‌स्त्री अथवा पुरुष उसको देखें तो अलबत्ता जाने कि स्त्रियों का पढ़ना कितना अवश्य है और पढ़ी लिखी स्त्री किसतरह अच्छे प्रकार से घरका बन्दोबस्त कर सक्ती है परन्तु वह पुस्तक जो कि उर्दू में है और बोल चाल और सब बातें उसकी मुसल्मान औरतों की हैं इसलिये मैंने सोचा कि जो इसी ढंग पर नागरी भाषा में ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिसमें हिन्दुओं की लड़कियों का वृत्तान्त हो और सब बात चीत हिन्दुओं के अनुसार हो कि उत्तम घराने में बहुधा लड़कियां नागरी पढ़ी हुई होतीहैं तो ऐसी पुस्तक के पढ़ने से अत्यन्त उनको लाभ और निर्मल बुद्धि प्राप्त होगी जिससे अनेक प्रकार का सुख भोग करेंगी धन्य है उस परमात्माको कि जिसने यह अभिलाषा मेरी पूर्ण की और यह पुस्तक समाप्त हुई नाम इसका मैंने स्त्री दर्पण रक्खा ॥

स्त्री दर्पण ॥

जो मनुष्य जगतकी व्यवस्थापर कभी विचार नहीं करता उससे अधिक कोई बुद्धिहीन नहीं है विचार करने के लिये सृष्टि में अनेक प्रकार की बातें हैं परन्तु सब से उत्तम और अवश्य मनुष्य की दशा है विचार करना चाहिये कि जिस दिनसे मनुष्य उत्पन्न होता है जन्मसे मरण काल तक उसको क्या २ बाधा आगे आती हैं और किस प्रकार उसकी दशा बदला करती है मनुष्य की अवस्था में सब से अच्छा समय लड़कपन का है इस अवस्था में मनुष्य को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती माता पिता अति प्रेम से पालते हैं और यथा शक्ति उसको सुख देते हैं सन्तान के अच्छे भोजन और वस्त्र से माता पिताको आनन्द होताहै बल्कि मा बाप सन्तान के सुख के कारण अपने ऊपर बड़े २ क्लेश उठाते हैं जो पिता होते हैं मजदूरी मेहनत से कमाते हैं कोई उद्यम करते हैं कोई व्योपार कोई नौकरी ग़र्ज़ जिस प्रकार से बन पड़ता है सन्तान के सुख के हेतु धन पैदा करते हैं और जो माता होती है अगर बाप की कमाई घरके खर्चको अट नहीं सक्ती किसी काल में द्रव्य के हेतु आप भी मेहनत किया करती हैं कोई माता सिलाई करती है कोई गोटा बिनती है कोई टोपियां काढ़तीहै यहां तक कोई दुखकी मारी माता चर्खा कातकर चक्की पीसकर अपने बच्चों को पालती है सन्तानकी ममता जो मा बाप को होती है बनावट और दिखावट की नहीं होती बल्कि सच्ची और अंतःकरण का स्नेह है परमेश्वर ने सन्तान की ममता माता पिता को इस कारण लगादी है

कि उनका प्रति पालन होय बाल अवस्था में बच्चे निहायत बेबस होते हैं न बोलते न समझते न चलते न फिरते अगर मा बाप प्रीति से पुत्र को न पालते तो बच्चे भूखों मरजाते कहां से उनको रोटी मिलती कहां से कपड़ा लाते और किस प्रकार बड़े होते मनुष्य पर तो क्या पशु पक्षियों में भी बच्चे की ममता बहुत है मुर्गी बच्चे को किस प्रकार से पालती है दिनभर उनको पंखों में छिपाये बैठी रहती है और एक दाना भी अनाज का जो उसको मिलता है तो आप नहीं खाती बच्चों को बुलाकर चोंच से उनके आगे धर देती है अगर चील्ह या बिल्ली उसके बच्चों को मारना चाहे तो अपने जीव का शोच न करके लड़ने और मरने को तैयार हो जाती है ग़रज़ यह छोह और प्रीति मा बापको इसी-लिये परमेश्वर ने दीहै कि छोटे से नन्हे २ बालकों को जो इच्छा हो अटकी न रहे क्षुधा के समय भोजन और प्यास के समय पानी सर्दी से बचने को ऊनी कपड़ा और अनेक प्रकार की सुख की वस्तु समय पर मिलजावैं देखने से यह बात मालूम होती है कि यह निर्मल प्रीति उसी समय तक रहती है जब तक बच्चों को जरूरत और एहतियाज होती है जब मुर्ग़ी के बच्चे बड़े होजाते हैं वह उनको परों में छिपाना छोड़ देती है और जब बच्चे चल फिरके अपना पेट आप भर लेने के योग्य होजाते हैं मुर्ग़ी कुछ भी उनकी सहायता नहीं करती बल्कि जब बड़े होजाते हैं इस प्रकार मारने लगती है कि मानो वह उनकी माता नहीं है मनुष्य के माता पिता का भी यही हाल है जब तक बालक बहुत छोटा है माता दूध पिलाती है और उसको गोद में उठाये फिरती है अपनी नींद हराम करके बच्चे को थपक २ कर सुलाती है जब बालक इतना सयाना हुआ कि वह खिचरी दाल चावल खाने लगा मा दूध बिल्कुल् छुड़ादेती है और वही दूध जिसको बर्षों दुलार से पिलाती रही कठोरताई और कठिनाई से नहीं पीने देती माजुई वस्तु थनों पर लगा

लेती है और बालक हठ करता है तो मारती और घुड़कती है कुछ दिनों पीछे बच्चों का यह हाल होजाता है कि गोदमें लेना तक नागवार होता है क्या हमने अपने छोटे भाई बहिन को इस बात पर मारखाते नहीं देखा कि मा के गोद से नहीं उतरते हैं और माता रिस करती है कि कैसा कपूत लड़का है कि एक क्षणमात्र को गोद से नहीं उतरता इन बातों से यह मत समझो कि माको प्रीति नहीं रही बल्कि हर एक अवस्था के साथ एक नये प्रकार की प्रीति होती है सन्तान की दशा एकसी नहीं रहती आज दूध पीते हैं फिर खाने लगे फिर पांओं चलना सीखा जितना बड़ा बच्चा होता गया उसी प्रकार प्रीति का रंग बदलता गया लड़के और लड़कियां पढ़ने लिखने के लिये कैसी २ मारें खाते हैं अगर ना समझी से बच्चे न समझें परन्तु मा बाप के हाथों से जो क्लेश कि तुमको पहुंचे वह अवश्य तुम्हारे अर्थ के लिये हैं तुम को संसार में माता पिता से अलग रह कर बहुत दिनों जीना पड़ेगा किसी के मा बाप जन्म भर जीते नहीं रहते अहो भाग्य है उन लड़के और लड़कियों के जिन्होंने मा बापके जीतेजी ऐसा हुनर और अदब सीखा जिस से उनके जन्म भर सुख चैन में गुजरे और बड़े निकृष्ट भाग्य हैं वह लड़के या लड़कियां जिसने माता पिता के जीनेकी क़दर न की और खुब मा बापके कारण मिला उसको अकार्थ किया और ऐसी अच्छे मावकाश और निश्चिन्त के समय को आलस्य और खेल कूद में खो दिया और जन्म भर दुख और क्लेश में काटा आप दुःख में रहे और माता पिता को भी अपने कारण क्लेश में रक्खा मरने पर कुछ अवश्य नहीं शादी ब्याह हुये पीछे औलाद मा बाप से जीते जी छूट जाते हैं जब औलाद जवान होती है मा बाप वृद्ध होजाते हैं और आप पुत्र के आधीन होजाते हैं और इसी से जवान हुये पीछे पुत्र को माता पिता से सहायता नहीं मिल सकी बल्कि पुत्रहो को माता पिता की

सेवा करनी पड़ती है पुत्र और पुत्रियों को उस समयपर बड़ा विचार करना चाहिये कि मा बापसे अलग हुये पीछे उनकी अवस्था किस प्रकार बीतेगी संसारमें बहुत भारी बोझा पुरुषों के शिरपर है संसार में खाना कपड़ा और नित्य के खर्च की सब वस्तु द्रव्य से मिलती है और सब खटराग द्रव्यका है स्त्रियों को बड़े आनन्दकी बात है कि बहुधा कमाने और द्रव्यके पैदा करने के लिये उनको कुछभी परिश्रम नहीं करना पड़ता देखो पुरुष उद्यम के लिये कैसे २ कठिन परिश्रम करते हैं कोई भारी भार शिर पर उठाता है कोई लकड़ी ढोता है सुनार, लुहार, ठठेरा, कसेरा, कंदलागर, जरकोब, तारकश, मुलम्मासाज़, सलमा सितारे वाला, बिदुर साज, मीना साज, क़लईगर, आईना साज, जरदोज, मनिहार, नालबन्द, नगीना बनाने वाला, कामदानी वाला, सानगर, नियारिया, बढ़ई, खरादी, नारियल वाला, कंघी बनाने वाला, नसफोड़, कागज़ी, जुलाहा, रफूगर, रंगरेज, छीपी, दस्तारबंद, दर्ज़ी, नैचाबंद, मोची, मुहरकन, संगतराश, श्यामार, कुम्हार, हलवाई, तेली, तमोली, गन्धी वग़ैरह, जितने उद्यम वाले हैं सबके कामों में बराबर का क्लेश है और यह क्लेश द्रव्य के हेतु पुरुष सहते और उठाते हैं परंतु इस बातसे यह नहीं समझना चाहिये कि स्त्रियों को सिवाय खाने और पीने और सो रहने के कोई कार्य्य संसार का ताल्लुक़ नहीं है बल्कि गृहस्थी के बहुत कार्य स्त्रियां करती हैं पुरुष अपनी कमाई स्त्रियों के आगे लाकर धर देते हैं स्त्रियां अपनी बुद्धि से उस को ऐसे यत्न और सुघराई के साथ उठाती हैं कि सुख के सिवाय इज्ज़त और नाम पर दाग़ लगने नहीं पाता पस अगर विचार से देखो तो संसार रूपी गाड़ी जब तक एक पहिया पुरुष और दूसरा पहिया स्त्रीका नहो चल नहीं सक्ती पुरुषको द्रव्य की कमाई से इतना समय नहीं बचता कि उसको घरके छोटे छोटे कार्यों में लगावे। ऐ लड़को, वह बात सीखो कि पुरुष

होने पर तुम्हारे काम आवे। और ऐ लड़कियो, वह गुणप्राप्त करो कि स्त्री होने पर तुमको उससे आनन्द और स्वार्थ प्राप्त हो अगर्चे इसमें संदेह नहीं है कि स्त्रीको परमेश्वरने पुरुष से किसी क़दर निर्बल पैदा कियाहै परंतु हाथपांव कान आंख बुद्धि समझ याद सब मनुष्य के बराबर स्त्री को दिये हैं लड़के इन्हीं वस्तुवोंसे काम ले कर मुंशी पण्डित आचार्य बैद्य कारीगर दस्तकार हर इल्म में होशियार और सब हुनरमें चतुर होजाते हैं लड़कियां अपना समय गुड़ियां खेलने और कहानी सुननेमें खोकर बेहुनर रहतीहैं जिन स्त्रियोंने समयकी क़दर पहचानी और उसको कामकी बातोंमें लगाया वह पुरुषोंकी तरह संसारमें मशहूर हुईहैं जैसे मैत्रेयी व गांधारी व लीलावती वग़ैरह या इनदिनोंमें अंगरेजोंकी शाहजादी श्रीमहारानी विक्टोरिया यह वह स्त्रियांहैं जिन्हों ने एक छोटेसे घर और कुनबे का नहीं बल्कि एकदेश और जगत् का बन्दोबस्त किया बाज़ अज्ञान स्त्रियां शोच करतीं हैं कि बहुत पढ़कर क्या पुरुषोंके समान मुंशी और पण्डित होनाहै फिर क्लेश करने से क्या प्रयोजन परंतु जो कोई स्त्री विशेष पढ़गईहै तो निस्संदेह उसने विशेष स्वार्थ और परमार्थ भी प्राप्त कियाहै हम इसबातसे इन्कार नहीं करते कि विशेष विद्या स्त्रियोंको पढ़ना अवश्य नहीं परंतु जितना अवश्यहै उसको कितनी स्त्रियां हासिल करतीहैं कमसे कम उर्दू या नागरी भाषापढ़ना अवश्य है अगर इतना नहीं है तो विशेषहर्ज होताहै यह अपनेकी बात दूसरे पर प्रकट करना पड़तीहै या उसको छिपानेसे हानि होती है स्त्रियों की बातें बहुधा लज्जा और पर्दे की होती हैं परंतु अपनी माता और भगिनीसे कभी उनको जाहिरकरने की ज़रूरत होतीहै संयोगसे समय पर मा बहिन पास नहीं आतीं ऐसी जगह पर लज्जाको छोड़कर कहनाही पड़ताहै नहीं तो कार्य्य हानि होताहै लिखना पढ़नेसे कठिनहै परंतु अगर कोई मनुष्य किसी पुस्तकसे चारसतर रोज़ नक़लकिया करे और इसीक़दर अपने दिलसे बनाकर लिखाकरे और इस-

लाह लिया करे तो जरूर थोड़े दिनों में वह लिखना सीख जायगा अच्छे अक्षर लिखनेसे कुछ प्रयोजन नहीं लिखना एक हुनरहै जो जरूरतके समय बहुत काम आताहै अगर अशुद्ध हो या अक्षर बदसूरत औ ना दुरुस्त लिखे जांय तो बेदिल होकर सम्झको छोड़ मतदो कोई कार्य हो प्रथम अच्छा नहीं हुआ करता अगर कैसे बड़े पण्डितको एक टोपी कतरने और सीने को देव जिसने कभी न कतरी और सीं हो अवश्य वह टोपी को खराब करेगा चलना फिरना जो तुमको अब ऐसा सहजहै कि बेपरिश्रमकरे दौड़ते फिरतेहो तुमको कदाचित् याद न रहा हो कि तुमने किस ढंगसे सीखा परंतु तुम्हारे माता पिता और बड़ोंको अच्छेप्रकारसे यादहै पहिले तुमको वेसहारे बैठना नहीं आता था जब तुमको गोदसे उतारकर नीचे बैठाते थे एक आदमी पकड़े रहता था या तकिये का सहारा लगादेते थे फिर तुमने गिर पड़कर घुटनोंचलना सीखा फिर खड़ाहोना फिर चारपाई पकड़कर फिर जब तुम्हारे पांव अधिक मजबूत होगये तो धीरे धीरे चलना आगया परंतु सैकड़ों बेर तुम्हारे चोटलगी और हमने तुमको गिरते सुना अब वही तुमहो कि परमेश्वरकी कृपासे दौड़े २ फिरते हो इसी प्रकार एक दिन लिखना भी आ जायगा और माना अगर लड़कों की तरह लिखना भी न आया तौ भी बक़दर जरूरत तो जरूर आ जायगा और यह बात तो न रहेगी कि धोबिनके कपड़ों और पिसनहरी कि पिसाईको याद रखनेके हेतु दीवार पर लकीरें खींचती फिरो या कङ्कड़ पत्थर जोड़कर रक्खो घरका हिसाब किताब लेना देना जबानी याद रखना बहुत कठिनहै बाज मनुष्योंकी प्रकृति होतीहै कि जो रुपया घरमें दिया करतेहैं उसका हिसाब पूछा करतेहैं अगर जबानी याद नहीं है तो मनुष्यको शङ्का होतीहै कि यह रुपया कहां खर्चहुआ और इनमें बे प्रयोजन का विरुद्ध औ लोभ प्रकट होताहै अगर स्त्रियां इतना लिखनाभी सीखलिया करें कि अपने समझनेके वास्ते अवश्यहो तो कैसी उत्तम बात

है लिखने पढ़ने के सिवाय सीना परोना रसोई बनाना ए दो गुण सब लड़कियों को सीखने जरूर हैं किसी मनुष्यको यह मालूम नहीं है कि उसको क्या संयोग आगे आवैगा बड़े अमीर और बड़े धनाढ्य क्षणमात्रमें गरीब व कंगाल होजाते हैं अगर कोई गुण हाथमें पड़ा होता है तो जरूरतके समय काम में आताहै यह एक प्रकट बातहै कि पिछले जमानेके राजा महाराजा बावजूद सम्पत्ति और राज्यके अवश्यकरके कोईगुण सीखरक्खा करते थे कि आपत्तिकाल में कामआवे चेतकरो कि संसारकी कोईअवस्था भरोसेके योग्यनहीं है अगर तुमको इस समय सुख और सम्पत्ति प्राप्त है तो परमेश्वर की बिनती करो कि उसने अपनी कृपासे तुम्हारे घरमें सुख व सम्पति दिया है परन्तु यह उचित नहीं है कि तुम इस सुखका आदर न करो या आगेके लिये भरोसा करलो कियही सुख तुमको सदा रहेगा सुखके दिनों में स्वभावों का ठीक रखना अवश्यहै अगर्चि परमेश्वर ने तुमको चाकर नौकर भी दिये हों परन्तु तुमको अपनी प्रकृति नहीं बिगाड़नी चाहिये कदाचित् अपने को यह सामर्थ्य न रहै तो यह स्वभाव बहुत क्लेश देगा आप उठकर पानी न पीना या छोटे २ कार्यों में सेवकों या छोटे भाई बहिनोंको क्लेश देना उचित नहीं है स्वभावके बिगाड़ने का यही चिन्ह है तुमको अपना सब काम आप करना चाहिये बल्कि तुम घरके बहुतकाम आप करसक्तीहो और अगर तुम थोड़ासा परिश्रम भी अंगीकार करो तो अपनी माताको बहुत कुछ सहायतादे सक्तीहो खूबविचार करके अपनाकाम कोई ऐसा मतछोड़ो जिसको माता अपने हाथोंकरे या दूसरों को उसके हेतु बुलाती और क्लेश देती फिरे ऐ मेरी दुलारी लड़कियो रातको जब सोने लगो अपना बिछौना अपने हाथ से बिछालिया करो और सबेरे उठकर आप तह करके यतसे अच्छी जगह रखदिया करो अपने कपड़ोंकी गठरी इसतरह पर रक्खो कि जब कपड़ेको बदलने की इच्छा हो अपने हाथ से फटा उधरा दुरुस्त करके पहिनलिया और मैले वस्त्रों को

इसप्रकारसे रक्खो कि जबतक धोबिन कपड़े लेनेआवें अलग खूंटी पर लटका रक्खो अगर मैले कपड़े खूंटी पर उठा न रक्खोगी कदाचित् चूहे काटडालें या पड़े पड़े अधिक मैले हों कि धोबिन उसको अच्छे प्रकार निर्मल न कर सके या शायद पृथ्वीकी सर्दी और पसीनेकी तरीसेउसमें दीमकलग-जावे फिर धोबिन को अपने मैले कपड़ा आप देखकर दिया करो और जब धोकरलावे आप देखलियाकरो कदाचित् कोई वस्त्र कम न करलाईहो या कहींसे फाड़ न दियाहो या कहीं दाग़ न रह गयेहों इसी प्रकार जब तुम अपने कपड़ोंकी ख़बर रक्खोगी तुम्हारे कपड़े खूब साफ़ धुलाकरेंगे और कोई कपड़ा न खोवेगा जो भूषण तुम पहने रहतीहो बड़े दामोंकी चीज है चार घड़ी दिन रहे और जब सोकर उठो चेतकर लिया करो कि सबहैं या नहीं बहुधा बेसुध लड़कियां खेल कूदमें गहना गिरा देती हैं गहना गिरने के कई दिन पीछे उनको मालूम होताहै कि बालीगिरगई,छल्ला निकलपड़ा जबघरमें कई बेर झाड़ दीगई क्या मालूमतनिकसी चीज कहांगई या किसीजगह मिट्टीमें दब गई तब ना समझ लड़कियां गहने के वास्ते रोतीहैं और सारेघरको ढूंढ ढांढमें हैरान कर डा-लतीहैं और जब माता पिता को मालूम होताहै कि यह ल-ड़की गहनेको सम्हालके नहीं रखतीहै और खो २ देतीहै तो देभी गहनाके पहलने में सोच विचार करने लगते हैं तुमको सदा ध्यानरखना चाहिये कि घरकेकामों में कौनकार्य तुम्हारे करने का है निस्सन्देह जो छोटे भाई और बहिन रोते और हठकरतेहैं तुम उनको सम्हालसक्तीहो कि वह माको क्लेश न दें मुह धुलाना उनके खाने और पीनेकी ख़बररखना यहसब काम अगर तुमचाहो तो करसक्ती हो परन्तु अगर तुमअपने भाई बहिनोंसे लड़ो और हठकरो तो तुमआप अपनी इज्ज़त खोतीहो और माको क्लेश देतीहो वह घरका कामदेखे या तुम्हारे मुक़द्दमे का न्याय कियाकरे रसोई जो घरमें बनती है उसको इसहेतुसे नहीं देखना चाहिये कि कब बनचुकेगी

और कबमिलेगी घरमें जो कुत्ता बिल्ली या दूसरे जीव पलेहैं वह अगर उदरभरने की कांक्षा से भोजन के आसरेपर बैठे रहें तो डरनहीं परन्तु तुमको हरबातमें विचार करना चाहिये तरकारी किसप्रकार भूनीजातीहै नमक किसअंदाजसे डालतेहैं अगर हरएक भोजनको अच्छे विचारसे देखाकरो तो निश्चयहै कि थोड़े दिनोंमें तुम भोजन बनाना सीखजावोगी जो लड़कियां रसोई बनाना नहीं जानतीतो मा बापको वृथा लोगों से बुरा कहलवाती है रोजमर्रे की रसोई के सिवाय अच्छे प्रकार के भोजनों के बनाने की रीति भी तुमको सीख लेनाचाहिये आयेगये की मेहमानीमें सदा भांति भांति की अच्छी रसोई बनानी पड़तीहै पुलाव मीठे चावल, ज़र्दा, तसमई, कढ़ी, मुरब्बा, चटनी, दहीबड़ा, सब मजेदार खानेहैं हरएक के बनानेकी युक्ति याद रखनी चाहिये ब्योंतना वस्त्रका अलबत्ता बुद्धिकी बातहै मनलगाकर उसको जानलेना वाजिब है हमने बहुतनिर्बुद्धि स्त्रियों को देखाहै कि अपने वस्त्र दूसरी स्त्रियोंके पास ब्योंताने के हेतु लियेलिये फिरा करती हैं और उनको थोड़ीसी बातकेलिये बहुतसी चिरौरीकरनी पड़ती है अंगरखा ब्योंतना कुछ कठिन नहीं है जो तुम अपने भाइयों के अंगरखे ब्योंताकरो तो अंगरखाकी ब्योंत समझमें आजावैगी लड़कियां लज्जा की मारी मुंहसे नकहें परन्तु मन में अवश्य जानतीहैं कि कुआंरपनके थोड़े दिन और हैं आखिर ब्याही जावेंगी ब्याहेपीछे नयेप्रकारकी जिंदगी करनीपड़ेगी जैसा कि तुम माता और नानी और मौसी और कुटुम्ब की सब स्त्रियोंको देखतीहो क्वारपनेका समय तो बहुतथोड़ाहै और उससमयका बहुतबड़ा भाग अज्ञानतामें व्यतीत होजाताहै वह अवस्था पहाड़की नाईं तो आगे आरहीहै जो भांति २ के झगड़े और अनेकप्रकारके बखेड़े से भरीहुईहै और विचार करो कि तुमकोई अनोखीलड़की तो हो नहीं ब्याहेपीछे तुम को कुछ और भागलगनावेगी जो संसार की बहू बेटियों को आगेआतीहै वह तुमकोभी आगेआवेगी पसयोचनाचाहिये

कि स्त्रियां किसप्रकार अपनी ज़िंदगी पूरी करती हैं ब्याहे पीछे कैसे उनकी इज़्ज़तहोतीहै पुरुषकैसा आदर किसप्रकार उनका सनमान करतेहैं खास लोगों की दशा परनज़र मत करो बाज़ीजगह संयोगसे अधिकमिलापहुआ स्त्री पुरुषपर बलवानहोगी और जहां ज्यादा लड़ाई झगड़ा हुआ स्त्री का मान घटगया यह तो बातही अलग है जगत के दस्तूर और रवाजको देखोतो दस्तूरकेमाफ़िक हमतो स्त्रियोंकी कुछइज़्ज़त नहीं देखते बुद्धिहीन उनको कहते हैं त्रिया हठ और त्रिया चरित्र पुरुषों के ज़बानपर है स्त्रियों की छल छिद्रमें बहुतसी पुस्तकें लिखीहुई हैं गृहस्थीके बरतावमें देखो तो घरके टहल के सिवायसंसारका कोईअच्छाकार्य्य भी स्त्रियोंसे लियाजाता है या किसी अच्छे २ कामकी सलाह भी उनसे पूछीजातीहै जिनघरों में स्त्रियोंका आदरभाव है वहां भी जब स्त्रियों से पूछाजाताहै तो यहीकि क्योंरीबी आज क्या तरकारीबनैगी लड़केके वास्तेटाटवाफ़ी जूते मंगाओगी या डेढ़ हाथिये की क्वांलियां मानिकचन्दीलेवगी या जहाजी रज़ाईको ज़री.गोट लगेगी या सुरमई ऐसीबातोंकेसिवाय कोईस्त्री यहतो बताओ कि कभी पुरुषोंने उनसे बड़ी२ बातोंमें सलाहलियाहै कोई बड़ाकाम उनके अख्तियारमें छोड़दियाहै पस ऐ स्त्रियो क्या तुमने ऐसे बुरेहालोंको जोनकभी नाखुश नहींआता और क्या तुम्हारा जी नहींचाहता कि पुरुषोंके दानिस्तमें तुम्हारीइज़्ज़त हो तुमने अपने हाथों अपना आदर खो रक्खा है और अपने कारण नज़रोंसेगिरीहुईहो तुमको ढंगहोतो पुरुषोंको कहां तक ख्याल न होगा कठिनतोयहहै कि तरकारी रोटी दाल पकालेने औरफटापुराना सीलेनेको ढंग समझतीहो सोफिर जैसाढंगहै वैसाहीतुम्हारा आदरभावहै ऐसी दशापर अगर संसारभर की बदनामी तुम पर लगाई जाय तो उचित और दुनियां भर की बुराइयां तुम पर लगाई जांय तो सच है ऐ स्त्रियो तुम पुरुषों के मनका बहलाव उनके जीवन सुखका कारण और आनन्दको विशेष करनेवाली और उनके क्लेशको

भुलाने वालीहो जो तुमसे पुरुषोंको बड़े कामों में सहायता मिले और तुमको बड़े कामोंके बन्दोबस्त करनेका ढंगहोतो पुरुष तुम्हारे पांव धोधोके पियाकरें और तुमको अपना सिरताज बनाकर रक्खें तुमसे बेहतर उनका दुःख भुलाने वाला तुमसे अच्छा उनका सलाहकार तुमसे ज्यादा उनका भलाई चाहने वाला और कौन है परंतु बड़े कामों का ढंग तुमको प्राप्त क्योंकरहो घरके चार दीवारीमें तो तुम क़ैदहो किसी से मिलनेको तुमनहीं किसीसे बातकरनेको तुमनहीं गुण या ढंग आदमी २ से सीखता है पुरुष लोग पढ़ लिखकर चतुर और गुणीहोजाते हैं और जो लिखेपढ़े नहीं वह भी हजारों प्रकारके लोगों से मिलते दशसे दशप्रकार की बातें सुनते हैं इस परदेसे तो तुमको छुटकारे की आसनहीं हमारे देशके चालचलनने परदेमें रहना स्त्रियोंका अवशकर दियाहै फिर सिवाय पढ़नेलिखनेके और क्यातदबीरहै कि जिससे तुम्हारी बुद्धिको प्रकाशहो बल्कि पुरुषों से स्त्रियोंको पढ़ने लिखने की अधिक आवश्यकता है पुरुष तो बाहर के चलने फिरने वाले ठहरे लोगों से मिलचुल कर बहुत बातें सीखलेंगे तुम घरमें बैठे क्या करोगी क्या सीने की पिटारी से बुद्धि की पुड़ियां निकालोगी या अनाजकी कोठरीसे ढंगकीबातें सीखजावोगी पढ़नासीखो कि परदेमें बैठीहुई तमाम संसारकी सैरकरलियाकरोविद्या प्राप्तकरो कि अपने घरमें दुनियांभरकीबातें तुमको मालूमहुआकरें और स्त्रियोंको अपने संतानके सिखलाने के हेतु पढ़ना अति विशेष है लड़कियां तो ब्याह तक और लड़के भी दशवर्ष की अवस्थातक बहुधा घरों में रहते हैं और माओं का स्वभाव उनमें असरकर जाता है पस ए स्त्रियो संतानकी अगली वयस तुम्हारे आधीन है तुमचाहो तो वैसे उनके मनोंमें वहइरादे और ऊंचे ख़यालभरदो कि वह बड़ेहोकर नाम नामूद पैदाकरें और जन्मभर सुखसेरहें और चाहो तो उनका ऐसास्वभाव बिगाड़देव कि ज्योंज्यों बड़ेहों ख़राबीके लक्षण सीखतेजायें और अन्ततक उस अर्थ

का पछताव कियाकरें बालकोंको तो जब बोलनाआया तब लिखने पढ़नेका ज्ञान भी होसक्ताहै अगर माओंको ढंगहो तो उसी समय से बच्चोंको सिखलाती जावें मकतब या मदर्से भेजने के आसरे में लड़कोंके कईवर्ष अकारथ जाते हैं बहुत छोटी अवस्थामें न तो बच्चों को आप से पाठशाला जाने की इच्छा होती है न माता पिताकी प्रीति यह बात चाहतीहै कि नन्हे २ बच्चे जो अभी अपनेकाम आपनहीं करसक्ते गुरू के बन्धन में रक्खे जावें परन्तु माता जो चाहे उसी समय में उनको बहुत कुछ सिखा पढ़ासक्तीहै लड़के पाठशालामें बैठने के पीछे भी बहुतदिनोंतक बेदिलीसे पढ़ाकरतेहैं और बहुत दिनोंमें उनकी इस्तादाद बढ़तीहै पर इस सबसमयमें उनको माओंसे बहुतसहायता मिलसक्तीहै पहिले तो माता कीसी प्रीति व स्नेहकहां दूसरे रातदिनका बराबररहना जबआगे देखा झट कोई अक्षर पहचनवा दिया कोई गिनतीही याद करादी कहीं पूर्व पश्चिमकी पहचानबतादी मातातो बातों२ में वह सिखा सक्तीहै जोगुरूवर्षोंके सिखलानेसे नहींसिखला सक्ता और माताको सिखलानेमें यह एक कितना अच्छापन है कि लड़कोंके चित्तको घबराहट नहीं होनेपाती औ संतान की तह जीव उनके पालनेकी तदबीर उनके प्राण की रक्षा माताके आधीन है अगर माता को इस ढंगमें कमी है तो संतानके जीवका संदेहहै ऐसा कौन अभागीहोगा जिसको माताकी प्रीतिसे इन्कारहो परंतु वही प्रीति जो अज्ञानता के साथबरतीजाय तो मुम्किन है कि बजाय लाभ के उलटी हानिहोवे क्याहजारों कुबुद्धि माता ऐसी नहींहैं जोसंतान की हरएकमर्जको नजरगुजर और परछावां और झपेटा और आसेब समुझकर बजायदवाके झाड़फूक उतारा नहींकरती अयोग्य यतका गुणतुम्ही समझलो क्याहोता होगा प्रयोजन यहहै कि सबघरकी दुरुस्ती समझपर और समझकी दुरुस्ती विद्यापर है तुमको एक अच्छी कहानी सुनातेहैं जिससे तुम को मालूमहोगा कि बहुनरोंसे क्या लाभ पहुंचताहै कहानी

परमेश्वरकी एककमसमझ लड़कीका व्याह होगया था उसने अपनी अज्ञानतासे बर्स दोवर्षभी ससुरालमें निबाहनकिया व्याहके चौथे पांचवेंमहीने पतिपर तकाज़ाकरना शुरूकिया कि गोहमारागुज़ारा तुम्हारेमावहिनोंमें नहींहोता हमको अलग मकानलैदो उसनेकहा जितने तुम्हारे झगड़े अपनेमा बहिनोंके साथसुनतारहाहूं उनसबमें तुम्हाराअपराधहै टोले महल्लेमेंजो आदमीछोटीजातकेरहतेहैं तुमने उन्हींलड़कियों को बहिनबनारक्खाहै रातदिनभोंदूकुंजड़ेकीबेटीचुनिया और बखशूगंधीवालेकी लड़की जुलफ़न और प्रयाग अगरहरीकी बेटी सुखिया तुम्हारेपास घुसी रहाकरतीहैं और तुमकोइस बातका कुछ ध्याननहीं कि येलोग न तुम्हारी बिरादरीहैं न भाईबन्धु न ऐसी तुम्हारी मुलाक़ात न राहवरस्म व प्रीतित-मामसहल्लेमें चर्चा होरहीहै कि कैसी बहू आई है जबदेखो ऐसीलड़कियां उसकेपास बैठीरहतीहैं आखिरमहल्लेमें लाला प्रयागलाल और हीरालाल और पण्डित गनेशदत्त यह लोग भी तो रहतेहैं और इनकीबहू बेटीहमारेघरमें आतीजाती हैं तुमकिसीसे बातभी नहींकरती अगर हमारी माताने तुमको कमीना और बेइज्जत लड़कियोंसे मिलने को मनाकिया तोक्या बुराकिया उसनासमझ बीबीनेजवाबदिया कि प्रीति स्नेहदिलके मिलनेपरहै हमारेमैकेके पड़ोसमें एक बाखूमनिहार रहताथा पन्नो उसकी बेटी हमारी सहेलीथी जब हम छोटीथीं उसके संग खेला करती थीं दो गुड़ियों का व्याहभी हमनेपन्नोंके साथकियाथा पन्नों बिचारी बहुत ग़रीबथी हम अपनीमातासे चुराकर उसकोबहुत बहुदिया करतीथींमाता ने बहुतेरा मनाकिया परन्तु हमने पन्नोंका मिलना न छोड़ा पतिने कहा तुमने झखमारा यह सुनकर वह अज्ञानी बीबी मियांसे बोलीदेखो परमेश्वरकीसौगन्ध मैंने कहदियाहै मुझ से ज़बानसम्हालकर बोलाकरोनहींतो पीट २ कर अपनाखून कर डालोंगी यहकहकर रोनेलगी और माता पिताको को-सनाशुरूकिया कि अबपरमेश्वर इसमाबापका बुराहोकि

कैसी कमबख़्तीमें मुझको ढकेलदियाहै मुझकोअकेला पाकर सबने सताना शुरूअ कियाहै परमेश्वर मैं मरजाऊं मेरीरही निकले और क्रोधके मारे पानखानेकी पिटारी जो चारपाई पररक्खी थी लातमारकर गिरादी तमाम कत्थाचूना तोशक पर गिरपड़ा जनीदरेशका लिहाफ़पांयते तह कियारक्खा था चूनेके लगतेही उसकातमामरंग कटगया पिटारीकेगिरनेका धमका सुनकर सामनेके दालानसे सास दौड़ीआई माता को आतेदेख बेटातोदूसरे दरवाज़ेसे चलदियापरन्तु अपनेदिलमें कहताथा कि अल्लाह मैंने बर्रोंके छत्तेकोछेड़ा सासने आकर देखातो चार पैसेका कत्था जोछान पकाकर कुल्हियामें भर दियाथा सबगिरापड़ाहै तोशककत्थेमें लतपतहै लिहाफ़चूनेमें भराहै बहू जारज़ार रोरहीहै आतेही सासने बहूकोगलेसे लगालिया और अपनेबेटेको बहुतकुछ बुराकहा अपने दिल-जोईकासहारा जंघतेकोठेलनेका बहानाहुआ अगर्चिसासने मिन्नतकी और समझायापर उसऔरतपर कुछअसर न हुआ आस पास की औरतें रोनेपीटनेकी आवाज़ सुनकर इकट्ठा होगई यहांतक नौबतपहुंची कि प्रयाग अगरहरी की बेटी सुखिया समधियानेको दौड़ीगई और एक २ की चार २ लगाई परमेश्वरकी कृपासे उनकी माताभी बड़ी उताहिलथीं सुनतेकेसाथ डोलीपर चढ़ आपहुंची बहुत कुछ लड़ी झगड़ीं आख़िर बेटीकोसाथलेगईं कईमहीनेतक दोनोंओरसे आना जाना बन्दरहा ताकि कहानी अच्छेप्रकारसे बूझमें आयेतुम को नामभी उनलोगों के बतादेने ज़रूरहैं परमेश्वरी इस ना समझ औरत का नाम था परमेश्वरी नासमझ गुणहीन और बदमिज़ाजथी परन्तु इसकी छोटीबहिन सरस्वती बहुत चतुर और बुद्धिमान और नेक मिज़ाजथी छोटीसी अवस्था में इसने हिन्दीभाषामें चन्द्रकिताबेंपढ़लीथीं घरकाहाल अपनेबापको हर शनिश्चरको लिखभेजा करतीथी और अनेकप्रकारके वस्त्र सींसकतीथीभांति २ के मलोदारसोजनपकाने जानतीथी तमाम महल्ले में सरस्वतीकी तारीफ़थी माताकेघरका तमाम बन्दो-

वक्त सरस्वतीके हाथों रहा करताथा जब कभी बाप रुखसत लेकर घरआता गृहस्थीके बन्दोबस्तमें सरस्वती से सलाहपूं-छता रुपिया पैसा कोठरी और संदूकोंकी कुंजियां और सब कुछ सरस्वतीके अख्तियारमें रहाकरताथा मातापिता अन्तः-करणसेसरस्वतीको चाहतेथे बल्किमहल्लेके सबलोग सरस्वती को प्यारकियाकरतेथे परमेश्वरी खुदबखुद अपनी छोटीबहिन से नाराज रहा करतीथी बल्कि अकेला पाकर मारभी लिया करतीथी परन्तु सरस्वतीसदा अपनी बड़ीभगनीका अदबक-रती और मासे उसकीचुगली न खाती दोनों बहिनोंकी स-गनीभीसंयोगसे एकहीघरमेंहुईपरमेश्वरीदत्त और अम्बिका-दत्तदोसगे भाईथे परमेश्वरीकाविवाह बड़ेभाई परमेश्वरीदत्त से हुआ और सरस्वतीकीबात अम्बिकादत्तके साथठहरचुकी मगर ब्याहनहीं हुआथा परमेश्वरीके बदमिजाजी के कारण नथादीकथा कि सरस्वतीकी संगनी छूटजाय परन्तु इनलड़-कियोंकी मौसी परमेश्वरीदत्त के घरके पास रहतीथी सो वह सदा समझाती बुझातीरहती अगर्चे परमेश्वरी लड़झगड़ के चलीगईथी परन्तु मौसीने बहुतकुछ बुराभलाकहा और ऊंच नीच समझाया कईमहीनेपीछे होलीके त्योहारमें मानजीको ससुराल लिवालाई बहुत दिनतक परमेश्वरीदत्त स्त्रीसे नाखुश रहा आखिर मौसियासासने स्त्रीपुरुषकामिलाप करादिया परन्तु जबमिजाजोंमें नामुआफ़िकत होतीहैतो हरएक बात में बिगाड़कासामान होजाताहै परमेश्वरीदत्तने एकदिन अ-पनीमासेकहा कि आजमैंने एकमित्रकी मेहमानीकीहै शाम के खानेकाज्यादाबन्दोबस्त होनाचाहिये माताने उत्तर दिया परमेश्वर जानताहै कि किसकष्टसे मैंरोटीपकालेतीहूं तीन दिनसे तीसरेपहरको जूड़ी आतीहै मुझको अपनी खबरतक नहींरहतीहै परमेश्वर परोसिनका भलाकरै कि वहशामको इतनाभी पका देतीहै तुमने मेंहमानी करनेसे पहिले घरमें पूंछतो लिया होता परमेश्वरीदत्तने अचम्भा करके बीबी की ओर देखा और कहाकि ये इतनेभी कामकीनहींहै बीबीको

इतनी बरदाश्त कहांथी कि इतनीबात सुनकर चुपरहै सुन-
तेही बोली इसीबूढ़ी अम्मासे पूछो कि बेटेका व्याह किया
वा लौंडी मोललो परमेश्वरीदत्तने सोचा अब अगरमैं जवाब
देताहूं तो पहिलेकी तरह रुसवाईहोगी अपनासामुंहले-
कर रहगया शामके खानेके वास्ते कुछ बाजारसे मोल लाया
गर्ज वह बात टलगई अब परमेश्वरीदत्तको दूसरीबात आगे
आईयाने गुड़िया पंचमीके एक हफ़्ता आगेसे बीबीके जोड़े
की तैयारी शुरूअकी हरतरहभांति २ के कपड़े रंगबरंगकी
चूड़ियांडेढ़ हाशिया व सलमासितारेकी कामदार जूतियां
लाताथापरन्तु बीबीकेख़ातिरतले कुछ नहीं आताथा यहां तक
कि गुड़ियापंचमीको एकदिन रहगया लाचार होकर पर-
मेश्वरीदत्त अपनी मौसियासासके पासगया उन्होंने शब्दसुन-
कर अंदरबुलालिया प्यारसे बैठाया पान लगाकर दिया और
पूछाकहो परमेश्वरीतो अच्छीहै परमेश्वरीदत्तने कहासाहब
आपकी भानजीतो अजीब औरतहै मेरातो दमनाकमें कर
रक्खाहै जोचालहै निरालीहै जोबात है सो टेढ़ीहै मौसिया
सासनेकहा बेटाइसका कुछध्यान मतकरो अभीकम उमरहै
बालबच्चे होंगे घरका बोझा पड़ेगा मिजाज आपसे आपही
दुरुस्तहोजायगा और आखिरअच्छेलोग पड़ोसीकोभीनिबाह
देते हैं बेटा परमेश्वर ने तुमको सब प्रकार लायक किया है
ऐसी बात न हो कि लोगहसैं तुम्हारी इज्जतहै परमेश्वरीदत्तने
कहा कि मैं तो खुद इसी ख़यालसे बहुत दर गुजर करता
रहताहूं आप देखिये कल गुड़ियापंचमीहै इस वक्ततक न
चुड़ियांपहिनी न कपड़ेबनाये जराआप चलकर समझादी-
जिये मैंने बहुत कुछ कहा और मातानेभी बहुत मिन्नतेंकी
परन्तु नहींमानती मौसियासासनेकहा तुम्हारेमौसियाससुर
बाजारसे आलें तो उनसे पूछकर मैं चलतीहूं गरज मौसीने
जाकर चुड़ियां पहनाईं कपड़े ब्योंते जल्दी के मारे सबमिल-
करसीनेबैठीं मौसीनेकहाबेटी लहंगेमें गोटतुमलगादो दुपट्टे
में गोटामैं टांकतीहूं जब परमेश्वरी गोट लहंगेमेंलगाचुकी

तो उसने इतराकर मौसीसे कहा तुमको अभी आधे दुपट्टे में गोटा लगाना बाकी है और मैं लहंगे में गोट लगा चुकी मौसीने देखा तो गोट उलटी लगाई थी परमेश्वरीकी सासके लिहाजसे मुंहपर कुछ न कहा परन्तु चुपके २ दो चार चुटकियां ऐसी लीं कि परमेश्वरी के आंखोंमें आंसूभर आये और हलके से कहा कि अपना सत्यानाश देखतू उलटी गोट लगा बैठी परमेश्वरी अपना किया हुआ सब उधेड़ा फिर गोट लगाना आरंभ किया जब लगा चुकी मौसी ने देखा तो सबमें झोल है तब तो मौसीसे न रहा गया सासकी आंख बचा एक सुई परमेश्वरीके हाथमें चुभोदी और गोट फिर उधेड़कर आप लगाई गरज़ इस प्रकार परमेश्वरीका जोड़ासीं-कर तैयार हुआ रात ज्यादा गई थी परमेश्वर की मौसी अपने घरको बिदा हुई और लोग भी सो सुला रहे बच्चे गुड़ियांपंचिमीके खुशी में सवेरे से जागे किसीने रातकी मेंहदी खोली किसीने बेसन के लिये गुल मचाया परमेश्वरी दत्त वास्ते नहाने और नित्यनेम के सुबह होते नदीपर चला गया दो चार घड़ी दिन चढ़े लौट आया तो देखा कि बीबी सो रही है परमेश्वरीदत्तने अपनी छोटी बहिन यमुनासे कहा कि यमुना जाओ अपनी भाभीको जगादो पहिले तो यमुनाने जाने में संकोच किया इस कारण कि यमुना परमेश्वरीके मिज़ाजसे बहुत डरती थी जबसे व्याह हुआ परमेश्वरीने एकदिन अपनी छोटी नन्दके साथ प्यार से बात नहीं की थी और न कभी अपने पास उसको आने और बैठने दिया था परंतु भाईके कहने से त्योहारकी खुशीमें यमुना दौड़ी २ चली गई और जाकर कहा भाभी उठो २ भाभीने उठने के साथ यमुनाके एक तमाचा मारा यमुना रोने लगी बाहरसे भाई आवाज़ सुनकर दौड़ा उसको रोता देखकर गोदमें उठा लिया और पूंछा क्या हुआ यमुनाने रोते २ कहा भाभीने मारा परमेश्वरीने कहा देखो आपतो दौड़नेमें गिर पड़ी और मेरा नाम लगाती है परमेश्वरीदत्तको क्रोध तो आया परंतु चुप रहना उस समय उचित समझा यमुना को प्यार चुपकार कर चुप किया और बीबीसे कहा कि उठो नहाओ कपड़े बदलो दिन

ज्यादा चढ़गया मैं बाज़ारको जाताहूं परमेश्वरीने नाकभौं सिकोड़कर कहा ऐसे सवेरेमैं नहीं न्हाती ठंढका समयहै तुमबाज़ारको जाओ मैंने क्या मनाकियाहै परमेश्वरीदत्तऐसी बात सुनकर बहुत दुखित हुआ और परमेश्वरी ऐसी अभागिनथी कि सदा अपने स्वामीको नाखुश रखती थी इतने में परमेश्वरीदत्त की माताने पुकारा कि बेटा जाओ बाज़ार से मिठाई दूधलाओ परमेश्वरीदत्तने कहा बहुत अच्छापैसा दीजिये मैं मिठाई ला देताहूं परन्तु जो मेरे लौटने तक इन्होंने कपड़े न बदलेतो सब कपड़े चूल्हे में रखदूंगा परमेश्वरीदत्त तो मिठाई लेने बाज़ारगया माता को मालूम था कि पुत्रका मिज़ाज बिगड़ाहुआ है और स्वभावभी इसका इस प्रकारका है कि पहिलेतो इसको क्रोध नहीं आता और जोकभी आजाताहै तो बुद्धि इसकी ठिकाने नहीं रहती ऐसा न हो कि सबसच नये कपड़े जलादे जल्दीसे बहूके पासगई और कहा बेटी परमेश्वरके लिये बरस २ के दिन तो बदशगुनी मतकरो उठो नहाओ कपड़े बदलो परमेश्वरी ने कहा मैं तो नहीं नहाती परन्तु सासने चिरौरी विनतीकरके बहू को नहलाया धुलाया कंघी चोटीकर कपड़े पहनाय परमेश्वरीदत्त के आने से पहिले दुलहिन बनाकर बैठा दिया परमेश्वरीदत्त लौटकर देखाता प्रसन्नहुआ फिर दूसरी दफ़ा बाज़ार जाते यमुना से पूंछाकहो तुम्हारे वास्ते बाज़ारसे कौन खिलौनालावैं यमुना ने कहा अच्छी सुघर तख़्ती लिखनेके हेतु ला देना और क़लम दावात के लिये एक नन्ही सी संदूकची और परमेश्वरी बोली हमारे लिये क्यालाओगे परमेश्वरीदत्तने कहा जो तुम कहो लेता आऊं परमेश्वरीने कहा भुट्टे और सिंघाड़े और झरबेरके बेर और मटरकी फलियां और बहुतसी नारंगियां और एक ढोलक और एक जोड़ी मंजीरा यह सुनकर परमेश्वरीदत्त हंसने लगा और कहाकि ढोलक मंजीरा क्या करोगी बीबीने जवाबदिया कि बजायेंगी और क्या करेंगीपरमेश्वरीदत्त समझाकि अभीतक इस मखमें ब समझ बच्चोंके

प्रकार खाने और खेलनेके खयालात मौजूदहैं वस्त्र आभूषण पहननेसे जो आनन्द परमेश्वरीदत्तको हुआथा वह सबखाक धूलमें मिलगया और चित्तमें उदासी छागई उसी उदासीके दशामें बाजारको चलागया इसका जानाथा कि परमेश्वरीने एक और नई बातसाससे कहा कि हमको डोली मंगादो हम अपने माके घरजायेंगी सासने कहा भला यह जानेका कौन समयहै परमेश्वरीनेकहा आज मेराजी बहुत घबराताहै दिल उलथा चला आताहै मुझको अपने मैकेकी सहेली रामदीन मनिहारकी बेटी प्यारी बहुत याद आती है सासने कहाकि अगर ऐसाही दिलचाहताहैतो उसीकोबुलाभेजो परमेश्वरी ने कहा वाह बड़ीबुलानेवाली ठहरीं ऐसाही बुलाना था तो उसीकोबुलाकर चूड़ियांपहनवाईहोती सासनेकहा भलाबेटी मुझको क्या मालूमथा कि अचानक तुमको आज उसकी याद आजायगी परमेश्वरीनेकहा खैरइसझगड़ेसे क्याप्रयोजनडोली मगवानीहैतो मंगवादो नहीतो मैं मुखियाकेबापसेमगवाभेजतीहूं सासनेकहा बेटीतेरी बुद्धिमारीगईहै मियांसे पूंछानहीं गया आपहीआपचली और मुझको अखतियारनहींजो लड़केके बेआज्ञाडोली मगवादूं परमेश्वरी बोली कैसे मियां कैसा पूंछना अबकोई अपने मातापितासे त्योहारकेदिनभीन मिला करेइतनाकहकर मौकाकुंजड़ेसे डोलीमगवायह जावह जा अपने मैके पहुंची थोड़ी देर पीछे जब परमेश्वरीदत्त बाजार से लौटा तो घरमें घुसतेही पुकारा लो बीबी अपनी ढोलक और मंजीरा परन्तु जब देखा कि सब चुप हैं माता से पूंछा क्या हुआ यमुनाने कहा भाभी जानचली गई परमेश्वरीदत्त ने पूंछा क्यों कर गई और कहां गई और क्यों जाने दिया माताने जवाबदिया किबैठे बिठाये अचानककहनेलगी कि मैं तोअपनेनैहरजाऊंगी मैंने बहुतमनाकियाएक न मानीमौला से डोलीमंगवा चलीगई है रोंकते २ रहगई परमेश्वरीदत्त यह सुनकर क्रोधकेमारे कांपउठा और चाहा कि ससुराल जाकर

अभी उस अभागिनीको दण्डदूं यह सोचकर बाहरको चला

माता समझगई जातेहुए माताने पुकारा उसने कुछ उत्तर न दिया माने कहा बेटा मैं तुम्हें पुकारती हों तुम उत्तर नहीं देते कलियुग में यही माओं का आदर रहगया है यह सुनतेही परमेश्वरीदत्त उलटाफिरा माने कहा बेटा तू यह बता कि इस धूपमें कहांजाता है अभी बाज़ारसे आयाहै और फिर बाहर चला परमेश्वरीदत्तने कहा मैं बाहर कहीं नहीं जाता दरवाजे पर लाला कन्हैयालाल के बैठकमें जाताहूं माताने कहा अरे लड़के होशमेंआ मैंने क्या धूपमें अपने बालसफ़ेद किये हैं जो साहब हमसे बातें बनाने चलाहै लाला कन्हैयालाल के पास जाताहै तो डुपट्टा अंगरखा उतारकेंरखदे और मौज़से बैठके में जा यहसुनकर परमेश्वरीदत्त मुसकरानेलगा माताने हाथ पकड़कर अपनेपास बैठालिया घुटनेपर शिररखकर जुयें देखने लगीयमुना सेकहा बेटो ज़राभाई के पंखाहांको परमेश्वरीदत्त माताके गोदमें शिररखकर सोगया जागा तो दिन ढलगया और वह क्रोध भी धीमा होगयाथा माताने कहा हाथमुंह धोओ जब हाथ मुंह धो चुका तो कहा अब ससुरालजावो तुझे मेरी सौगन्ध है कि जो तू वहां कुछ लड़ा और बोला परमेश्वरीदत्तने कहा तो मुझको मतभेजो माने कहा तुझको शामके भोजन के लिये ससुराल से आदमी बुलाने आया था और ससुरालतो तेरी है तुझको न भेजूं तो किसको भेजूं और बहुत समझा समझाकर गुलियामहरी के साथ परमेश्वरीदत्त को ससुराल रवानाकिया जबपरमेश्वरीदत्त सासकेघरके नज़दीक पहुंचा तो उससमय घर में परमेश्वरी अपनी सहेलियों को साथलिये उधम मचा रहीथी और बाहर गलीमें तमाम गुलकी आवाज़ आतीथी सरस्वतीने जबमहरीको दूरसे आते देखा बड़ीबहिनसे कहा किचुपकरो तुम्हारे ससुरालसे महरीआई है इतनेमें परमेश्वरीदत्त भी भीतर घरके पहुंचा सास को सलाम किया सासने कहा जीते रहो इतने में सरस्वती भी अपनीउढ़नी सम्हाल सन्दूल कोठरीसे निकली और झुककर बहनोईको सलाम किया सरस्वती को बहनोईने गोदमें

बठालिया थोड़ी देर पीछे सरस्वती गोदसे उठी और जाकर एक थालीमें बड़े सफ़ाई से अच्छी २ मिठाई रखकर ले आई और एक गिलास पानी भरलाई और बहनोईके सामने रख-दिया सासने कहा बेटाखाओ परमेश्वरीदत्तने कहाकि अभी थोड़ी देरहुई मैंने घरमें खाना खायाहै सासने कहाक्या डर है थोड़ासातो खालोइसपर परमेश्वरीदत्तने थोड़ा २ हरएक मिठाई से खानेलगा और खाकर हाथ मुंह धोकर बैठगया सरस्वती इलायची डाल एकमजेदार पानलगालाई और बह-नोईको दिया उसके उपरान्त सास और दामादसे इधर उ-धरकी बातें होतीरहीं चिरागजले परमेश्वरीदत्त ने कहामैं बिदाहोताहूं सासनेकहा अबकहां जावोगे यहींसोरहो पर-मेश्वरीदत्तने कहाकि आजत्योहारहै और आयेगयेसे मिल-नाहै दूसरे मैं मातासे रातकेवास्ते कहकर नहीं आया सास ने कहा मिलने मिलानेका तो अब समय नहीं रहा क्योंकि शाम होगई है समधनिका कुछ तुम दूधतो नहीं पीतेकि घर जाये बिन चैन नहीं आखिर महरी जायगी खबर करदेगी परमेश्वरीदत्तने बहुतकुछबहाना कियापर सासनेएक नमाना परमेश्वरीत्त को जबरदस्ती रहनापड़ा चारघड़ी रातगये जब खाने पीनेसे सावकाशहुई सरस्वतीने बरतन भांड़ा गिरीपड़ी चीज सब ठिकाने रक्खी बाहरके दरवाजे की जंजीर बंदकी कोठरियों में तालालगा कुंजियां माताके हवाले कीं बाहर के दालान और रसोईके मकानका चिराग़ बुझादिया माता और भगनी और बहनोई सबको पान लगाकर दिया और आराम से जाकर सोरही अब सासने परमेश्वरीदत्त से कहा क्यों बेटा तुम मियां बीबी में यह क्या प्रतिदिन लड़ाई रहा करती है परमेश्वरी का ऐसा बुरास्वभाव है कि कभी भूल-कर भी ससुराल की बात मुझसे नहीं कहती दुनियां जहान की बेटियों का दस्तूर होता है कि ससुराल की ज़रा ज़रा सी बात माओंसे कहाकरतीहैं नहीं मालूम इसको क्या पर-मेश्वर की मार है बहुतेरा पूछ २ अपना मुंह थकाओ परन्तु

क्या जिकिरकि यह कुछ भी बताये परन्तु टोला महल्ला की बात कानों कान पहुंच जाती है ऊपरी लोगों से मैं भी घर बैठे २ सुना करतीहैं परमेश्वरीदत्त ने सासस यह बातसुनकर थोड़ी देर सोचकिया और लज्जाके मारे उत्तर मुंहसे न निकलताथा परन्तु इसने सोचाकि बहुत कालके पीछे ऐसा समय मिलाहै और अब इन्होंने छेड़कर पूंछाहै सो ऐसे समयमें चुपरहना उचितनहींहै बेहतरहैकि जन्मभरका ज़हर उगल डालिये कदाचित् आजकी बात बीतमें आगेके वास्ते कोई बात निकलआये यह सोच विचारकर परमेश्वरीदत्तने शर्माते २ कहा आपकी लड़की मौजूदहै इन्हीसे पूछिये हमारे यहां इनको क्या क्लेशपहुंचा था खातिरदारीमें कौनसीकमी हुई या कोई इनसे लड़ा या किसने इनको बुरा कहा इनको मालूमहै घरमें हम गिनती के आदमी हैं हमारे मा से तो तमाम महल्ला वाक़िफ है कि ऐसी नेक हैं कि तमाम उमर उनको किसी से लड़नेका संयोगनहीं हुआ अगर उनकोकोई दश बात कड़ी भी कहजावे तो चुपहो जातीहैं अम्बिकादत्त दिनभर लिखने पढ़नेमें लगारहताहै सुबह का निकला रात को घर आता है खाया और सोरहा मैंने उसको इनसे कभी बात करतेनहीं देखा यमुना इनकी सूरतसे डरतीहै रहामैं सो मौजूद बैठा हूं जो शिकायत मुझसेहो बेधड़ककहें परमेश्वरीदत्तकी सास अबबेटीकी तरफ़ देखकरबोली हां माई जो कुछतेरे दिलमें हो तूभी साफ २ कहदे बातका रहना मनमें अच्छा नहीं होता मनमेंरखनेसे क्लेश बढ़ताहै झगड़ा होताहै परमेश्वरी अगर्चि झूठबोलने पर बहुतढीठ थी परन्तु उससमय परमेश्वरीदत्त के रूबरू कोईबात कहते न बनपड़ी और जीहीजीमें डररही थी कि मैंने बहुतसीझूठीबातें मासे आकेलगाईहैं ऐसा नहो कहीं इससमय खुलजावें यहसोच समझउसनेइसबातहीकोटालदिया और कहातोयहकहाकि हमतो अलगघर करेंगी परमेश्वरीकी मातानेदामादसे कहा क्योंभाईतुमकोअलगघरकरदेनेमेंक्याउजरहै परमेश्वरकीदया

सेतुमआपनौकर हो आपकमातेहो किसी बातमेंमातापिता
के मुहताजनहीं अपना खाना अपना पहनना फिर दूसरेका
मुहताजहोकररहनाक्या प्रयोजन बेटाबहु कैसीही प्यारीहो
फिरभी जो आराम अलगरहनेमें है मा बाप के घरकहां जो
चाहासो खाया जोचाहासो पकाया और जरा समझने की
बातहै मा बापके संगरहकर खाक्रमाओ फिरभी नामनहीं
लोग क्याजाने तुम अपनाखातेहो या माता पिताके शिरपड़े
हो परमेश्वरीदत्तने कहा सुखकीजो पूछतीहोतो जोसुख कि
अब हमकोप्राप्त है अलगहुये पीछेउसकी क़दरमालूमहोगी
दोनोंवक्त पकी पकाई खाली और बे फ़िक्रि होकर बैठ रहे
अलगहोनेपर आटादाल नमक मसालातरकारी कंडालकड़ी
सब का शोच करना पड़ेगा आपही शोचिये कि गृहस्थी में
कितनेबखेड़े हैं बे प्रयोजन इनसब बखेड़ों को अपने शिरपर
लेना मेरे नजदीक तो बुद्धि की बातनहीं यहबात कि जो
चाहा सो खाया और जोचाहा सो पकाया अबभी प्राप्त है
इन्हींसेपूंछिये किकभीकोई फ़र्मायश कीहै किजोनहींहुईबड़े
कुनबोंमें अलबत्ता इसप्रकारका झगड़ा हुआ करता है एकका
दिलमीठे चावलोंकोचाहताहै दूसरेकोभूनीखिचड़ीचाहिये
तीसरेकोपुलावदरकारहै चौथेकोदहीबड़े खानामंजूरहैपांचवें
को परहेजी खाना वैद्यने बताया इस के वास्ते इस बटलोई
रोज़ के रोज़ कहां से आयें हमारे यहां कुनबा कौन बहुत
बड़ाहै कि ये फ़र्मायश किसी चीजकीकरें और वह पूरी न
कीजाय इसकोभी जानेदीजिये अगरइनको फ़र्मायश करनेमें
ऐसीही लज्जा आतीहै तो आप खाने पकवाने का बन्दोबस्त
कियाकरें खुदहमारी माभी कईबार इससे कहचुकीहैं इनसे
पूंछियेकहाहै यानहीं और नामको जो आपने फ़र्माया यह
भी मेरेनजदीक बुद्धिकीबात नहीं अपनेसुखसे कामहै लोग
जोचाहेंसो अपने दिलोंमेंसमझें और यहभीमानाकिलोगोंने
भी समझाकि हममाता पिताके शिरपड़े हैं तो इसमेंहमारी
कौन बेइज्ज़ती है माता पिताने हमकोपाला परवरिशकिया

खिलाया पहनाया पढ़ाया लिखाया शादी ब्याह किया इनसब बातोंमें बेइज्ज़ती नहीं हुई अब कौनसा सुरखाबकापर हममें लगगया है कि उनके आधीन होना हमारी बेइज्ज़ती समझीजावे सासनेजवाब दिया कि अगरसबलोग तुम्हारे प्रकार समझा करैं तो क्यों अलग हों संसारका यही दस्तूर होता चला आया है और होता चला जायगा कि बेटे माता पितासे अलग होजाते हैं और मैं तो जानती हूं कि जगतमें कोई बहू ऐसी न होगी कि जिसका स्वामी कमाऊ हो और वह सासनन्दोंमें रहना अंगीकार करे परमेश्वरीदत्तने कहा यह आपका कहना दुरुस्त है अगर बेटे माता पिता से अलग न हुआ करते तो शहर में इतने घर कहांसे आते परन्तु हरएककी दशा जुदी है अलग होकर रहना मेरे नजदीक उचितनहीं दशरुपयेका तो मैं नौकर इतनी आमदनीमें अलगघर सम्हालना बहुत कठिन है और फिर इस नौकरी काभी भरोसा नहीं अलग हुये पीछे अगर नौकरी जाती रही तो फिर बापके घर आना मुझको अतिकठिन गुज़रेगा उससमय अलबत्ता बेइज्ज़ती होगी लोग कहेंगे कि मियां अलग तो होगये थे फिर झखमारके बापके टुकड़ोंपर आपड़े लोगोंकीरीस इसमामलेमें ठीकनहीं अपनी दशापर आप विचारकरना चाहिये वह नक़ल आपने सुनी है एकशख्सने बाजारसे नमक और रुईमोलली नमक खच्चरपर लादा और रुई गधेपर चलते चलते राहमें एक नदी मिली नदी पैरावथी उसशख्स ने खच्चर और गधे को लदा लदाया पानी में उतार दिया बीच नदी में पहुंचकर खच्चर ने डुबकी लगाई थोड़ीदेर पीछे सिर उघारा तो गधेने पूछा क्यों यार खच्चर यहतुमने क्याकिया खच्चरने जवाबदिया कि भाई तुम्हारे तो बड़े भाग हैं तुमपर रुईलदी है इसकाबोझतो बहुत हलका होताहै मुझ अभागेपर तो नमक है बोझके मारे मेरीकमर कटकर लोहूलुहानहोगई है यह हमारा मालिक ऐसाबेदर्द है कि इसको हमारे दुःखका ध्यान नहीं अनाप शनाप जितनाचाहताहै लादलेताहै मैंने समझा कि मंजिलतक पहुं-

चते २ कमर जाती रहेगी आवो डुबकी लगावो नमकपानी में भीजकर कुछतो गलजायगा जिसक़दर हलके हुये बेहतर होगा मालिक बहुत करेगा चार डंडे मारलेगा सो योंही रास्तेभरमें डंडे खाते आताहूं देखो अब मेरा बोझा आधा रहगयाहै गधे बुद्धिहीननेभी खच्चरकी रीसकरके डुबकी लगाईरुई भीगकर औार भारी होगई घिरघारा ता हिला न जाताथा खच्चरहंसा औार कहा क्योंभाई गधेक्याहालहै गधे ने कहा यार मैंतो मराजाताहूं खच्चरने कहा अयनासमझ तूने मेरी रीस तो की परन्तु इतना तो समझ लेता कि मेरी पीठपररुईहै नमकतो नहींहै अस्मानान ऐसा न हो लोगोंकी रीस करने से मेरा हालभी उस गधे कासा हो सासने कहा भाई तुमतो किसी से हारनेवाले नहीं मैंतो सीधीबात यह समझतीहूं कि दशरुपया महीना तुमकमातेहो परमेश्वरकी कृपाहैसस्तासमयहै बालनहीं बच्चानहीं भगवानदयारक्खेतुम दोनोंमियांबीबी अच्छीतरहसे रोटीदालखाओनैनसुखतंजेब पहनो आगेकाशोच तुम्हारीतरह लोगकियाकरें तो संसार का कामबन्दहोजाय नौकरीतो नौकरी जीनेका भरोसानहीं जै दिनजीनाहैहंसीखुशीमें टेरकरदेनाचाहियेपरमेश्वरीदत्त नेकहा यहीतो मैंभी शोचताहूं खुशीअलग होकर रहनेमें है या साथमें सासने कहा हुज्जत दलील से क्या प्रयोजन सीधी बातयही क्यों नहींकहते कि मुझको मासे अलग होनामंजूर नहीं एकबात तुमसे बीबीनेकही उसकेमानने में इतना बड़ा शोचहै औार फिरकहतेहो कि हमबीबी की खातिरदारी में कमीनहीं करते आराम सुखवहीहै कि जिसमें बीबीखुशहो इसकेपीछेबातोंमें रंजहोनेलगा परमेश्वरीदत्तनेजवाबदेनाबन्द करदिया जोकि रात अधिकगई थी इसलिये परमेश्वरीदत्त ने मासे कहा अबआप सोइये इसबातको मैं फिरशोचूंगा ये लोग तो सोरहे परन्तु परमेश्वरीदत्त रातभर इसीखयाल के उधेड़बुनमें रहा औार मनहीमन में बातें करतारहा सुबह जा उठातोदेखा सरमतीझाड़ू देरहीहै बहनाईको देखकर

सरस्वतीने सलामकिया और कहाभाई साहब नहानेकेवास्ते पानी मौजूद है परमेश्वरीदत्त ने नहाया और नित्यनेम से फ़राग़त की सरस्वती चाह बनाकर दो पियालियोंमें लेआई और दो चिमचा और एकतश्तरी में कन्दलाकर सामने परमेश्वरीदत्तके रखदिया परमेश्वरीदत्तने चाहपीतो अच्छेस्वाद और अच्छी बू बासकीथी जिसको पीकरचित्त बहुत प्रसन्न हुआ परमेश्वरी उस वक़्ततक अपने स्वभावके अनुसार पड़ी सोतीथी परमेश्वरीदत्तने सासमे कहा आपभी सुबह उठने की ताकीद कीजिये सासनेकहा बेटायह अपनीनानी की बहुत चहेती है उनकेप्यार दुलारने इनका मिज़ाज और इनका स्वभावसब खराबकरदिया जबयहछोटीथी औरमैं किसीबात पर घुड़क बैठतीथी तो कई २ दिनतक मुझसे बोलना छोड़देती और यहतो क्या ताक़तथी कि परमेश्वरी को कोई हाथ लगावे परमेश्वरी बात२ परहठकरती चीज़ोंको तोड़तीफोड़ती परंतु उनकेडरकेमारे कोई कुछकहन सक्ता था इसी बात पर परमेश्वरीके बापसे रोज बिगाड़ रहताथा जब परमेश्वरी दत्त बिदाहोनेलगा चलते चलते सासने कहा कि बेटा रात की बातयादरखना और उसका जरूर कुछबन्दोबास्तकरना रास्ताभरपरमेश्वरीदत्त उसबातको सोचताआया घरमें पहुंचातो माने देखाकि परमेश्वरीदत्त के चेहरेपर उदासी छाई हुईहै माताने समझा कि यह ज़रूर ससुराल में लड़ा है परमेश्वरीदत्तसे कहाकि आखिरतूने मेराकहना न कियापरमेश्वरीदत्तने कहा कि अम्मा भगवान की सौगन्द लड़ाईभिड़ाई कुछ नहीं हुई माने कहा फिरसुस्त क्यों है परमेश्वरीदत्त ने जवाबदिया कुछभी नहीं सोता उठकर आयाहूं इसकारण शायद आपको मेरा चेहरा उदास मालूमहोता होगामाने कहा लड़केहोघरमें आक्या तुझको सोताउठकर कभीयोड़ाही देखाहै सचबता क्या बातहै परमेश्वरीदत्त ने लाचार होकर रातकी तमाम कहानीमाताको सुनाई सुनतेके साथहीमाता को काटो तो लोहू नहीं था परंतु वह स्त्री बड़ी बुद्धिमान थी

कहनेलगी अगर्चि मेरी इच्छा यहथी कि जबतक मेरे दममें
दमहै तुमसबको अपने कलेजे से लगायेरहूं और तुम दोनों
भाईमिल चुलकररहो परंतु मैं देखतीहूं तो सामान उलटे२
नजर आते हैं ले आजमैं तुझसे कहतीहूं कि व्याहके दूसरे
महीनें से तेरीबीबीका इरादा अलग घर करनेका है तू जो
दस रुपये महीने के महीने लाकर मुझको देता है उसको
बहुतबुरा मालूम होता है रातदिन मैं बहूके सहेलियों से
सुनतीरहती हूं कि बहू महल्ला तोपदरवाजे में मकान लेगी
यमुना को साथ लेजांयगी जब तक यह सब लड़कियां इकट्ठी
बैठीरहतीहैं यही जिकिर यहीबातें आपस में रहा करतीहैं
मैंने एक बार तुम्हारी मौसियासासके मुंहपरयह बातकहदी
थीकिअगरबहूहमारेसाथ रहनानहींचाहती तो अपनाखाना
कपड़ा अलगकरले और इसीघरमेंरहे परन्तु तुम्हारी मौसिया
सास से मालूम हुआ कि यह बहू को मंजूर नहीं आदमी
ब्याह खुशी व आराम के लिये करताहै रोजकी लड़ाई प्रति
दिनका झगड़ा निहायत बुरीबातहै अगर तुम्हारी बीबी को
यहीमंजूरहै और अलगरहनेसे उसकोखुशीहै तोमुझको उ-
जरनहीं जहां रहोखुशव आबादरहो परमेश्वरने एक मासता
संतानकीहमारेपीछे लगादी है सोकभीतुम इधरको निकले
एक नजरदेखलिया खबरआगया घरकेकाम धंधासेकभीछुट-
कारामिलातोमैंआप चलीगई तुमकोदेखआई यहकहनाथा
कि परमेश्वरीदत्तका जीभरआया और बेअखतियार रोनाशु-
रूअकिया और यहसमझाकिआजमातासेजुदाईहोतीहै माता
भी रोई थोड़ीदेर पीछे परमेश्वरीदत्तने कहा कि मैंतो अलग
नहीं रहूंगा बीबीरहेयाजाय माने कहाअरेबेटा यहभी कहा
होतीहै अशराफ़ों में कहीं बीबीमियांभी छूटेहैं तुमको अपनी
उमर इन्हींके साथ काटनीहै हमारा क्याहै हममरनेके नज-
दीक पहुंच चुकीहैं आज मरे कलदूसरा दिनहै मेरी सलाह
मानौ तो जोयह कहेसो करो हमने जिसदिन तुम्हाराब्याह
किया उसीदिनसे तुमको अलगसमझा तुम जानोवे बेटे न मैं

अनोखीमा कौनबटा अपनीमाके साथ रहाहै परमेश्वरीदत्त ने अपने मित्रोंसभी सलाह पूंछी सबने यही कहा झगड़ारफ़ा करनाबेहतरहै और साथरहनेपरक्यामाता पितासे अलगरहो परन्तु उनकी खिदमत् और ताबेदारी करो जबसब लोगोंने यही सलाह दी तो परमेश्वरीदत्त ने मनमें सोचा कि अलग रहकरभी देखलो अगर यह स्त्री सम्हलजाय और घरको घर समझे बदमिजाजी बदजबानी छोड़दे तो अलग रहना ऐब व गुनाह नहीं यही न कि गृहस्थी की फ़िकर करनी पड़गी और तंगी से गुजरेगी सो संसार में रहकर फ़िकरसे किसी सूरत छुटकारानहींहै अबभी कुछचिन्ता नहींहै यहरोजका झगड़ा तो कितना बड़ा क्लेश है और रोजी का अंदेशा भी बेजाहै जितनीहोती तकदीरमेंहै बहरहाल पहुंचेगीआदमी का उपाय औा तदबीर को इसमें क्या दखल है यह सोचकर परमेश्वरीदत्तने अलग होजानेका इरादा पक्काकर लिया संयोगसे इसीके मा बापके मकान के पास एक घरभी खाली था एक रुपया माहवारी कियायापर उसको ठहरा लिया बल्कि दरवाजे में कुफ़ल देकर सरखत भी लिखदिया और ससुरालमें कहलाभेजा कि मकान लेलियाहै अबआओ तोनये घरमें चलें और माता पिता सेभी कह दिया कि यही गंधी वाला मकान लेलियाहै माताने जितना असबाब बहूकाथा कपड़ोंकी संदूक बरतन बिछोना मसहरीपलंग सबएक अलहदा कोठरीमें रखवादिया शाम को बहूभी आपहुंची सवेरे उठ माताने कोठरी खोल परमेश्वरी दत्तसे कहा कि लोभाई अपनी चीजें तुम दोनों मियां बीबी खूब देखभाल लो परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा तुम यह क्या कहती हो क्या ये चीजें कोई ग़ैरजगहथीं माताने कहा बेटा यहबात नहीं है ऐसा नहो उठाने बैठाने में कोईबस्तु इधरकी उधर होजाय और कहारीसेकहाकि तुमसब येअसबाब गन्धीवाले घरमेंपहुंचा दो इतनेमें परमेश्वरी की सब सहेलियां भी आ पहुंची बात की बात में सब असबाब नयेघरमें पहुंच गया परमेश्वरी

बहुत आनन्दसे नयेघरमें आकर बसीतीनदिन तक दोनोंवक्त परमेश्वरी दत्तकी माताने पूरी तरकारी खानेको भेजी चौथे दिन परमेश्वरी दत्तने बीबी से कहाकि साहब अब कुछ खाने का बन्दोबस्त शुरूअ हो बीबीने जवाबदिया सबअसबाब अभी बेठिकानेपड़ाहै यह रखजायेतो फराग़त से हंडियां चूल्हेको देखूं अभी तो मुझको नावकाश नहीं गरज सात दिन तक बाज़ारसे पूरी मिठाई मंगवाते और दोनोंमियां बीबी खालेते परमेश्वरी दत्तने आखिर रोज़ २ तकाज़ा करके बीबीसे खाना पकवाया बीबीने कभी खाना पकाया न था रोटी पकाई तो अजब सूरत की न गोल न चौखुटी एक कान इधर निकला हुआ और चारकान उधरकिनारे मोटे बीचमें टिकियाकहीं जलीकहीं धुयेंमें काली और दाल जो पकाई तो पानीअलग दाल अलग गरज बीबी ने ऐसा अच्छा खाना पकाती थी कि जिसको देखकर भूख भाग जाय दो एक दिन तो परमेश्वरी दत्तने सबरकिया आखिरको उसने अपनी माके घरका खाना शुरूअ करदिया बीबी ने भी अपने आराम का ठिकाना कर लिया दोनोंवक्त बाजारसे कचौरियां पूरी बरफ़ी मलाईमंगा-कर खालियाकरती थी खाना जो पकता भोंदूकुंजड़ेकी बेटी चुनियां और बखशूगन्धीकी लड़की जुलफ़न वगैरह खालेतीं परंतु दशरुपये महीने में यह चखोतियां क्योंकर होसकी हैं चुपके चुपके असबाब बिकने लगा परमेश्वरी दत्त को इसकी खबर भी न हुई एक दिन परमेश्वरीदत्त नौकरी पर गया था बीबी दो पहरको सोगई थी चुनियां कुंजड़िन जोआई उसने देखा बहू बेखबर सोरही है उसने अपने भाई पीरूको खबर करदी वह बड़ाचोर और बदमाशथा बहूतो सोतेकी सोती रही पीरू आकर दिन धारे तमाम बरतन चुरा कर लेगया बहू उठी तो देखा घरमें झाड़ूदी हुई है कोठरी में तालालगा हुआ था उसका असबाब तो बचा बाक़ी जो चीज़ ऊपर थी एक २ करके चोर लेगया था अब पानी पीनेतक को गिलास न रहाथा परमेश्वरीदत्त नौकरीपरसे आया तो सुनकर बहुत

उदास हुआ परंतु अब पछताये क्याहोताहै चिड़या चुनगई खेत बीबीसे खूबलड़ा और खूबसिरपीटा आखिर तो धोकर बैठरहा कर्ज दाम करके हलकी हलकी दो डेगचियां मोल लाया छोटे बरतन मासे मांगलिये परात तवा तावी मास ने भेज दी गरज इसी प्रकार काम चल निकला संयोग से एक कुटनी भी उनदिनों इस शहरमें आई थी और तमाम शहर में उसका गुल था परमेश्वरीदत्त ने भी बीबीसे कह दिया था कि अजनबी स्त्रीको घरमें मत आनेदेना इनदिनों एक कुटनी आईहुईहै कईघरोंको लूटचुकीहै परंतु बीबी निहायत मूर्ख और ना समझ थी उसकी प्रकृतिथी हरएकसे जल्दमिलजाना एकदिन वही कुटनी भगतिनका भेषबनाये उसगलीमें आई यह भगतिन मूर्ख स्त्रियोंके बहलाने के हेतु अनेकप्रकार की वस्तें और बहुतसी दवायें अपने पासरखती थी गलीमें आकर जो इसने अपनी दूकान खोली तो बहुतसी लड़कियां इकट्ठा होगईं परमेश्वरीने भी सुना चुनियां कुंजड़िनसे कहा जबभगतिन गली से उठने लगे तो यहां लिवालाना हम भी उसकी चीजोंको देखेंगी चुनियां जाखड़ीहुई और भगतिनको लिवा लाई परमेश्वरीने बहुत आवभगति से भगतिन को पास बिठलाया और सब वस्तें देखीं सुरमा व संगयशबकीतख्ती परमेश्वरीने पसंदकी भगतिनने परमेश्वरी को बातोंमें टाललिया कि यह स्त्री ढब पर जल्द चढ़ जायगी एक पैसा का बहुत सुरमा तौलदिया और दो आने की संगयशब की तख्ती दी और फीरोजेकी अंगूठी मुफ़्तदी परमेश्वरी रीझगई भगतिन ने समुद्र का हाल द्वारिकापुरी और रामेश्वर और जगन्नाथ की कैफ़ियत और दिल से जोड़कर दो चार बातें ऐसी की कि परमेश्वरी ने बहुत प्रीतिसे सुनी भगतिनने पूछा कि क्यों बी तुम्हारे कोई बालबच्चा नहीं परमेश्वरी ने आह खींचकर कहा कि हमारे ऐसे भाग कहां थे भगतिनने पूछा ब्याहको कितने दिन हुये परमेश्वरी ने कहा कि अभी वर्ष दिन भी नहीं हुआ परमेश्वरी के अज्ञानता था अब तो भगतिन को

निश्चय हुआ और दिल में कहने लगी इसने संतान का नाम सुनकर ऐसी आह खींची जैसे कोई वर्षों का उम्मेदवार हो भगतिनने कहा ना उम्मेदी की बात नहीं है तुम्हारे तो इतने बच्चे होंगे कि तुम सम्हाल न सकोगी अलबत्ता इस समय अकेले घर में जी घबड़ाता होगा फिर भगतिन ने पूछा मियां का क्या हाल है परमेश्वरी ने कहा सदा मुझसे नाराज रहा करते हैं ग़रज पहिली ही मुलाक़ात में परमेश्वरी ने भगतिन से ऐसी बेतकल्लुफ़ी की कि हाल बिलकुल उससे कह दिया भगतिन ने बातों २ में तमाम भेद मालूम कर लिया एक पहर भगतिन बैठी रही इसके पीछे बिदा होने लगी परमेश्वरी ने चिरौरी की और कहा भगतिन अब कब आओगी भगतिन ने कहा कि मेरी भानजी चौक में एक घर में ब्याही है इन दिनों बहुत कोपित है उसको बीमारी की खबर सुनकर मथुरा से इलाज करने के हेतु आई हूं उसके दवा दरमन से मुझको फुरसत कम होती है तिसपर भी अगर परमेश्वर ने चाहा तो दूसरे तीसरे आन तुमको देखजाया करूंगी अगले दिन भगतिन फिर आ मौजूद हुई और एक रेशमी इजारबन्द लेती आई परमेश्वरी दूर से भगतिन को आते देख आनन्द होगई और पूछा इजारबंद कैसा है भगतिन ने कहा बिकाऊ है परमेश्वरी ने पूछा कितने का है भगतिनने कहा चार आने का चौक में एक महाजन की स्त्री रहती है उसका पुरुष मरगया है अकेली है और अब गरीब होगई है असबाब बेंच२ कर गुजर करती है बहुत चीजें मैं उनकी बेचवा दिया करती हूं परमेश्वरी इतना सस्ता देखकर लोट होगई तुरंत पैसे निकाल भगतिन के हाथ दिये और बहुत गिड़गिड़ा कर कहा कि जो अच्छी वस्तु बिकाऊं हुआ करे पहिले मुझको दिखा लिया करो भगतिन ने कहा बहुत अच्छा पहिले तुम पीछे और उसके पीछे इधर की बातें हुआ की चलते हुये भगतिन ने एक बटुआ निकाल उसमें एक डबियाथी डबिया के अन्दर कागज की पुड़िया में थोड़ी लौंगें थीं उनमें से दो लौंगें परमेश्वरी को दीं और कहा कि

संसार में प्रीति इसी हेतु हुआ करती है कि एकको दूसरे से लाभहोवे लौंगे मैं तुमको देतीहूं एक तो तुम अपनी चोटीमें बांधलो दूसरी बेहतर था कि तुम्हारे स्वामीके पगड़ीमें रहती तुम्हारे स्वामी कदाचित् संदेहकरें खैरतकियेमें सीदो और उनका प्रभाव आजही से देख लेना परंतु इतनी एहतियाज करना कि पाक साफ़ जगह में रहे और अपने डौलके मुवाफ़िक एक तागा मुझको नापदो मैं तुमको एक गंडा बनवा लादूंगी जबमैं द्वारिकापुरीकोगईथी तो उसजहाज़ पर जिस परमैंचढ़ीथी जैपुर नगरीकी रानीभी सवारथी शायद तुमनें उनका नाम भी सुनाहो गंगारानी उनका नाम था सब कुछ उनको परमेश्वरनेदे रक्खाथा धनकी कुछगिनती न थी नौकर चाकर लौंडी गुलाम पालकी नालकी सभी कुछ था एक तो संतान न होनेसे उदास रहा करती थीं दूसरे राजा जी को उनकी कुछप्रीति न थी शायद पुत्र न होनेके कारण कुछप्रीति न करतेहों लेकिन रानी रूपस्वरूपमें चांद सूर्य्य के समान थी और इससुन्दरताई और धनपर मिज़ाज ऐसा सादा कि हम ऐसे नाचीज़ोंको बराबर बैठाना और बात पूछना रानीको फ़कीरोंसे बहुतप्रीति थी एकदफ़ा सुना कि तीन कोसपर उनके घरसे कोई फ़कीर आयाहै अपने घरसे उठकर नंगेपांव उसके पास रातको गईं और पहरभर तक हाथजोड़े खड़ीरहीं एक मर्तबा जोशाहजीने आंखउठाकरदेखा कहा जामाई रातको हुक्ममिलेगा रातको रानीने सपने में देखा कि कोई कहता है कि द्वारिकापुरी में जाओ वहांसे मुराद मिलेगी सबेरे से उठकर रानी ने द्वारिका जाने की तैयारी शुरूअ की यहां से गरीबों को अपने पाससे खाना और किरायो सवारी का देकर अपने साथ लेगई उनमेंसे एक मैंभीथी हरघड़ीकेपास रहने से रानी मुझपर बहुतदयाकरनेलगी और सहेली कहा करती थी किनारे समुद्रके जब पहुंची जहाज़ किराये किया और सब सवारहोकर द्वारकापुरीमें पहुंचे द्वारकापुरीमें सब मन्दिरों को रानीने सबसमेत दर्शनकिया और बड़ाभण्डारा

किया थोड़े दिन पीछे सुना कि द्वारिकापुरी से दशकोश पर एक ऊंचे टीलेपर एकयोगी रहता है जो गयासुराट लेकर आया सो रानीभी पांच सहेलियों सहित कि जिसमें से एक मैंभी थी उसटीलेके ओर रवानाहुई जबउस टीलेके नजदीक पहुंची तो देखा कि चारों ओर झाड़ी झंखार है और बहुत अच्छी सुगन्ध उसमेंसे आरही है तब चलते २ टीलेपर पहुंची तो देखा कि योगी अकेले एकगड़हेमें रहतेहैं बहुत अच्छा स्वरूपहै योगीने हमसबको देखकर आशीर्वाद दिया और रानीको बारह लौंगे फूंक कर दीं और मुझसे कहा चलीजा मथुरा आगरेमें लौंगोंका काम बनायाकर बेटीउन बारह लौंगों मेंसे ये दो लौंगेहैं द्वारिकापुरी का तीर्थयात्रा करके रानी रामेश्वरके दर्शनको गई और वहांसेजगन्नाथजी के दर्शनकरके घरकी ओर लौटीं तो राजा या तो रानीकी बात न पूछतेथे या यहनौबत हुई कि एक महीने आगे से आकर प्रयागमें पड़ेथे ज्योंही रानीप्रयाग में पहुंची राजा ने रानीके कदमोंपर शिर रखदिया और रानीसे रो २ कर अपराध क्षमाकराया और घरकोलेगये छःवर्षतक मैरानीकेपास रही इसबीचमें योगीकेआशीर्वादसे लगातार ऊपर तलेचार बेटे मेरे रहनेतक रानीके होचुकेथे फिर मुझको अपना देश याद आया रानीसे छुट्टी मांगी रानी ने बहुतसा रोका मैंने कहा योगी ने मथुरा आगराके लोगोंकी टहल वो सेवा मेरे सिपुर्द की है इसलिये मुझे वहांजाना अवश्यहै यह सुनकर रानीने लाचार मुझको विदा किया और चार लौंग दीं यह कहानी सुनकर परमेश्वरी तन मन से भगतिन की मुअतक़द होगई भगतिन तो लौंगे देकर बिदा हुई परमेश्वरी ने नहाकर कपड़े बदलकर सुगन्धलगा एकलौंग तो परमेश्वर का नामलेकर अपनी चोटीमें बांधी और मियांके पलंग की चादर और तकियोंका ग़िलाफ़बदल एकलौंग किमीतकिये में सींदी परमेश्वरीदत्त जोघरमेंआया तो बीबीकोदेखा साफ़ सुथरेपलंगकी चादर भेकहे बदली है खुशहुआ और प्यारसे

बात करनेलगा बीबीने कहा देखो आजहमने एक चीजमोलली है यह कहकर इजारबन्द दिखाया परमेश्वरीदत्तने कहा कितनेको लिया है बीबीने कहा तुम आंको कितनेका है वह इजारबन्द खासलाहौरका बनाहुआथा निहायत अच्छा था कलाबतून के गुच्छे दोनों किनारे लगेहुये थे परमेश्वरीदत्त ने कहा दोरुपये से किसीप्रकार कम नहीं है बीबीनेकहा चार आने को लियाहै परमेश्वरीदने कहा सचकहो बीबी ने कहा तुम्हारे सिरकी सौगन्ध चारही आनेकोलियाहै परमेश्वरी ने कहा एकभगतिन बड़ी नेकहै बहुतदिनोंसे इसगलीमें आया करती थी किसी महाजनकी स्त्रीकाहै वह बेचनेको लाई थी यह कहकर सुरमा व संगयशव की तखुती फीरोजा कीअंगूठी परमेश्वरी ने दिखाई लालच ऐसी बुरी बला है कि बड़ा सयाना आदमी भी इससे धोखा खाजाता है जंगली जानवर मैना तोता लाल बुलबुल आदमीकी शकलसे भागतेहैं तुरंत दाने केलालच से जालमें फंसजाते हैं और जन्मभर पिंजड़े में कैद रहतेहैं इसीतरह परमेश्वरीदत्तभी अपना लाभ देखकर आनन्दहुआ फिरपरमेश्वरीनेकहाकिवह भगतिन महाजनकी स्त्रीकीसंपूर्णवस्तु जोबिकने निकलेगी मेरे पास लानेका वादा करगईहै परमेश्वरीदत्त ने कहा अवश्य देखना चाहिये परंतु ऐसानहो कि चोरीकामाल हो पीछे खराबी होय और भगतिन कोई ठगनीनहो परमेश्वरी ने कहा कि भगवान २ करो भगतिन ऐसी नहीं है परमेश्वरीदत्त से जो आज ऐसी बातें हुईं उसको बीबी को लोगोंपर विश्वास होगया दूसरे दिन चुनिया कुंजड़िनको भेज भगतिन को बुलवाया आज परमेश्वरी बेटीबेनी और भगतिन को माता बनाया रातके समय परमेश्वरीदत्तसे फिर भगतिन का चर्चा हुआ तब परमेश्वरीदत्तनेकहा कि देखो होशियाररहना इसभेषमें दूतियां और ठगनियां बहुत हुआ करतीहैं परंतु लालचने परमेश्वरीदत्तकी बुद्धिपर ऐसापर्दा डालदियाथा कि इतनी मोटीबात उसनेन समझी कि दोरुपयेका माल चारआने को कोई बेप्रयोजन

देताहै परमेश्वरीदत्तको उचितथा कि उसभगतिनके आनेको मनाकरदेता और सबवस्तु उसकी फिरवादेता परमेश्वरीको तो इतनाज्ञानही नहीं था कि इसबातको समझती कई दिन पीछे परमेश्वरी ने भगतिन से पूछा क्यों भगतिन आज कलह के ईवस्तु नहींलाती भगतिन ने जानलिया कि इसको अच्छी चाटलगगई है कहा तुम्हे देढनकी कोई वस्तु मिलेतो लाऊं कईदिन पीछे झूठेमोतियोंकी एकजोड़ीलाई और कहालो बीबी ये महाजन की स्त्रीके नथके मोतीहैं ननानों हजार की जोड़ीहै या पांचसौकी रामदयाल जौहरीको मैंने दिखाई थी दोसौमेरेरुपये पल्ले बांधे देताथा मैं महाजनकी स्त्रीसे पचास रुपयेपर लाईहूं तुमलेलो फिर ऐसासच्चामाल नमिलेगा परमेश्वरीने कहा पचासरुपये तो मेरेपास नहींहैं भगतिननेकहा क्याहुआ बेटी पहुंचियां बेचकर लेलोनहींतो आजये मोती बिकजांयगे भगतिनने इसढवसेकहा कि परमेश्वरी तुरंतगहने का संदूक उठालाई और पहुंचियां निकाल भगतिन कोदीं भगतिन ने परमेश्वरी का गहना देखकर कहा कि अयहय कैसी बुरी तरह गहना मुलीग.जर के समान डाल रक्खा है बेटी धुकधुकी में डोरा डलवाओ बाली पत्ते मगर मुरकियां बाजूबन्द मैले चीकट होगये हैं मैल सोनेको खाये जाता है इनको उजलवाओ परमेश्वरीने कहाकौनडोरा डलवावै कौन उजला करालाये उनसेकहतीहूं तो कहतेहैं मुझे सावकाश नहीं भगतिनने कहा जईबेटी कौनबड़ा कामहै मोतीगहने दो अभी मैं डोरा डलवालाऊं और जो गहना मैला है मुझे निकालदो मैं अभी उजलवादूं परमेश्वरीने सब गहना सौंपि दिया भगतिनने कहा मुंगियामहरीको भी मेरेसाथ करदो वह सुनारके पास बैठी रहैगी मैं पटुवासे डोरी डलवाऊंगा परमेश्वरीने का अच्छा यह कहकर मुंगिया को आवाजदी वह आईतो भगतिनने कहा मेरे साथचल सुनार की दूकान परबैठी रहियो भगतिनने गहनालिया मुंगिया साथहुईगली से बाहर निकल भगतिनने रूमालखोला और मुंगियासेकहा

लाओ उजलवाने को अलग करके और होरा डलवाने को अलग गहनेको अलगकरते २ भगतिन बोली अयेनाककी लौंग कहांहै सुंगियाबोली इसीमें होगी जराभरकी तो चीज है इस पोटलीमें देखो फिर आपही आप बोली अय हय पानदान के ढकनेपर रहगई है अरी सुंगिया दौड़ियो जल्दीसे लेआ सुं-गिया भागी २ आई और दरवाजे में से चिल्लाई बीबी नाक की लौंग पानदान के ढकनेपर रहगई है भगतिन ने मांगी है जल्दीदो भगतिन गलीके नुक्कड़पर मोहनबनिये की दूकानके आगे बैठीहै यहकहना था कि परमेश्वरी का माथा ठनका सुंगियासे कहा बाउलीहुई है कैसी लौंग मेरेपास कभी तूने देखी है अरी जल्दीदौड़ कहीं भगतिन चली न जाय सुंगिया उलटेपाओं दौड़ीगई भगतिनको इधरदेखा उधर देखा कहीं पता नथा परमेश्वरीसे आकर कहा बी भगतिन को तो कहींपता नहींबाजार तक देखआई इतनी देरमें नहीं मालूम कहां गुम होगई यहसुनकर परमेश्वरी कहनेलगी हाय मैं लुटगई हायमैं लुटगई अरे लोगो परमेश्वर के लिये दौड़ियो चौकतक लोग दौड़े वहांजाकर प्रकट हुआ कि कहींसे बहुतीबहाती महीनेभरसे किरायेपर आकर रही चारदिनसे मकान छोड़ चलीगई अब क्या होसक्ताथा परमेश्वरीदत्त ने आकर सुना शिरपीटा और जोडू से कहा अरी तू घरको मटिया मेल करके छोड़ेगी मैं तुझको पहिलेसे जानताहूं जोडूने कहा चल दूरहो अबबात बनाने खड़ा हुआ दरवाजा बंद देखकर तूने आय मुझसे नहीं कहा कि हां महाजन की स्त्रीका सबअसबाब अवश्य देखना इस विधिसे अच्छे प्रकार की लड़ाई दोनों स्त्री पुरुष में हुई तमाम मुहल्ला इकट्ठा होगया बात २ पर चली तो प्रकटहुआ कि इसीभगतिन ने कंधारीबाजार से लाल गुलजारीमल की जोडूका तमाम गहना इसबहानेसे ठगलिया कि एक फकीर से टूना करालादूंगी रानी कटरामें जवाहरमल महाजनकी बेटीसे ऐसीप्रीति बढाई कि उसका गहना मंगनीके बहाने से उड़ालेगई गहनातो इस प्रकार पर गया बरतन पहले चोरी

जाचुकेथे हजाररुपये को मोतियोंकी जोड़ीजो लोगोंने देखी सो तीनपैसेकीथी घानमें इत्तिला हुई लोगोंने बहुत ढूंढ़ा मगतिनका पतानमिला परमेश्वरीके दहेजमें जो कपड़े मिले थे अब उनका हाल सुनिये जब तक परमेश्वरी सास के साथ रही सास इसमें पंद्रहवें दिन निकालकर धूपदेदिया करती थी शुरूअ बरसात में परमेश्वरी अलग हो कर रही कपड़ों का संदूक जिस कोठरी में जिस प्रकार रक्खा गयाथा तमाम बरसात गुजरगई उसी विधि रक्खा रहा जाड़े के शुरूअ में दुलाईकी जरूरत हुई और संदूक खोला गया बहुतसे कपड़ों को दीमक चाटगईथी चूहोंने काट २ वगारें डालदिये थे कोई कपड़ासाबित नहींबचनेपाया जोलड़कियां छुटपनमेंलाड़दुलार में रहाकरतीहैं और गुनढंग नहींसीखतीं परमेश्वरीकीतरह योंजन्मभरक्लेश और दुखभोगतीहैं परमेश्वरीकाहालजितना तुमनेपढ़ाउससे तुमकोप्रगटहुआ होगा कि परमेश्वरीकोमाता औरनानी के लाड़ने उसको जन्मभर कैसे लोभमें रक्खा लड़कपनमें परमेश्वरीने नतो कोई गुणसीखा नकुछ उसके मिजाज की दुरस्तीहुई जब परमेश्वरीने साससे अलगहोकर घरकिया बरतनभांड़ा वस्त्र भूषण सबकुछ उसकेपासथा परंतुगृहस्थी करनेका ढंग नहीं जानती थी थोड़े दिनमें तमाम असबाब माल मिट्टीमें मिलादिया और एकहीवर्षमें हाथकान सेनंगी रहगई अगर परमेश्वरीदत्त भी उसकी तरह बुद्धि हीन और बदमिजाज होतातो शायदएकदूसरेसे जुदाईहोजाती परंतु परमेश्वरीदत्त ने नीतिबुद्धि और भलमंसी को बरता॥

सरस्वती का वृतान्त॥

अबसरस्वतीका वृत्तान्तसुनो वहपुत्रीउसघरमें ऐसीथीजैसे बागमें गुलाबका फूल यामनुष्यके शरीरमें जेवहर एकप्रकारका गुण और ढंग उसकोप्राप्त था बुद्धिगुण धीर्यताज सब बात परमेश्वरने सरस्वती कोदीथी लड़कपन से उसकोखेलकूद औरहंसी और ठट्ठेसे नफरत थीपढ़ना याघरकाकार्य करना अथवा उसको किसी नेप्रयोजन नकतेया किसीसे लड़ते नहीं

दखा महल्ले कीजितनी स्त्रियांथीं सबइसको पुत्रीकेसमानजानती थीं क्या अच्छेभाग्य उसमाता पिताके थे जिसकीबेटी सरस्वतीथी और क्या अच्छेनसीब उसघरके जिसमें सरस्वती बहुबन कर जाने वालीथी अबपरमेश्वर कीकृपा सेसरस्वती कीअवस्था तेरहवर्ष कीहुईबाततो इसकीअम्बिकादत्त सेठहरी ठहराई थीअब चर्चाहोनेलगा किसहोना और दिन ठहर जावें उधर अम्बिकादत्तकी माता परमेश्वरी के ढंगदेख इतना डर गईथी मसलहै किदूधका जलामट्ठा फूंककरपीता है परमेश्वरीकीसूरतसे बदनपर रोंगटेखड़े होतेथेइसलिये अम्बिकादत्तकी माताका इरादाथा कि छोटेलड़केकी संगनीदूसरे घरमेंकरूं परमेश्वरी दत्तको किसीप्रकार यहबात मालूमहुई इसने मातासे कहा अम्मा मैंने सुना है कि तुम अम्बिका दत्त की संगनी छुड़ाया चाहती हो माता ने कहा क्या बताऊं बेटा बड़ेसोच में हूं क्या करूं क्या न करूं तुमसे मेरीआंख सामनेनहीं होती मुझको परमेश्वरने तुम्हारा अपराधी बना दिया देखिये अम्बिका दत्तके भाग्य कैसेहैं परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध सरस्वती हजार लड़कियोंमेंसे एकहै जन्म भर दीवा लेकर ढूढ़ोंगीतो सरस्वती की सी बहू न पाओगी गुण रूप दोनों परमेश्वरने उसको दिये हैं कुछ डर न करके ब्याह कर डालो और उसकी बड़ीबहिनपर ध्यानमतकरो हरएक का स्वभाव और एक की प्रकृति अलग २ होती है ब्याहके बाद तुमको मेरी बातका विश्वास हो जायगा परमेश्वरीदत्त ने जो बहुतसी स्तुति सरस्वतीकी कीतो उसकीमाता राजीहोगई और जो संगनी पहिले ठहरीथी वहपक्की होगई गरज दोनों समधियानोंके सलाहसे यहबात ठहरी कि फागुणसुदी दशमीको ब्याह होजावे सरस्वती का बाप देवीदत्त कांगड़े के जिलअमें तहसीलदारथा उसकोचिट्ठी भेजीगई चिट्ठीकेपहुंचनेसे वहबहुत आनन्दहुआ क्योंकि सरस्वतीको सब बच्चोंमें बहुत जानताथा परंतु छुट्टीकी अर्जीभेजीतो छुट्टीनहीं मिली छुट्टी न मिलनेसे बहुतउदास हुआ परंतु क्याकरता चुपहोकर

वैठरहा और अपने बड़े बेटे ईश्वरीदत्तको पांचसौरुपये देकर घर बिदाकिया घरपर गहना वस्त्रबरतन सबपहलेसे मौजूद था घरपर पहुंचकर चावलघी गेहूं मसाला नमक और वस्तु ईश्वरीदत्तने मोललो ब्याहकीतैयारी होनेलगी माताका इरा- दाथा कि सरस्वती की बड़ीबहिनसे वह चढ़कर दहेज मिले जोड़े भी इसकेभारी हों गहनेके अददभी अधिक हों बरतन भी दहेजके गट्ठे २ दियेजांय सरस्वती तो उसीघर में रहती थी जो बातहोती उसकोअवश्य मालूमहोजाती जबसरस्वती ने सुनाकि मुझकोदीदीसे अधिकदहेज मिलनेवालाहै अज्ञानी लड़कीहोती तो प्रसन्नहोती पर सरस्वतीको दुःख हुआ और इसचिन्तामें हुई कि किस प्रकारसे माताको मना करूं अन्त को जयजयवन्ती अपनी मौसेरी बहिनसे खिसियाते २ कहा कि मैंने ऐसा २ सुना है मुझको इसकाबड़ासोच लगाहै कई दिनसे बड़ी चिन्तामें थी कि परमेश्वर क्या करूं अच्छा हुआ तुमआगई हमजोलीके कारण तुमसे कहती हूं संकोच नहीं कोईअम्मा को इतनी बात समझादे कि मुझको दीदीसेअधिक दहेजनदें जयजयवन्तीने सुनकर कहातुमतो कोईतमाशे की स्त्रीहो वही कहावत है गधेको लोनदिया उसने कहा मेरी आंखें दुखती हैं भगवान दिलवाता है तुम क्यों इनकार करो सरस्वतीने कहा तुमदीवानी हो इसमें कईबुराइयांहैं दीदीके स्वभावसे तुमवाक़िफहो उनकोजरूर रंजहोगा नाहकमातासे बदमजगी होगी मुझसे भी उनको बदगुमानी होगी जयजय वन्तीनेकहा बुवाइसमें रंजकी क्या बातहै अपना २ भाग्य है और समझनेको तरह२की बातेंहैं बादशाहीके उनको क्या २ नहीं दियागया उसकी कसरइधर समझलें सरस्वती ने कहा सचहै परंतु नामतो दहेजकाहै कि छोटेको अधिक मिलेगा तो बड़ेको रंजहोगा एक महल्लेका रहना रोजका मिलना मिलाना जिसबातसे दिलोंमें फर्कपड़ क्यों होजाय जयजयवन्ती ने कहा बहिननाहक तुमअपनी हानि करतीहो अभी महीने दो महीनेमें सबभूल बिसरजायंगी सरस्वतीनेकहा। अरीबहिन

भगवान२ करो हानि लाभ कैसा कहीं माता पिताके देनेसे पूरी पड़तीहै या दहेजसे जन्मकटताहै परमेश्वर अपनी कृपासे दे तुम इसबातमें हठमत करो नहीं मैं कुछ दूसरा यत्न करूं मुझकोकिसी प्रकार मंजूर नहीं है गरज़ कि थोड़े अरसे में सरस्वतीकी माताके कानतक यहबात पहुंचगई और वह भी कुछसोच समझ अपनेइरादे से बाज़ रही और मनमें कहने लगी देनेके सौहबहैं दूसरीजगह समझलूंगी गरज़कि फागुन सुदी दशमीको व्याहहोगया ईश्वरीदत्त अकेलेने अच्छे विधि बहिनका व्याहकिया और बराती सबराज़ी और प्रसन्नरहे जबसरस्वतीके बिदाका समयपहुंचा सबपर सदसाथा माता तो सरस्वतीके वियोगसे बेसुधि होगई थी बिरादरी की बहू बेटियोंकी यहदशाथी कि सरस्वतीको गले लगा२ कररोती थीं और सबकेमनसे आशीर्बाद निकलताथा सरस्वतीइनसब आशीर्वादोंका बड़ाभारी दहेजलेकर ससुरालमें पहुंची स-सुरालकी जो रीति वरस्मथी वहससुरालमें हुई आगेचलकर तुमकोमालूम होगा कि सरस्वतीने गृहस्थीको किसबिधि से सम्हारकिया क्या मुश्किलें उसके आगेआई और उसनेअपनी बुद्धिसे क्योंकर उसको दफ़ा किया ज़रा सरस्वती के बरताव को परमेश्वरीके बरतावसेमिलाना चाहियेकि सरस्वती माता की दूसरी बेटी और सासकी दूसरी बहू थी दोनों ओर की अर्थात परमेश्वरीके व्याह में निकलचुके थे परमेश्वरी सोलह वर्षकी व्याहीगई थी और सरस्वती व्याहके समय पूरे तेरह वर्षकी न थी जब परमेश्वरीका व्याहहुआ उसकादूलह पर-मेश्वरीदत्त दशरुपये का नौकर था और सरस्वती का दूलह अम्बिकादत्त अभीपढ़ताथा अम्बिकादत्त परमेश्वरीदत्त के ब-निस्बत कमदूल्ह सालअक्षलथा परमेश्वरीको दो वर्षतक बाल बच्चोंके बखेड़े से छुट्टीरही और सरस्वतीको परमेश्वरने व्याह के दूसरेवर्ष छोटोसी अवस्थामें माताबनादिया पर सरस्वती की दशा परमेश्वरीके सामने अच्छी न थी परन्तु सरस्वती को छुटपन से तालीमहुई थी रोज़ बरोज़ घर में बरकत विशेष

होतीजाती थी यहांतक कि परमेश्वरीका नामभी कोईनहीं जानता और कंधारी बाजारमें सरस्वती का वहमहलखड़ा है कि आकाश से बातें करता है सांधीटोले में वह ऊंचा मन्दिर जिसमें हौज व कुआं है सरस्वती का बनवाया हुआ है प्रयागमें एकधर्मशाला इसीसरस्वतीका बनवायाहुआ है जिसमें दोसौ अभ्यागत संन्यासीको भोजन मिलताहै काशी में एक पाठशाला संस्कृत की बनवाई है जिसमें विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र पुस्तक पाटी मिलतीहैं जबईश्वरीदत्त ने अपने बापको इत्तिलाकी कि परमेश्वरकी कृपासे विधिपूर्वकसरस्वतीका बिवाहहोगया तो बापने परमेश्वर का धन्यवादकिया परन्तु बेटी की जुदाईका रंज बहुतदिन तक रहा सरस्वती के ब्याह होने पीछे उसके पिता देवीदत्तने जो चिट्ठी उसको लिखी वह चिट्ठी भी देखने योग्य है॥

चिट्ठी देवीदत्त की॥

स्वस्ति श्री चिरंजीविनी बेटीसरस्वतीको देवीदत्तका आशीर्वाद तुम्हारेभाई ईश्वरीदत्तकी चिट्ठीसे समाचार तुम्हारेबिदा होनेका मालूमहुआ वर्षों से यह अभिलाषा मेरेहृदयमेंथी कि यह काम मैं अपनेहाथ से करूं परन्तु हाकिम ने छुट्टी नदी इस वजहसे लाचारहुआ यहबात तुमको मालूमहोगी कि सबबच्चों से अधिक मुझको तुमसेप्रीतिहै यह प्रीति इस कारणसे थी कि तुमने अपनीसेवा और टहलसे आपमेरेऔर सबकेजीमें जगह करलीथी आठवर्षके सिनमें तुमने मेरेघरका कुलबोझा अपनेशिरपर उठारक्खा था मुझको सदा यहबात प्रगटहोती रही कि तुम्हारेसबबसे तुम्हारी माताको बड़ीनिश्चिन्ती और सुखप्राप्त था जबकभी इसअर्सेमें मुझको घरजाने का संयोगहुआ तुम्हारा बन्दोबस्त देखकर सदामेराजी प्रसन्नहुआ अब तुम्हारेबिदा होजानेसे ऐसीहानिहुई किउस का बदला शायद इसजन्म में नहींमिलसक्ता परमेश्वर तुमको इसका अच्छा फल देवे और उस सेवा करने के बदले में तुम पर मेरे आशीर्वादों का प्रभाव प्रगटहो ईश्वरीदत्त की

चिट्ठी से मुझको यह भी मालूम हुआ कि तुमने परमेश्वरी से अधिक दहेज नहीं लेनाचाहा इस्से तुम्हारी बड़ी आली हिम्मती साबित होती है मैं उसका बदला भेजता हूं वह यह चिट्ठी है इसको तुम दस्तूरुल्अमल के समान अपने पास रक्खो इन शिक्षों पर साधना करो कि जो इस चिट्ठी में लिखीहैं तो हरएक क्लेश तुम पर सहजहोगा और सदासुख से टेर करोगी समझना चाहिये कि ब्याह क्या चीजहै ब्याह सिर्फ़ यही बात नहीं है कि रंगीन कपड़े पहने और मेह-मान जमाहुये और वस्त्र और भूषण दान दहेज पाया बल्कि ब्याहसे नई सृष्टिहोतीहै नये लोगों से मामिला करना नये घरमें रहना पड़ताहै जिसप्रकार पहले पहल बछड़ों पर जुआ रक्खा जाताहै आदमी के बछड़ों का जुआ ब्याह है ब्याहके पीछे लड़की जोरू बनती लड़का खसम बना इसके यही अर्थ हैं कि दोनोंको पकड़कर संसाररूपी गाड़ीमें जोतदिया अब यह गाड़ी मरने तक इनको खींचनी पड़ेगी पस बेहतर है कि मनको दृढ़करके भारी बोझको उठावैं और जन्मके दिन जितनेहों इज्ज़त आबरू बनाव मेलसे काट दियेजांय वरना लड़ाई भिड़ाई झगड़े बखेड़े गुलगपाड़ा से संसारकी मुसीबत और भी अधिक क्लेश देने वाली होती है अब तुमको अय मेरी दुलारी बेटी सोचना चाहिये कि स्त्री पुरुषमें परमेश्वर ने कितना अन्तर रक्खा है स्त्री को परमेश्वर ने अवश्य पुरुषके आनन्द के हेतु उत्पन्न कियाहै स्त्री को चाहिये कि पुरुष को प्रसन्न रखना अफ़सोस है कि संसारमें कैसी कम स्त्रियां इस फर्जको पूरा करती हैं मर्दों का दर्जा परमेश्वर ने स्त्रियों पर ज्यादा किया न सिर्फ़ ज़बानी हुक्म देनेसे बल्कि मर्दों के शरीर में अधिक बल और उनकी बुद्धि में अधिक प्रकाश है संसारका बंदोबस्त पुरुषों के ज्ञातसे होता है पुरुष कमाने वाले और स्त्रियां उनकी कमाईको अच्छे प्रकारसे बर्तनेवाली और उसकी निगहबान है कुनबा समान नौका के है और पुरुष उसके मल्लाह हैं अगर मल्लाह न होतो नौका पानीकी

लहरोंमें डूबजायगी या किसी किनारेपर टक्कर खाकर फट पड़े कुनबा में अगर पुरुष वंदोवस्त करनेवाला नहीं तो उसमें अनेक प्रकारकी खराबियां पड़सक्ती हैं कभी नहीं ख्याल करना चाहिये कि संसार में सुख और धन सम्पति से प्राप्त होता है अगर्चि इसमें भी संदेह नहीं है कि दौलत अकसर सुखका कारणहोती है परंतु बहुत बड़े ऊंचे घरोंमें भी लड़ाई और झगड़े हम अधिक पातेहैं पस गृहस्थी में सुख केवल हेलमेल से होता है ग़रीब आदमियों को हम देखते हैं जिनकी आमदनी बहुत थोड़ी है दिनको मेहनत मजदूरीसे जीविका पैदा करते हैं रात को सब मिलकर दाल रोटी से अपना २ पेट भरलेते और एक दूसरे के साथ खुश रहते हैं निःसंदेह ये लोग आपस के मेल जोल के कारण दाल रोटी और गाढ़े धोतर में अधिक सुखसे रहते हैं बनिस्बत उन राजों और रानियोंसे जो रात दिनकी लड़ाई झगड़े में क्रोध से रहतेहैं अयमेरीप्यारी बेटी मेलमिलाप को गनीमत जानो अबदेखना चाहिये कि हेलमेल किन बातोंसे पैदा होता है सो न सिर्फ़ इसबात से कि स्त्री अपने पति से प्रेमकरे वल्कि प्रेमकेसिवाय उसको पतिकाअदब भी करना अवश्य है बड़ी नासमझी है जो स्त्रीपतिको अपने समान समझें इस समय में स्त्रियोंने ऐसाबुरा दस्तूर अंगीकारकिया है कि जिसवक्तचन्द सहेलीआपसमें बैठकरबातेंकरतीहैं तोबहुधा यहबात होती है कि फ़लानीकापति उसकेसाथ इसप्रकारका बरतावरखता है एक कहतीहै किमैंने यहांतक उनको दबायाहै कि क्या ताक़तजो मेरी बातको काटैं और उलट कर उत्तर दें दूसरी बड़ाई मारती है जब तक घड़ियों चिरौरी न करें मैं खाना नहीं खाती तीसरी यह कहती हैं दशबार पूछते हैं तब मैं एक उत्तर मुशकिल से देतीहूं चौथी डींगको लेती है वह आप पहरों नीचे बैठे रहें परन्तु बन्दी को पलंग से उतरना सौगन्ध है पांचवीं कहती है की जो मेरी ज़बान से निकलता है उसको पराकराकर रहती हूं शादी ब्याह में दोने

टाटके भी इसी हेतु से निकलते हैं कि मियां ताबेदार रहें कहीं तो जूतीपरका काजलपारकर मियांके लगाया जाता है इसका प्रयोजन यह है कि जन्मभर जूतियां खातारहै और चूं न करे कहीं नह। लेवल अंगूठे के तले वोड़ा रक्खाजाता है और मियांको खिलाया जाता है कि पैरोंपड़तारहै इनबातों से साफ़ प्रगट है कि स्त्रियां पुरुषों को दबाने और अख्तियार कमकरनेपर रहती हैं लेकिन यह तालीम बहुत बुरी है इसका नतीजा बहुधा अच्छा नहीं होता पुरुषों को परमेश्वरने सिंह बनादिया है अगर दबाव और ज़बरदस्तीसे कोई स्त्री इनको बस किया चाहे तो मुश्किल नहीं बहुत सहज उपाय इनको बसमें करने का खुशामद व ताबेदारी है जो ना समझ स्त्री अपना दबाव डालकर पुरुष को बस करना चाहती हैं वह धोखाखाती है और आदि से बीज बिरोधका बोती हैं और फल उसका अवश्यक्लेश और दुःखहोगा गोकि वह इसबात को अभी नहीं समझती सरस्वती मेरीसलाह यह है कि तुम बातचीत उठने बैठनेमें भी अपने पतिका अदब और लिहाज रखना क्या सबब है कि शादी ब्याह इन्हीं चाहोंसे होता है और चार दिन पीछे बहू से सास नन्दों का बिगाड़ शुरू होजाता है यह बात भी शोचनेके योग्य है ब्याहके पहले लड़का मा बापमें रहा और सिर्फ़ उन्हींके साथ उसको वास्ताथा मा बापने उसको पाला और यह अभिलाष करतेरहे कि बुढ़ापेमें हमारे काम आवैगा ब्याहके पीछे बहू डोलीसे उतरतेही शोच करने लगती है कि मियां आजही मा बापको छोड़ दें इसलिये लड़ाई सदा बहुओं के तर्फ़से शुरूहोती है अगर बहू कुनबे में मिलकर रहे और कभी सासको यह न मालूम हो कि यह बेटेको हमसे छुड़ाना चाहती है तो कदाचित् झगड़ा न पैदाहो यहतो सबकोई जानते हैं कि ब्याहकेपीछे मा बापसे वास्ता थोड़ेदिनका है आखिर घर अलग होगा स्त्री पुरुष न्यारे होकर रहेंगे संसार में यही होता आया है परन्तु नहीं मालूम कम बख़ बहुओं को कहां की बेसबरी

होती है कि जो कुछ होना हो इसी समय होजाय बहुओं में एक ऐब चुगली का होता है जिससे ज्यादा झगड़ा होता है वो यह है कि ससुराल की तनिक २ बात आकर मा से कहा करती हैं और मायें आप खोद २ कर पूंछा करती हैं परन्तु इस कहने और पूंछने से सिवाय इसके कि लड़ाइयां पड़ें और झगड़े खड़े हों कुछ प्राप्त नहीं होता बाज़ बहू इस प्रकार की होती हैं कि ससुराल का कैसा ही अच्छा खाना और कैसा ही अच्छा कपड़ा न उनको मिले पर उनकी आंख तले नहीं आता ऐसी बातों से पति के चित्त को दुःख होता है सरस्वती इस से तुमको बहुत बचाव चाहिये और ससुराल के हरएक वस्तु का आदर करना चाहिये और तुमको सदा भोजन करके वस्त्र पहिन कर के खुशी ज़ाहिर करना चाहिये जिससे मालूम हो कि तुमने पसन्द किया ससुराल में नई दुलहिन को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बेदिली से वहां न रहे अगर्चे जान पहचान न होने के सबब से अलबत्ता दूसरे लोगों में जी नहीं लगता है परंतु जी को समझाना चाहिये न यह कि रोती गई वहां रही तो रोती रही जाने में देर नहीं हुई कि मैके जाने का तक़ाज़ा शुरू हुआ बातचीत में दर्जा औसत का खयाल रखना चाहिये यानी न इतना कि खुद आपही आप बकती रहे न इतना कि बिलकुल चुपचाप होजावे बहुत बकने का अंजाम दुःख होता है जब रात दिन हज़ारों प्रकार की चर्चा होगी नहीं मालूम किस ज़िकिर में क्या बात मुंह से निकल जाय व इतनी कमगोई भी न चाहिये कि बोलने के वास्ते लोग खुशामद करें ज़िद व हठ किसी बात पर नहीं चाहिये जो बात तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ़ भी हो उसे उठा रक्खो कि वह दूसरे समय बतौर मुनासिब तै होसक्ती है फ़र्मा-यश किसी चीज़ की नहीं करना चाहिये फ़र्मायश करने से आदमी नज़रों से उतर जाता है और उसकी बात हेठी हो-जाती है जो काम सास नन्दें करती हैं तुमको अपने हाथों से करने में आर न करना चाहिये छोटे पर कृपा बड़ों का अदब

हर एक के मनको प्यारे लगने का बड़ा सुघर यत्न है अपना कोई काम दूसरों के सिर नहीं रखना चाहिये और अपनी कोई वस्तु बेखबरी से न पड़ी रखनी चाहिये कि दूसरे उसको उठालेंगे जब दो मनुष्य चुपके २ बातें करें उन से अलग होजाना चाहिये पर इसकी चिन्ताभी मतकरो कि यह आपस में क्या कहते थे और अदबदाय यह भी मतसमझो कि कुछ हमाराही चर्चा था अपना सुभाभिला आदमी से अदबलिहाजके साथ रक्खो जिनलोगों में बहुत ज्यादा मिलाप और व्यौहार होजाता है उसी प्रकार उसमें रंज भी जल्द होने लगताहै मैं जानताहूं कि तुम दिनरात में बे प्रयोजनभी इस चिट्ठीको कमसेकमएकबेर पढ़लियाकरो कि उसका मतलब याद रहे बाप की चिट्ठी पाकर सरस्वती के जीमें एक ऐसी उमग प्रीतिकी उठी कि बे अखतियार रोनेको जीचाहा परन्तु नईव्याहीहुईथी ससुरालमें रो नसकी और बापकी चिट्ठी नेत्रोंसे लगाकर यत्नसे पुस्तक में धरली और नित्य उसचिट्ठी को पढ़ा करती और अर्थ पर चिन्तवन किया करती जबतक सरस्वती बे व्याही हुई रही तो उसकाजी बहुत घबराताथा इसलिये कि अचानक माताका भवन छोड़नये आश्रम और नये मनुष्यों में रहनापड़ा यह तोकाम काज करने में अति चतुर और बुद्धिमानथी और बे काम काजके इसको एकघड़ी चैन न थी या महीनों कोठरी में चुप चाप बैठना पड़ा माता पिता के घर में जो इत्यादे प्राप्त थे वह बाक़ी नहीं रहे यहां ससुराल में आतेही इसकी सब बातों को लोग देखने और ताड़ने लगे कोई मुंह देखताहै कोई चोटी की लम्बान नापता है कोई डील के उठान को ताड़ताहै कोई गहना टटोलता है कोई बस्त्र देखताहै खाती है तो कौर पर नजर है कि कौर कितना बड़ालिया मुंह कितनाखोला क्योंकर चबाया किसप्रकार निगला उठती है तो देखते हैं कि दुपट्टा किस बिधि ओढ़ा चलती किस प्रकारसे है सोती तो समयपर नजर है किसवक्त सोई और कब उठी अर्थात सब हर्कात इसकी न-

जरके सामने थीं ऐसे हालमें सरस्वतीको बहुतक्लेश होताथा परन्तु यह बहुत बुद्धिमान और चतुर थी ऐसी कड़ी परीक्षा मेंभी पूरी निकली और सब बातें इसकी ससुराल वालों को भाईं बातकी तो न इतनी विशेष कि लोगकहैं कैसी लड़की है चारदिन की ब्याहीने किस बलाकी बकर लगा रक्खी है न बचन इतने कम कहे कि लोग कहें अहंकार है भोजन किया तो न इतना अधिक कि टोलेमहल्ले में चर्चाहोन ऐसा कम कि सास ननदकोफिर थकाकार बैठरहे सोई तो न इतना सवेरे कि दीपक में बत्ती पड़ी पलंगपर चढ़ी और न इतनी देरतक कि लोग कहें कि पुरुषों कोभी इसने मात कियाहै सदाकी यह रीति है कि नई दुलहिनको महल्ले की लड़कियां घेरे रहाकरती हैं सरस्वतीके पासभी जब देखो दशपांच मौ-जूद हैं परन्तु सरस्वतीने किसूसे खुसलियत पैदा न की अगर कोई लड़की दिनभर बैठी रहगई तो यह न कहना कि अपने घरजाओ अगर कोई न आई तो उससे यह न पूंछा कि तुम कहां थी क्योंनहीं आई सरस्वती के इस प्रकार की भेट मि-लापसे धीरे२ लड़कियोंका जमघटा होना कमहोगया बहुधा महल्ले की कमीनों की लड़कियां तो चाट की आशनाहुई थीं जब उन्होंने देखा कि न तो पान मिलता है न कुछ सौदे सुलफ़ का ज़िकिर है तो छः सातदिन पीछे उन्हों ने आना जाना छोड़ दिया सरस्वती ने पहिले यमुना अपनी नन्द से प्रीति बढ़ाई यमुना लड़किनी थी थोड़ेही दिहमें चेरी होगई दिनभर सरस्वती के ढिग घुसी रहा करती थी बल्कि माता किसी समय कह भी उठती कि इस भावज पर इतनी दयाल क्योंहो बड़ी भावजके तोतुम सायासे भागतीफिरतीथी यमुना इसका उत्तर देती वहतो हमको मारती थी हमारी छोटी भावजहमको प्यारकरती हैं यमुनाके मेलसे सरस्वतीने अपना अच्छे प्रकारसे कार्यनिकाला पहले तो सबघरका हालबल्कि तमामकुनबे और महल्ले का हालयमुनासे पूंछ२ करमालूम किया और भोजन आदिमें लाज और संकोचसे आप नहीं

कहसकीथी यमुनाके वसीले कहा करती थी सरस्वती ने घरके
काममें सहज२ इसप्रकार दखलदेना आरम्भकिया कि सांझ
समय यमुनासे रुई मंगाकर दीपककी बत्तियां बटदिया क-
रती तरकारी बनालेती यमुना का फटा उधड़ा कपड़ा सीं
देतीसास और स्वामीके लिये पान बना देती धीरे २ रसोई
तक जाती और लक्ष्मी मिश्रायनको छौंक बघारमें सलाह देने
लगी यहां तककि सरस्वतीके रायपर रसोई बननेलगी जब से
सरस्वती ने रसोईं में दखल देना आरम्भ किया घर वालों ने
जानाकि रसोईभी कोई पदार्थहैफिरतो यहहाल होगयाकि
जिसदिन सरस्वती किसीकारण सेलक्ष्मी मिश्रायन कोसलाह
कार न होती तोभोजन मेंस्वाद किसीको मालूमनहींहोता
सास बहुओंकी लड़ाईकुछ मामूली बातहै सरस्वती यों लड़ने
के योग्य न थी तोउसका गुणविरुद्ध काकारण हुआलक्ष्मीमि-
श्रायनइस घरमें अगुआकारथी किसब कार्योंकाभार उसपर
थासौदासुलफ़कपड़ा अनाजजोकुछबाजार सेआतासबलक्ष्मी
मिश्रायन के हाथोंआता गहना तकबनवाकर लाती ऋणकी
जोजरूरत होतीतो लक्ष्मी मिश्रायनके आढ़तसे आता गरज
कि लक्ष्मी मिश्रायन पुरुषों के प्रकार इस घर का बन्दोबस्त
करतीथी जब सरस्वती ने रसोईमें दखलदिया लक्ष्मी मिश्रा-
यनका यत्नसे द्रव्यदेना जाहिरहोने लगा एकदिन उरद की
पिट्ठीके बड़े बनरहेथे और सरस्वती रसोईमें बैठीहुई लक्ष्मी
मिश्रायनको बताती जाती थी जब बड़े बनचुके और दहीमें
उसको डालनाचाहा पर जोदही हंडियामें रक्खाथा उसको
सरस्वती ने देखातो वह बिगड़गया था इस कारण कि कई
दिनका बासीथा नीलापानी अलग और दही की फुटकियां
अलग होगईथी सरस्वतीनेकहा अयहयह कैसाबुरा दही
हैयह दही बड़ों में डालनेके योग्यनहीं मिश्रायन बेगजाओ
दोआने का दही बाजारसे लेआओ लक्ष्मीमिश्रायनने कहा
दुलहिन पावभर पीठीके बड़ोंमें दोआनेका दहीवहीमसल
है कि ऊंटकेमुंहमें जीरा यहदही जो तुमने नापसन्द किया

चार आनेका है सरस्वती बोली कि हमारेघर प्रतिदिन दही केवड़े पकते रहाकरतेथे पावभर पीठीके बड़ोंमें एकआने का दहीपड़ताथा इस लेखेसेतो मैंने एकआनेका अधिकमंगाया लच्छी मिश्रायनने कहा तुम अपनेमहल्ले का हिसाब किताब अलग रहनेदो भलाकहां कंधारीबाजार कहां रानी कटरा जो वस्तु रानी कटरेमें एकपैसेको मिलती है वह यहां एक आनेकोभी नहीं मिलती यहखाक धूलमिला मुहल्लातोउजड़ नगरी सूनादेशहै सदा सब वस्तुका तोड़ाहरचीजका काल रहता है जोकि खानेमें देर होती थी सरस्वती यह सुनकर चुपहोरही और मिश्रायनसे कहा अच्छा जितनेको मिलता है जल्दलावो परंतु सरस्वतीऐसीभोली नथी कि मिश्रायनकी बातको सत्य समझती अपने मनमें कहनेलगी अवश्यदालमें कुछ कालाहै दमड़ीछदामका फर्कहो तोहो परंतु यहगजब है कि एकनगरके दोमहल्ले में दुगुने चौगुनेका फर्कहो उस समयसे सरस्वती भी ताकमेंहुई दूसरेदिन लच्छी पानलाईतो सरस्वतीने देखकर कहा कि मिश्रायन तुमतो बिलकुल हरे पत्ते उठालाईहो इसमेंनकुछ स्वादमिलताहै न लज्जतमिलती है अबजाड़ेकी अवाई है करारे पक्के २ पान ढूंढकर लाया करो मिश्रायन बोली पक्के पान तो पैसे के दो आते हैं और यहां परमेश्वर रक्खे आधी ढोली रोज का खर्च है इस वास्ते मैं नये पानलातीहूं इतनेमें सरस्वतीके घरसे रामकली मिश्रायन सरस्वतीकी खबरलेनेको आई सरस्वतीने अपने मैके की मिश्रायन से पूंछा क्यों मिश्रायन आज कल तुमको कैसे पानमिलतेहैं रामकलीने कहा पैसेके सोलह सरस्वतीने संदू-कचा खोल दो पैसे उसकेहाथ दिये और कहा कि इसीमहल्ले के पनवाड़ीसे दो पैसेके पान लेआओ रामकलीमिश्रायनबड़े२ पक्के चालीसपान लेआई सरस्वतीने कहा यहां रानीकटरे के बनिस्बत भी पैसेपीछे चारपान अधिक मिले रामकली मि-श्रायन ने कहा बेटी यह महल्ला शहरका फाटक है अनाज, पान, घी, दही, यहसब वस्तु दूसरे महल्ले में सस्ती मिलती हैं

पुराने पान चालीस मिले अगर नये लेती तो अस्सी मिलते सरस्वतीने कहा। यह लक्ष्मी मिश्रायन तो सब वस्तु में यों ही आग लगाती है रामकली तुम दो चार दिन यहां रहो। मैं अम्मा से कहला भेजूंगी वहां का काम दो चार दिन के लिये और कोई देख भाल लेगा रामकली ने कहा। बेटी मैं हाजिर हूं परमेश्वर न करे क्या यहां वहां दो२ घर हैं अर्थात् चारदिन रामकली के हाथों सब प्रकारका सौदा बाजारसे आया हर चीजमें लक्ष्मी मिश्रायन की चोरी साबितहुई परन्तु यहसब बातें इसप्रकारसे हुई कि सरस्वती की सासको खबरतक न हुई सरस्वतीने जाना या रामकली वा लक्ष्मी ने इसहेत की सरस्वती बहुत सुशील स्वभाव और संकोच की स्त्री थी उसने समझा कि इसबुढ़िया मिश्रायनको बदनाम औररुसवा करनेसे क्या प्रयोजन रातकेसमय भोजनसे सावकाश पा कोठे पर सरस्वती पान खारही थी रामकली मिश्रायन भी पास बैठीहुई थी इतने में लक्ष्मी मिश्रायन आई रामकलीने कहा क्यों लक्ष्मी यह क्या माजराहै चोरीकौन नौकरनहीं करता देखो यह घरवाली मौजूद हैं सातवर्ष तक बराबर इनकी सेवाकी घरकाकारोबार यहसब उठायेहुयेथीं परमेश्वररक्खे अमीरके घर अमीरी खर्च हजारों रुपयेकासौदा इन्हो हाथों सेआयाहक़दस्तूरी यह क्योंकर कहूं कि नहींलियाइतनालेन तो हम नौकरों का धर्महै चाहेभगवानबख्शे चाहेमारेपरंतु इससेअधिक पचनहीं सक्ता इससे बढ़कर लेना तो नमकहरामीहै लक्ष्मीनेकहा।मेराहाल कौननहींजानताअबमेरीबला छिपावे हां मैं तो चुराती और लूटती हूं परन्तु न आजसे बल्कि सदामेरा यही कामहै तनिक मेरे हालपरभी तो निगाहकरो कि इसघरमें किस बलाका काम है भीतर बाहर मैं अकेली आदमी चार नौकरों का काममेरे अकेले दमपर पड़ता है फिर बीबी कोई अपनी हड्डियां यों नहीं तोड़ता पण्डिताइन कईबेर मुझको मौकूफ़भी करचुकीहैं फिर अन्त मुझीको बुलाया समझका फेरहै किसीने यों समझा किसी

ने यों समझा चारके बदले में अकेली हूं चार की तनख़्वाह की मुझ अकेली को मिलना चाहिये और वृत्तान्त इस लच्छी मिश्रायन का इसप्रकारपर है कि यह औरत पच्चीस वर्ष से इसघरमेंहै और सदालूटनेपर उतारूथी एकदिनकी बातहो छिपछिपाजाय नित्य इसका छलछिद्र प्रगटहुआ करताथा कई बार निकालीगई जब मौकूफ़ हुई बनिये बजाज सुनार कुंजड़े जिन २ से इसके मारफ़त उचापत उठतीथी तक़ाज़ा को आ मौजूदहोते थे इसडरके मारे फिर बुलाईजाती थी यों चोरी और सरज़ोरी लच्छी मिश्रायन के कर्म्में लिखी थी चिताकर लेती और बताकर चुराती और छिपाकर मुकरजाती घरमें आमदनी कमस्वभाव बिगड़ाहुआ खानेमें इसृतियाज़ कपड़े में तकल्लुफ़ सब कारखाना उधार परथा और आढ़तलच्छी मिश्रायनके डीलसेथी खुले खज़ाना कहती थी कि मेरा निकलना कुछ सहज नहीं है घरको नीलाम कराकर निकलोंगी ईंटसे ईंट बजवाकर जाऊंगी सरस्वती ने जो हिसाबकिताबमें रोकटोंक शुरूअकी तो लच्छी मिश्रायन सरस्वती की बैरिन होगई और इस यत में हुई कि सरस्वती को अम्बिकादत्त और उसकी माता से बुराबनाये परंतु सरस्वती इस भेद से बेख़बर थी बल्कि सरस्वती ने जब देखा कि मिश्रायन इस घरकी मुख़तार है यह अपने स्वभाव को न छोड़ेगी तो जीमें कहा फिर नाहक की झक २ से क्या प्रयोजन इसलिये रसोईमें जाना और खानेमें दखल देनासरस्वतीने छोड़दिया घर वालोंको तो सरस्वतीके हाथकी चाटलगगईथीपहलेही दिनसे मुंह बनानेलगे कोई कहता अयहय तरकारी मुंह में कचर२होतीहै कोईकहता दालमें नमकज़हर होगया ज़बान पर नहीं रक्खी जाती परन्तु सरस्वती से कौन कह सक्ताथा कि तुम रसोई बनाओ लाचार जैसा बुराभला मिश्रायन भोजन बनाकर रखदेती वही खाना पड़ताथा एकदिन बरसात के मौसममें बादल घिराहुआ था नन्हीं२ फुहार पड़रहीथीं ठंढीहवाचल रहीथी अम्बिकादत्तने कहा आज तो कढ़ीको

जी चाहता है परंतु इसशर्त से कि वे पकाने का बंदोबस्त करें सरस्वती ऊपर कोठे के रहा करतीथी उसको खबर नहीं की पतिने कढ़ीकी फ़र्मायश की है घी बेसन दही आदि सामान मिश्रायन लेआई और अम्बिकादत्त से कहा सब सौदा तो मैं ले आई जाऊं बहूजीको बुलालाऊं कोठे पर गई सरस्वती से कढ़ीका कुछ जिक्र नहीं किया और उसीतरह उलटे पाओं उतरआई और कहा बहू कहती हैं कि मेरे शिरमें दर्द है लक्ष्मी मिश्रायनसे मामूली भोजन तो पकनहीं सकाथा कढ़ी क्या खाक पकाती सब चीज़ोंको सत्या नाश मिलाकर रख दिया किसखाहिश से अम्बिका दत्तने फ़र्मायश की थी परन्तु बदमज़ा कढ़ी खाकर बहुत उदासहुआ अटारी परगया तो घरवाली को देखा कि अपना डुपट्टासी रही है जीमें नाखुश हुआ कि ऐं सीने को शिरमें दर्द नहीं और कढ़ी को कहा तो दर्द शिरका बहाना करदिया पहली नाखुशी अम्बिका दत्तको सरस्वती से यही हुई और दस्तूर है कि मियां बीबियों में बिगाड़ इसीप्रकार की छोटीछोटी बातोंमें हुआ करता है सो कि छोटी उमरों में ब्याह हो जाता है इस से ज्ञान व बुद्धि न पुरुष में होतीहै न स्त्रीमें अगर जरासीबात भी खिलाफ़ मिजाजदेखी तो मियां अलगअकड़े बैठे हैं और बीबी अलग मुंह औंधाये लेटीहैं जब एक जगहका रहना सहना हुआ तो खिलाफ़ मिजाजके छोटी २ बातोंका ज्यादा होना क्या आश्चर्यहै यही छोटीबातें खिलाफ़ मिजाज धीरे२ आपस के मेल मिलापमें खलल डालती हैं और दोनों तर्फ़से लिहाज और पर्दा उठताजाताहै और तमाम उमरजूतियों दालबटती रहती है सबसे अच्छा यत्न यह है कि जोरू खसम आदिही से अपना मुआमिला एक दूसरे के साथ साफ़ रक्खें और थोड़े विरुद्ध को भी प्रगट न होने दें क्योंकि यही छोटे२ विरुद्ध जमा होकर बड़े कारण झगड़ा और बिगाड़ के होजाते हैं विरुद्ध के प्रगट न होने देने का यह यत्न है कि जब कोई थोड़ी सी विरुद्ध की बात भी हुई उस को जी में न रक्खा

सुंहदर मुंह कहकर साफ़ कर लिया अगर अम्बिकादत्त में बुद्धि होती और वह इस यत्नको जानता होता तो उस बीबी से बतौर शिकायत पूछता कि क्योंजी ज़रासा काम तुमसे न होसका और दर्द सिरका झूठ बहाना कर दिया उसी समय दोचार बातोंमें सुआमिला साफ़होजाता और लक्ष्मी मिश्रायनकी चालाकी खुलजाती परंतु अम्बिकादत्त ने मुंह परतो मुहरलगाई और दिलमें शिकायतका दफ़तर लिखचला सरस्वतीको अम्बिकादत्तके गुम सुमरहनेसे खटकाहुआ और समझी कि परमेश्वर खैरकरै लड़ाईकी नींवपड़ती नज़रआती है सासकोदेखा तो उनको भी नाराज़ पाया आश्चर्यमें थीकि परमेश्वर यह क्याबात है अभी यहबात ते नहीं हुई कि लक्ष्मी मिश्रायनने एक और वार चलाया याने दिवाली का महीना निकट आया अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायन से कहा कि मकानमें बर्सरोज हुआ सफ़ेदी नहींहुई लालाछदामीलालसे से कहोकि जिसप्रकार होसके कहींसे पचास रुपयेदे दिवाली का खर्चा सिरपर चला आताहै मिश्रायन बोली कि छोटीबहू अपने मैके जायंगी मैंने सुना है कि तहसीलदार भी आनेवाले हैं दोनों बेटियोंको बुलावेंगे और मैंने एकजगह यहभी सुना है कि छोटी बहूका इरादा है कि अपनेबापके साथ पहाड़पर चलीजांय बहू जांयगी तो छोटी साहबज़ादी भी जांयगीफिर बीबी तुम्हारा अकेला दम है मकान में सफ़ेदी होकर क्या करेगी छदामीलाल कमबख़्त तो ऐसा बेशील होगया है कि नित्य उसका ब्राह्मण तक़ाज़े को खड़ा रहता है वह उधार क्योंकर देगा अम्बिकादत्तकी माता यह सुनकर सर्द होगई और सर्द होनेकी बात थी मियांतो जिसदिनसे आगरे गये फिरकरघरकी शकल न देखीछठे महीने बरसवें दिनजीमेंआ-गयातो कुछ भेजदिया वरना कुछ प्रयोजन नहीं परमेश्वरीदत्त मातासेअलग हो होचुकाथा सिर्फ़ अम्बिकादत्तकादमघरमेंथा इसकेपीछे घरसूना था अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसेपूछा अरी सच बताइयो बाहर जायगी मिश्रायन बोली जाने नजाने

की तो परमेश्वर जाने जो सुनाया सो कहदिया अम्बिकादत्त की माताने पूछा अरीकमबख्त किससेसुना किसबिधि मालूम हुआलक्ष्मी बोली सुननेकी जो पूछोतो रामकली से मैंने दो रुपये उधार मांगे थे उसने कहा मैं देती तो जरूर परंतु पहाड़ पर जाने वाली हूं तब मैंने उससे सब हाल पूछा मालूम हुआ कि सब बात ठीक ठाकहो चुकी है बस इतनीदेर है कि जब तहसीलदार आवें उनके आयेपर चौथे पांचवेंदिन यह सबलोग रवाना होजांय और सुननेपर क्या है परमेश्वर को देखानहीं तो बुद्धिसे पहचाना है बीबी क्या तुमको बहूके रंगोंसे समझनहीं पड़ता देखोपहलेतो बहूघरका कामकाज भी देखती भालती थी अब तो अटारी परसे नीचे उतरना सौगन्ध है चिट्ठी पर चिट्ठी बापके नाम चली जातीहैं सिवाय जाने के ऐसी और कौन सी बात है अम्बिकादत्त की माता यह हाल सुनकर सन्नाटेमें रहगई इसी सोचमें बैठीथी कि अम्बिकादत्त बाहरसे आया उसको पास बुलाकर पूछा कि अम्बिकादत्त मैं एक बात तुझसे पूछती हूं सच २ बतायेगा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा भला ऐसी कौन बात है जो तुमसे छिपाऊंगा अम्बिकादत्त की माताने जो कुछ सिआयन से सुनाथा उससे कहा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध मुझको इसकी कुछखबर नहीं न मुझसे इसबात का चर्चा हुआ अम्बिकादत्तकी माता बोली चल झूठे मुझी से बातैं बनाता है इतनी बड़ी बात और तुझको खबर नहीं अम्बिकादत्त ने कहा तुमको बिश्वास नहीं होता तुम्हारे शिर की सौगन्ध मुझे खबरनहीं इतनेमें सिआयनभी आ निकली अम्बिकादत्त की माताने कहा क्योंरी लक्ष्मी अम्बिकादत्ततो कहता है मुझको मालूम नहीं सिआयन ने कहा लड़के तुम बुरा मानो या भला मानो तुम्हारी बीबी जाने की तैयारियां तो कर रही हैं तुमसे शायद छिपाती हो यें बड़ी बहू न हों कि उसके पेटमें बात नहींसमातीथी यह ऐसी है किकिसीको अपना भेद न दें अम्बिकादत्तकी माताने पूछा भला अम्बि-

कादत्त जो यह बात सच हो तो तुम्हारा क्या इरादा है अम्बिकादत्त ने कहा भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि तुम को अकेला छोड़कर चला जाऊंगा और उनकोभी क्याऐसी ज़बरदस्तीहै कि बेपूंछे गाछे चली जायंगी और मैं आनउनसे पूछोंगा क्योंजी यह कैसी बात अम्बिकादत्तकी मातानेकहा कि अभी इस लक्ष्मी के बातका क्याप्रमाण है बहूसे कुछ चर्चा मतकरो जब बात खुल जायगी तब देखाजायगा इसप्रकार की बातोंसे मिश्रायन सरस्वतीको सास और खसम से बुरा बनाने की फ़िकिर में थी और सरस्वती से अगर्चि किसी ने मुंहदरमुंह कुछ कहासुना नहींपरंतुवहभी इनसबकीसूरतसे समझगईथी कि कुछ नाराज़गीहै सरस्वती के पासयमुनाबड़ी गोयन्दाथीज़रासी बात सरस्वतीसेकहती और मिश्रायनकी बदज़ातीसबसरस्वतीपर खुलगईथी परंतु सरस्वती ऐसी बुद्धिहीनन थी कि तुरन्त बिगड़ बैठती वह इससोचमेंऊईकि इस मुआमिले में कुछ अपनीतरफ़ से कहना सुनना उचित नहीं आख़िर कभीं न कभी यहबात खुलेगी उससमय देखा जायगा लक्ष्मी मिश्रायनके शिरपर शामत तो सवार थी तीसरी बार सरस्वती पर उसने और सही किया छदामीलाल की तो आदत थी कि जब कहीं मिश्रायनको अपनेदूकानके सामने आतेजाते देखा तो अदबदाकर छेड़ता कि क्यों मिश्रायन हमारे हिसाबकिताब कीभी कुछफ़िकिरहै और आठवें सातवेंदिन घरपर तक़ाज़ा कहला भेजता एकदिन मुवाफ़िक मामूलके मिश्रायनसौदेसुलुफ़को बाजारजातीथीछदामीलाल ने टोका मिश्रायन बोली ऐ लाला यह क्यातुमने मुझसेआये दिनकी छेड़खानीलगाईहै जबमुझको देखतेहोतक़ाज़ा करते हो जिनको देतेहो उनसेमांगो उनपर तक़ाज़ाकरो मैंबेचारी ग़रीब आदमी टकेकी औक़ात मुझसे और महाजनों के लेनेदेनेसे क्या वास्ता छदामीलालने कहा यहबात तुमनेक्या कही कि मुझसे वास्ता नहीं दूकान से तो तुम लेजाती हो हाथको हाथ पहचानता है हमतो तुमको जानतेहैं और तु-

म्हारी साखपर देतेहैं हम घरवालोंको क्याजाने मिश्रायन ने कहा ऐलाला होयमें आओ ऐसेघरके भोले मेरीऐसी क्या हैसियत तुमने देखली मेरेपासनधन नदौलत और तुमनेसैकड़ों रुपया आंखबन्दकरके मुझको देदिया और अगर मुझको दिया तो जाओ मुझीसे लेभीलेना मेरे जो महल खड़े होंगे बिकवालेना मिश्रायन की ऐसी उखड़ी२ बातें सुनकरलाला छदामीलाल बहुत सिटपिटाया और मिश्रायनसे मिलावटकी बातें करनेलगा और कहा कि आज तो तुमकिसीसे लड़कर आई मालूम होतीहो बताओतो क्याबात है बीबीसाहब ने कुछ कहा या साहबजादी कुछखफाहुई यहांआओ इधरतो मिश्रायनसे यहकहा उधर दूकानपर जो लड़काबैठाथा एक पैसा उसकेहाथ दिया कि दौड़कर दो गिलौड़िया मसाला डलवाकर बनवाला जब मिश्रायन बैठगईतो छदामीलाल ने हंसकरपूछा तुम आज अवश्य किसी से लड़ीहो मिश्रायन ने कहा परमेश्वरनकरे क्योंलड़नेलगी बातपर बातमैंनेभी कहदी लालासच बातपर क्यों बुरामानतेहो छदामीलालनेकहा यहतो ठीकहै ब्यौहारतो मालिकके साथहै पर तुम्हारेहाथों से होताहै यानहीं नतुम्हारे नामरुक्का नचिट्ठी तुमने मालिक के नामसे जोमांगा सो दिया मिश्रायन ने कहा हायों रहो इससे कब मुकरती हूं जो लैगई हूं हजारों में कहदूं और लाखोंमें कहदूं और हमारी बीबीके भी रोयें २ से दुआ निकलतीहै बेचारीकभी तकरार नहींकरती छदामीलालबोला वाह हक़ीक़तमें वहबड़ी अमीरहैं और उनकी क्या बात है फिर छदामीलालने धीरेसे पूंछा छोटीबहू का क्या हाल है और कैसीहैं अपनीबड़ीबहिनके अंदाज़पर है याकिसप्रकार का मिजाजहै मिश्रायननेकहालालकुछ न पूंछो बेटी तो अमीरघरकीहै पर दिलकीबड़ी तंगहैदमड़ीकासौदाभीजबतक चारबेर फेरनले पसंदनहीं आता हांपरमेश्वररक्खे गुनवन्ती तो संसारकी बहूबेटियोंसेबढ़चढ़केहैं भोजनअच्छे पकाती हैं सीनेमें दर्जियोंको मातकिया है परंतु लालाअमीरीकी बात

नहीं पहिलेपहिल सुश्कपरभी टोकटोककी थी लालातुम तो जानतेहो मेराकाम कैसा बेलागहोता है अन्तको थक कर बैठरही और बड़ीबीबीतो बड़ी नेकहैं उन्हीके दम क़दमकी बरकतसे घर चलताहै हम ग़रीबभी उन्हींका दामन पकड़े हुयेहैं बहुतेरा हमारीबीबीको लोगों ने भड़काया परंतु परमेश्वर उनको सलामतरक्खे उनके दिलपर मैल न आया और किसी प्रकार बात उन्होंने मुंहपर नकहीछदामीलालनेकहा सुनाहै छोटी बहूको बड़ाभारी दहेजमिला मिश्रायन ने छूटतेहीकहा ख़ाकपत्थर बड़ीसे भी उतरताहुआ मिलाछदामी लालने कहा बड़ाआश्चर्य है कि इनकेब्याहके समयतो पण्डित देवीदत्त तहसीलदार थे बड़ीबेटी से अधिक देना उचित था मिश्रायननेकहा अयहय तहसीलदार काकुछ दोषनहींउस बेचारेनेतो बड़ीतैयारियांकी थीं यहीछोटी खोटी मुखबोली थी मातापिता के सुघरभलाई के मारे कहकर सबबस्तें कम कराईं छदामीलालने कहा अगर यहीहालहैतो बड़ी बहिन केप्रकारये भी अलग घर करेंगी मिश्रायन ने कहा अलगघर करनाकैसा यहतो बड़े गुल खिलायेगी बड़ीबहू बदमिज़ाज थी परंतु मनकीसाफ़ और ये मुंहकी मीठीमनकी खोटी कोई कैसाहीजान मारकरकामकरे इनकेख़ातिर तले नहींआता बातभी कहेंगीतोतहकीमुंहपरकुछजीमेंकुछनबाबानबाबायह स्त्री एकदिनभी निबाह करनेवाली नहींअबतो पहाड़परबाप के पास जाने की तैयारियां कर रही हैं छदामीलाल ने पूछा आगरेसे इनदिनों कोई चिट्ठीआई है मिश्रायनने कहा नित्य उसतरफ़ ध्यानलगा रहता है नजाने क्या वियोग कोई चिट्ठी नहींआई बीबीख़र्चकी राहदेख रहीहैं दीवाली सिरपर आ रहीहै बल्कि परसोंअतरसों कहतीथीं कि लालाछदामीलाल से पचास रुपये उधार लाना छदामी लाल उधार का नाम सुनकर चौंकपड़ा और कहा पहले रुपये की राहलगावैं तौ आगे देनेको क्याइनकारहै अबमेरे साझीनहीं मानते अपनी बीबीसे समझाकर कहदेना कि नहीं से बनपड़े रुपया अदा

करें वर्नी मुझपर कुछ दोष नहीं मिस्रायनने कहा तुम्हारा रुपया
परमेश्वरही निकलवायेगा तो निकलेगा हमारी बीबी कहां
सेदेंगी बाल२ तो कर्जदार होरही हैं मोदी अलग जान खाता
है बज़ाज जुदा गुल मचाता है लाला छदामीलालने कहा मुझ
को औरोंसे क्या वास्ता हमारे दूकानका हिसाबतो बेबाक
करनाही पड़ेगा मुझको तो तुम्हारे सरकार का बड़ा लिहाज़
है परंतु मेरा साझी गुरदयाल नहीं मानता वह जो यह वृत्तान्त
सुनपाये तो आज नालिश करदे मिस्रायन ने कहा यह सब
हाल बीबी से कहधरमें दूंगी परंतु घरका ज़रा ज़रा हाल मुझ
को मालूम है नालिश करो या फ़र्याद करो न रुपया है नदेने
की गुंजायश रुपया होता तो उधार क्यों लिया जाता इतनी
बातोंके पीछे मिस्रायन छदामीलालसे विदाहो सौदा सुलफ़
लेकर घरमें आई तो अम्बिकादत्तकी माताने पूछा मिस्रायन
तू बाज़ारजाती है तो ऐसी बेफ़िकिर होजाती है कि रसोंई
बनानेकी कुछ सुध नहीं रहती देखतो कितना दिन चढ़ा है
अब रसोंई किसवक्त बनेगी और कब भोजन मिलेगा मिस्रा-
यनने कहा बीबी मुये छदामीलालके झगड़ेमें इतनीदेर हो
गई वह जान हार नित्य मुझको आतेजाते टोका करता है
आजमैं जबगई और मैंने कहा क्या लालातूने मुझसे नित्यकी
यह क्या छेड़खानी लगाई है क्योंमरा जाता है तनिक ढाढस
रख आगरे से खर्च आनेदे तो तेरा अगला पिछला हिसाब
किताब बेबाकहो जायगा वह सुआतो मेरे शिरहोगया और
भरे बाज़ार में मुझको रुसवा करने लगा अम्बिकादत्त की
माताने कहा छदामीलालको क्या होगया है वहतो ऐसा नथा
आख़िर बर्षोंसे हमारा उसका लेनदेन है सबेरेभी दिया है
देरकोभी दिया है कभी उसने तकरार नहींकी मिस्रायन ने
कहा बीबी कोई और महाजन दूकानमें साझी हुआ है उस
मुयेने जल्दी मचारक्खी है जिसजिस पर लेनाथा सबसे खड़ेर
वसूलकर लिया जिसने नहीं दिया नालिश करदी छदामीलाल

ने कहा है कि मेरे तर्फ़ से बहुत २ हाथ जोड़कर कह देना

मेरा इसमें कुछ वश नहीं जिस विधि होसके दोचार दिनके रुपये की राह लगादें वर्ना गुरदयाल ज़रूर नालिश करदेगा इस खबरके सुननेसे अम्बिकादत्तकी माताको बहुतही शुबा फुलझारी इनकी छोटीबहिन चौकमें रहतीथी और वहकुछ धनवानथी अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसे कहाकि आगरे सेतो जवाब चिट्ठीतक का नहींआता खर्चका कौन भरोसा है अगरसचमच छदामीलालने नालिश करदीतो क्याहोगा मेरेपासतो इतना असबाबभी नहीं किबेंचकर अदाकरदूंगी और नालिशहोने पर देना भी बे इज्ज़तीहै सगरे नगरमें रुस-वाई होगी डोली लेआ मैं फुलझारी के पास जाऊं देखूं जा वहांकोई सूरत निकलआवे मिश्रायनबोलीबीबी नालिशतो ऊईरक्खीहै जिसने मुंहसे कहा उसे करते क्यादेर लगती है और फुलझारीके पास कहांसे रुपयाआया वहतो इन दिनों खुदहैरान है अम्बिकादत्तकी मातानेकहा आखिर फिरकुछ करना तो पड़ेगा मिश्रायन ने पासजाकर चुपके से कहा कि महीनेभरको लिये बहू अपनेसोने के कड़े देदेंतो बातरहजाय इस समय तो इनकड़ोंको गिरवी रखकर आधी तिहाई छ-दामीलाल की भुगत जाय महीने भरमें यातो आगरेसे खर्च आजाताया मैं और किसी महाजन से लेआती अम्बिकादत्त की मानेकहा अरीदीवानी ऊईहै खबरदार यह मुंहसे मत निकालना अगर रहनेका मकानतकभी बिकजायतोमुझको मंजूरहै परंतुबहूसे कहनेको तो मुंहनहीं मिश्रायनने कहा बीबी मैंतो इसख़यालसे कहा कि बहूऊई बेटीऊई कुछ ग़ैर नहींहैतो और क्या परमेश्वर नकरे बेचडालने की नियत हो महीनेभरका वास्ता है चीज़ संदूकमें नपड़ी रही महाजन के पास रक्खीरही जिसमें उसकीखातिर जमारहे अम्बिकादत्त की मानेकहा फिरभी बहूबेटीमें बड़ाअन्तरहोता है और नई ब्याहीऊई से कोई ऐसीबात कहसक्ता है देख खबरदार फिर ज़बानसे ऐसीबात मत निकालियो ऐसा नहो कि यमुना के कान पड़जाय और बहूसे जाय लगाये मिश्रायनने कहा सा-

हवजादी तो अभी खड़ी हुई सुन रही थी परंतु वह बच्चा है अभी उनको इनबातोंकी समझनहीं अम्बिकादत्तकी माताने कहा डोली लेआओ मैं बहिनके घरतक जाऊंतो सही फिर जैसी सलाह ठहरेगी देखा जायगा अम्बिकादत्त की माता तो सवार हो चौक को सिधारी और यमुना ने सबवृत्तान्त अपनी भावज से जा कहसुनाये सरस्वती को और कुछतो न सूझी तुरंत अपने बड़े भाई ईश्वरीदत्तको यहचिट्ठी लिखी॥

सिद्धिश्रीसर्वोपमा योग्य भाईजी बहुत दिनों से मैंने अपना हाल इसलिये नहींलिखा कि जो चिट्ठी अम्मा के नाम भेजती हूं वह आपके देखनेमें भी आती होगी अबएक निजकीबात ऐसी आगेआई है कि उसकोआपही कोलिखना उचितसमझतीहूं वहयह है कि जबसे मैं ससुराल आई किसी प्रकार का मुझको क्लेश नहीं पहुंचा औरबड़ी बहिनको जिन बातों की शिकायत रहा करती थी आपके आशीर्वाद से वह बात मेरेसाथनहीं सबलोग मुझेप्यारकरतेहैं औरमैं आनन्दसेरहती हूं परन्तु एकलच्छी मिश्रायन के हाथोंसे वहदुःखहै जो किसी बदमिजाज सास और बदजबान नन्दसे भीन होतायह स्त्री इसघर में बहुत कालसे है भीतर बाहरका सबकार्यइसी के हाथोंमेंहै इसस्त्री ने घरकोलूटकर मटिया मेलकरदियाअब इतना उधार होगयाहै कि उसके अदाहोने कासामानदृष्टि में नहीं आता इसप्रकार का बन्दोबस्त घरमें नहींहै मैंनेथोड़े दिन मामूली कामकाज गृहस्थी में दखलदिया थातोसब बस्तु में काटकपट हरबातमें धोखा पायागया मेरेरोकटोंक सेमिश्रायन मेरीबैरिन होगई और उस दिन से नित्य नये २ उपद्रव खड़े किये रहतीहै अगर्चि अब तक कोई बुराई की बात नहीं हुईपरन्तु इसमिश्रायन कारहनामुझकोबड़ानागवार है और निकलनाभीइसका बहुतकठिन है सारेबाजार का ऋण इसके आढ़तसे है छुड़ाने कानामभी सुन पाये तो कर्जखाहोंसे जाभड़काये फिरऋणकान हिसाब है नकिताब हैजबानी तुकोंपरसब लेनादेनाहोरहाहैमैंजानतीहूं कि सब

लोगों का लेखा होकर लिखा पढ़ी होजाय और एक ढंग से हरएक की क़िस्त मुक़र्रर करदीजाय और उधार लेने का दस्तूर आगे के लिये मौक़ूफ़ हो और मिश्रायन निकाल दी-जावे यक़ीन है कि अब्बा के साथ आपभी बाद दीवाली के आवें मैं चाहती हूं कि आप अनुग्रह करके आगरा होकर आइये और अब्बाजान को जिसप्रकार बनपड़े कमसेकम पन्द्रह सो-लह दिन के लिये अपनेसाथ लिवालाइये आप सबलोगों के सा-मने यह सब मुआमिला अच्छीविधि से तै होजायगा मैं इस चिट्ठीको अति घबराहट के समय में लिखरहीहूं कोई महाजन नालिश करनेपर उतारू है मिश्रायन ने यह सलाह दीहै कि मेरे कड़े गिरवीरक्खे जावें अम्माजान रुपये के बिलाबन्द के हेतु चौक में अपनेबहिन के घर गई हैं उधर तो सरस्वती ने भाई को चिट्ठीलिखी इधर अपनी मौसीसे कहला भेजा कि मैं अ-केली हूं जयजयवन्ती मेरी मौसेरी बहिन को दोदिन के लिये भेजदीजिये मैंने सुना है कि वह ससुराल से आईहै ग़र्ज़ शामे शाम जयजयवन्ती भी आपहुंची डोली से उतरते ही कहा वाह बहिन सरस्वती ऐसा कोई बेमीलनहींहोता मैंनेमौसा जी की चिट्ठी तुमसे मंगवाभेजी थी तुमने न भेजी सरस्वतीने कहा वह कौनमांगने आयाथा जयजयवन्ती बोलीदेखोयही मिश्रायन मौजूद हैं क्यों बी मलिश्चरको तुम हमारे घरगईथी मैंने तुमसे कहदियाथाया नहीं लच्छीमिश्रायन बोली हां बी तुमने कहा था पर मुझ अभागिन को बात याद नहींरहती यहां आनेतक घरके धन्धेमें भूलगई सरस्वतीने हंसकेसकहा तुमको लूटनाऔर घर फोड़ना याद रहताहै जयजयवन्ती से कहा चिट्ठी मौजूद है और एकनईकिताबभी आईहै बड़े मज़े की बातें उसमें लिखी हैं वह भी तुम लते जाना बाद उसके सरस्वती ने मिश्रायनका सारा वृत्तान्त जयजयवन्ती से कहा जयजयवन्ती बड़ी उताहिल थी उसीवक्त जूतीलेकरउठी और मिश्रायन को मारनेचली सरस्वतीने हाथपकड़कर बैठालिया और कहा परमेश्वरके लिये ऐसा कोप मतकरो अभी जल्दी

नहीं सब बात बिगड़जायगी जयजयवन्ती ने कहा तुमयोंही शोच साच करके अपनी गदमाई खोतीहो अगर मैं तुम्हारी जगह पर होती तो भगवान की सौगन्ध इस मिश्रायन को मारे जूतियोंके ऐसा सीधा बनाती कि जन्मभर सुर्त रखती सरस्वती ने कहा देखो भगवान ने चाहा तो इस नमकह-राम पर परमेश्वरकी मार पड़ेगी कोई दिन की देरहै इसके पीछे जयजयवन्ती ने पूछा तुम्हारी सास अपनी वहिनकेयहां किसहेतु से गईहै सरस्वतीने कहा वह बेचारी भी इसी मि-श्रायन के हाथोंने दर बदर मारीफिरती हैं कोई महाजन है उसका कुछ देना है मिश्रायन ने आज आकर कहा था कि वह नालिश करनेवाला है उसीके रुपयेके बिलाबन्द के लिये गईहैं जयजयवन्ती ने पूछा कि कौनसा महाजन नालिश क-रने वाला है सरस्वती ने कहा नाम तो मैं नहींजानती जय जयवन्ती ने मिश्रायन से पूछा कि मिश्रायन कौन महाजनहै मिश्रायन ने कहा छदामीलाल जयजयवन्तीने कहा किवही छदामीलाल जो गन्धीटोलेमें रहताहै मिश्रायन ने कहा हां वी वही छदामीलाल जयजयवन्ती ने कहा कि उससे हमारी ससुरारमें भी तो लेनदेन है भला क्या मुयेकी ताक़त है जो नालिश करे मैं यहां से जाकर तुम्हारे भाई जान से कहूंगी देखो तो कैसा ठीकबनाते हैं दोदिन जयजयवन्ती सरस्वती के पास रही तीसरे दिन बिदाहुई और बिदा होते कहगई कि वहिन तुझको मेरेसिरकी सौगन्ध जब तुम्हारेससुरे आवें और यह सब मुआमिला मुक़द्दमा पेश हो मुझको जरूर बुलवाना और मिश्रायन को मुझे सौंपदेना वहां अम्बिकादत्त की मा को उनकी वहिन नेठहरालिया और कहा कि दीदी बहुत दिन बाद तुमआईहो भला सातआठदिन तो रहो परंतु हररोज आदमी सरस्वती के कुशलक्षेम को पूछने आता था मिश्रायनने बैठेबैठाये एक और शरारतकीकि इनदिनोंगव-र्नर जनरलकी अवाईथी नगरकी सफ़ाईके हेतु हाकिमके तर्फ़ से बहुत ताकीदहुई सबमहल्ला और गलीमें इश्तिहार लगाये

गयेकि सबलोग अपने२कूंचे और गलियां साफ़करें दरवाजों पर सफ़ेदीकरालें नाबदानसाफ़रक्खें अगर किसीजगहकूड़ा कर्कटमिलेगा तो मकान नीलामहो जावेगा इसी समाचार का एक इश्तिहार इसमहल्ले के फाटक पर लगाया गया था लक्ष्मी मिश्रायन रातकोजाकर महल्ले के फाटकसे वह इश्तिहार उखाड़लाई और चुपके से अपने दरवाजे पर लगादिया और फिर अन्धेरे मुंह चौक में अम्बिकादत्त की माता से खबरकरने दौड़ीगई कि अभीमकानके किवाड़ भी नहीं खुले थे कि इसनेआवजदी अम्बिकादत्तकी माताने बोलीपहचानी और कहा अरी दौड़ियो किवाड़ खोलियो मिश्रायन ऐसी समय क्यों भागतेआईहै मिश्रायन सामनेआई तो पूछामिश्रायनकुशलक्षेमहै मिश्रायन बोली बीबी मकान पर इश्तिहार याश्तिहार क्या होताहै लगाहुआ है मालूमहोताहै कि छदामीलालने नालिशकरदी अम्बिकादत्तकी मानेअपनीबहिन से कहाकि बीबी मैंतो जातीहूं जाकर छदामीलालको बुलवाऊंगी और समझाऊंगी परमेश्वर उसके जी में दयादेवे बहिनबोली दीदीमैंबहुतलज्जितहूं किमुझसेरुपयेकाबन्दोबस्त न होसका परन्तु गलेकी तुलशी मेरीमौजूदहै इसकोले जाओ गिरवींरखनेसेकामनिकलेतो खैरनहींतो बेचडालना अम्बिकादत्तकी मानेकहाकि खैर तुलशीमैं लिये जातीहूं परन्तु उसी का ऋण बहुतबढ़गयाहै एकतुलशीसे क्या होगा बहिनबोली कि आखिर उन्होंनेभी कहाहै कि मैं किसी दूसरे महाजन से उधारलाढूंगा तुम भगवानका नामलेकर के सवारहोवह आतेहैं तो मैं भी उनको पीछेसे भेजतीहूं ग़र्ज अम्बिकादत्त की माता मकानपर पहुंची दरवाजेपर उतरीतो इश्तिहार लगा देखाउदासीको प्राप्तहोय आकरबैठगई सासका आना सुनकर सरस्वतीभी कोठेपरसे उतरी और प्रणामकिया सास को उदासदेखकर पूंछा आज अम्माजान तुम्हारा चेहरा बहुत उदासहै सासनेकहा हांमहाजनने नालिशकरदीहै रुपये की सूरतकहीं से बन नहीं पड़ती फुलमारी बहिन ने जवाब

दिया अब मकानपर इश्तिहार लगचुका देखियेक्या होताहै सरस्वती ने कहा आप कुछ सोच न करें अगर छदामीलाल ने नालिशकरदीहै तो कुछ हर्जनहीं जयजयवन्तीके ससुराल में उसकालेनदेनहै उसने मुझसे वादाकियाहैकि मैं छदामी लालको समझादूंगी और जो नहीं मानेगातो उसकेरुपयेका और यत्नहोजावेगा रंजकरनेसे क्या प्रयोजन सासनेकहा अम्बिकाहोता तो मैं उसको छदामीलाल तक भेजती सरस्वती बोली यों आपको अखतियारहै परंतु मेरे नजदीक महाजन से डरना उचितनहीं नहीं तो वह आगे को ढीठहो जायगा और आये दिननालिशका डरावा दिखातारहेगा सबसेबेहतर यह है कि इधरका इशारा न हो और किसी ढबसे कोई दबाव उसपर पड़जायकि वह दावाको खारिजकरादे अम्बिकादत्त की माताने कहा जयजयवन्ती अभी लड़कीहै कचहरी दरबारकी बातेंवह क्या जानेऐसा न होकि उनकेभरोसे में काम बिगड़जावे काबूहाथसे निकलजाय सरस्वतीने कहा जयजयवन्ती लड़की है परंतु मैंने बात पक्कीकरली है और मुझको भरोसाहैयह बातेंहोरही थीं कि दुर्गादत्तने दरवाजे पर आवाज़दी सरस्वतीनेकहाकि दुर्गादत्तआयाहै अवश्यइस मुआमिलेमेंवह कुछ खबरलाया होगा दुर्गादत्तको सरस्वती ने भीतर बुलाया और पूछा क्या खबरलाये दुर्गादत्त ने कहा बहिननेआपकोनमस्कारकहाहै औरमिजाजका हाल पूछाहै और कहाहै छदामीलालको बुलायाथा बहुतकुछडराधमका दिया है और उसने वादा कर लियाहै कि नालिश न होगी यह बात सुनकर अम्बिकादत्त की माता को कुछ धीर्य हुआ परंतु सरस्वती आश्चर्य में थी कि जयजयवन्तीने यह कहला-भेजाहै और छदामीलाल नालिश कर बैठा यह क्या बातहै और इश्तिहारका मुआमिलाभी आश्चर्यका है मैं घरमें बैठी की बैठी रही मुझको खबर नहीं हाकिम का इश्तिहार होता तो कोई चपरासी पियादा पुकारता दुर्गादत्त विदा हुआ तो यमुनाके सरस्वती ने कहा दरवाजे पर जो कागज

लगाहै उसको चुपके से उखाड़ लाओ यमुना कागज उखाड़ लाई सरस्वतीने पढ़ा तो सफ़ाई शहर का हुक्म था नालिश का उसमें कुछचर्चा नथा समुझगईकि यह भी मिश्रायनकी चालाकीहै सास परतो यह हाल जाहिर नहीं किया परंतु उनका इतमीनान अच्छे प्रकार करदिया कि आप निश्चिन्त बैठीरहिये नालिश का कुछडर नहीं सासने कहा तुम्हारे कहने से नालिशके तर्फ़ से दिलजमई हुई परंतु दिवालीका तो त्योहार शिरपर चला आता है इसमें भी खर्च चाहिये आगरेसे चिट्ठी आनाभी बन्दहै इसका शोच तो मेरा लोहू सुखाये डालताहै सरस्वती ने कहा दीवाली को तो अभी एक महीना पड़ा है और दीवाली में क्या ऐसा बहुत खर्च होगा सासने कहा मेरे घर हरसाल दीवाली में पचीस तीस रुपये उठते हैं पूछोयही मिश्रायन खर्च करनेवाली मौजूदहै सरस्वतीने कहा कि खर्च करनेका क्या आश्चर्य है परंतु एक जरूरतकेलिये और एक बेज़रूरत सो दीवालीमें इतने रुपये खर्च करनेकी कुछ जरूरत नहीं सासनेकहा सालभर का त्यौहार है परजों कोखीलें बताशेदेना फिर लोगोंके घर भेजना भिजवाना जरूरहै कहनेको तो तनिकसी बातहै दशरुपये तक तो अम्बिका और यमुनाके वास्ते खिलौना वग़ैरह चाहिये अम्बिकाका व्याहहोगया तो क्याहै भगवान रक्खे अभीतक उसके मिजाज में बचपन की बातें चली जाती हैं जबतक दो रुपये खिलौनेकेहेतु और चाररुपये रोशनीकेवास्ते नलेगामेरी जान खाजायगा और यमुना भी रोरोकर अपना बुरा हाल करेगी सरस्वतीने कहा परजोंकेलियेएकरुपयेकी खीलें और चारआनेके बताशे मिठाई और चारआनेके खिलौने और आठ आने रोशनी के लिये बहुत हैं भेजना भिजवाना तो इधर से आया उधरगया यमुनाभी अब खिलौने और रोशनी के लिये अधिक हठनहीं करेगी मैं उनको समझालूंगी दीवाली का बन्दोबस्त मैं करलूंगी मेरा जिम्माहै इसके लिये आप उधार

न कीजिये सासने तोये बातें हुईं परंतु सरस्वती शोचमें थी

कि मियांको किसप्रकार समझाइये आखिर सरस्वती ने इस यत्नसे मियांको समझाया कि बात कहदी और मियांको भी नागवार मालूम न हुआ सरस्वती ने अम्बिकादत्त के सामने यमुना से छेड़ करके पूछा कि क्यों जी तुमने दीवाली के वास्ते क्या फ़िकिर कीहै यमुनाबोली जब भाई अपने वास्ते खिलौने और दिवाली लावेंगे तो तुम्हारे वास्ते लावेंगे अम्बिकादत्त अभीतक जवाब देने नहीं पाया था कि सरस्वतीने कहा कि भाई तोऐसी वाहियात बेज़रूरत चीज़ क्यों लानेलगे यमुना खिलौने में क्या मज़ाहोताहै यमुनाने कहाभाई जान खिलौने से खेलेंगे और ताक़चेपर रखकरके तमाशा देखेंगे और दि-यालियोंसे साराघर रोशनकरेंगे सरस्वतीने कहा जो दोएक खिलौने पूजाके लिये आवेंगे उनको ताक़चेपर रख देना और चैतन्य लड़की खिलौने से नहीं खेलतीं और न अपने हाथ से रोशनी करतीहैं यमुनाने कहा कि रोशनीहम अपने हाथसे नहींकरेंगी मिश्रायन करेगी जब रोशनी होजायगी तबहम देखेंगी सरस्वतीने कहा जब तुमने रोशनी अपने हाथसेनहीं की तो जो रोशनी महल्ले में होगी उसको देखलेना जोदश बीस चिराग़ घर में बलेंगे उसको तुम अपने हाथ से बालना और सुनो खिलौनों से खेलना बहुत बुराहोताहै हमारेमैके के महल्लेके लड़कोंमें से एक लड़का एक बड़े खिलौने से खेल रहाथा एकबेर खिलौना हाथसे छूटकर पैरपर गिरपड़ा एक महीनेतक वह लड़का उठनसका और एक लड़की सारीरेश-मी पहने हुये दीलीबार रहीथी लौ चिराग़की सारीमें लग-गईऐसी आगफैली कि लोगबुझा नसके वह लड़की जलकर मरगई पस ऐसे खेल अच्छे नहीं और तुम अम्माजानका हाल देखतीहो कि उदासहैं यानहीं यमुनाने कहा उदास तो हैं सरस्वती बोली कि फिर तुमने यहभी शोचकिया कि क्यों उ-दासहैं यमुनाने कहा कि नहीं मालूम सरस्वती बोली वाह इसीपर तुम कहतीहो कि अम्माको मैं बहुत चाहतीहूं यमु-नाने पूछा अच्छा भाभीजान अम्मा क्यों उदास हैं सरस्वतीने

कहा खर्चकी तंगीहै महाजन उधार नहीं देता इस सोचमें हैं कि यमुना खिलौनों के लिये हठकरेगी तो कहां से मांग करदूंगी यमुनाने कहा कि अच्छा हमनहीं लेंगी सरस्वतीने कहा तुम बहुत प्यारी बहिनहो और यमुनाको गले से लगा-कर प्यारकिया अम्बिकादत्त चुप बैठा हुआ यह बातें सुनता रहा जो किताब माक़ूल थी उसके मनने भी मानलिया और उसी समय नीचे उतर कर माता के पासगया और कहा कि मैंने सुना है कि तुमदीवाली के सोचमें बैठी हो सो मेरेलिये तुम कुछ सोच मतकरो मुझको खिलौने और रोशनीके लिये कुछ न चाहिये और यमुना भी कहती है कि मैं भी नहीं मगाऊंगी खर्चकी एक रक्मतो यों कमहुई और दो रुपयेमें सबसामान सरस्वतीने करलिया और भेजने भिजवाने के हेतु सरस्वतीने आप बन्दोबस्तकिया जब बाहरसे बैना आया घर में ठहरने न दिया आदमी देकर बाहर निकला और इसने महरीसे कहा कि इसको फ़लानीजगह पहुंचादो जिस २ को भेजना था सब नाम बनाम पहुंचगया और दो रुपयेमें अच्छे प्रकार दीवालीहोगई लक्ष्मी सिथायन यह बन्दोबस्त देखकर जलगई इस वास्ते कि उसकी बड़ी रक़म मारी गई जितना बाहरसे आता वह सब लेती और जो घरमें होता उसमें से आधी तिहाई निकाललेती और सब हंडियामें भरके महीने तक फांकाकरती दीवालीके बाद सरस्वती के बापकी अवाई हुई दशदिन पीछे दीवालीको देवीदत्त कांगड़े से घर आया सरस्वतीने पहले से अपने बाप की अवाई सुन रक्खी थी और सासु और पतिसे ठहरगया था कि जब तहसीलदार आवेंगे उसीदिन मैं उनसे मिलने जाऊंगी जब सरस्वती ने बाप का आनासुना तुरन्त डोली मंगा जापहुंची बापने गलेसे लगाया और देरतक हालपूछते पाछतेरहे और कहा तुम्हारे लिखने केमुआफ़िक ईश्वरीदत्त आगरेको गये हैं कलयापरसोंसमधी साहब को लेकर यहां पहुंचेंगे उनकी एक चिट्ठीभी मुझ को राह में मिली थी समधी साहब को रुख़सत मिलगई है ग़र्ज़

रातभर और अगले दिनभर सरस्वती अपने मैकेमें रही और सांझ समय पितासे कहा अगर आज्ञा दीजिये तो आज मैं चलीजाऊं बापने कहा अभी आठ सातदिन और रहो हम समधिन को कहला भेजेंगे सरस्वतीने कहा जैसा आप कहें वैसा मैं करूं परंतु अब्बाजानके आनेसे पहले घरमेंमेराहोना उचित जानपड़ताहै पिताने सोचकर कहा हां यह बात तो ठीक है अर्थात् सरस्वती बापसे बिदाहोकर घर आ पहुंची अगलेदिन ऐनभोजन के समयपर पण्डित शंकरदत्त अम्बिका दत्तके बापअचानक आपहुंचे ये राजाजयसिंह रईस आगरे के सरकार में मुख्तार थे पचास रुपये महीना उनकी तन-ख़ाह मकान और सवारी रईस के जिम्मे था ईश्वरीदत्त सर-स्वतीके लिखने से आगरे गया और सरस्वतीकी चिट्ठी शंकरदत्त को दिखलाई शंकरदत्त बहू की चिट्ठी देख कर बहुत आनन्द हुआ और यों शायद छुट्टीभी नलेतापरंतु बहूकेदेखने के शौक़मेंरईससे बहुतकह सुनकर छुट्टीली और ईश्वरीदत्तकें साथहुये जो कि सरस्वतीने पहिले कभी ससुरेको नहींदेखाथा लाजके मारे कोठेपर जाबैठी अम्बिकादत्त की मातको यह आश्चर्य था कि ये क्योंकर आगये ग़र्ज़ भोजन के पीछे बातें होनेलगी पण्डित शंकरदत्तने बीबीसे कहा कि सुनों मुझको तो तुम्हारी छोटी बहूने खींचकर बुलायाहै और सब वृत्तान्त चिट्ठी का और ईश्वरीदत्त के जाने का जोरू से बयान करके कहा कि बहूको बुलाओ सास कोठेपर गई बहूको साथ ले आई सरस्वतीने ससुरेको झुकाकर प्रणामकिया और बैठगई शंकरदत्तने कहा सुनो बेटी हमतो निजतुम्हारे बुलाये आये हैं तुम्हारी चिट्ठी देखतेही हमाराजी बहुतप्रसन्न हुआ पर-मेश्वर तुम्हारी आयुर्दाय बड़ी करे और सचकरके अबहमारे घरके अच्छे दिन आये जो तुम हमारेघर आई और मुझको भरोसाहुआ कि अब इसघरके कुछदिन फिरे कल जो परमे-श्वरने चाहा तो तुम्हारी इच्छा के मुआफिक बन्दोबस्त होगा ग़र्ज़ दोचारदिनतो शंकरदत्तकि जो बहुतदिन पीछेआये थे

मिलने मिलाने में रहे फिरदो चारदिन सफ़रके कारण से घर के काम काजके तर्फ़ कुछ ध्याननकिया एकदिन बहूकोबुला-कर पास बैठाला और लक्ष्मी मिश्रायन को बुलाकरकहाकि मिश्रायन हमारे रहते सबहिताब कितावकरलो जिस २का लेनादेना है सबलिखादो किशोच समझकर जिसकाजितना उचित होवेदियाजावे औरजोबाक़ीरहेउसकीवादापातीकरदी जाय मिश्रायनने कहाएककाहिसाब होतोमैंजबानी भीयाद रक्खूं बनिया बजाज कुंजड़ा हलवाई तमोली सब का देनाहै छदामीलालकाहिसावअलगहैजिसको जितनादेनाहो मुझको दीजिये देआऊं आपके नामजमअ होजायगा पण्डित शंकर दत्त सीधेसाधे थे देनेको तैयार होगये सरस्वतीने कहायोंबे हिसावदेनेसेक्या प्रयोजनपहलेहरएककाकर्जादर्याफ़्तहोतब उसकोशोच समझकर देनाचाहिये मिश्रायन ने कहा भोजन बनाने से छुट्टी पाऊं तो हरएक से पूंछआऊं सरस्वती ने कहा पूंछआनेसे क्या होगा जिसका लेनाहो यहां आकर हिसाब करजाय मिश्रायन नेकहाकि बीबी आपनेतो एकबात कहदी अबमैं कहां २ बुलातीफिरों और वे लोगअपने काम धन्धे से कबछुट्टी पाते हैं जो मेरे साथ चले आवेंगे सरस्वती बोली मिश्रायन कोई रोज़ २ का आना जानानहीं है एकदिन कीबातहै जाकर बुलालावो शामको रसोईका बंदोबस्त हो जायगा तुमआजयही कामकरो औरलेने वालेतो देनेकानाम सुनकर दौड़े आयेंगे छदामीलालतोदो रोज़ नालिश करने कचहरी को गयाथा वहां आते क्या उसके पाउं की मेंहदी घिस जायगी औरदूर कौनहैं बनियां हलवाई तमोली सबइसी गलीमें रहतेहैं सिर्फ़ बजाज और छदामीलाल दूर है उनको कलपर रक्खो फुटकर हिसाब आज हो जाय मिश्रायन को किसी तरह मंजूरनथी किहिसावहो परन्तु सरस्वती नेबातों में ऐसा दबाया कि कुछ जवाब देते नबन पड़ा सबसे पहिले हलवाई आया पूछागया कि तुम्हारा क्या पाना चाहिये हल-

वाईबोला तीसरुपये मकाशया क्या चीज खवाईयहांसे आई

के हलवाई ने कहा तीस रुपया क्या बहुत हैं पन्द्रह रुपये की मिठाई इसी दिवाली में आई अम्बिकादत्त की माता बोली अरी कैसी मिठाई अब की बेर दिवाली में जो मिठाई हमारे घर आई वह नक़द दाम देकर आई यह सुनकर मिश्रायन का रंग उड़ गया और बोली वह मिठाई तूने इनके हिसाब में क्यों लिखदी वह तो मैं दूसरे घरके वास्ते लेगई थी और तुझको बता भी दिया था हलवाई ने कहा मुझसे तुमने किसी घरका नाम नहीं लिया इसी घरके नामसे तुम लाई हो और मुझको क्या फ़ायदा था कि दूसरे की चीज़ इनके नाम लिखता और मुझसे और किसी सरकार से उचापत भी नहीं है ग़र्ज़ शंकरदत्त ने कहा मिठाई की रक़म रहने दो और चीज़ें बताओ ग़रज़ इसी प्रकार और चीज़ें उसने बताईं जो जन्मभर नहीं आई थीं सिर्फ़ दो रुपये सच निकले बाक़ी सब झूठ शंकरदत्त का जी जलगया और बहुतसा उनको क्रोध आया और कहा क्यों जी मिश्रायन ऐसा ही तुमने दुनियांभर का ऋण इसघरपर कर रक्खा है हलवाई हो चुका तो कुंजड़ा आया उसने कहा पण्डितजी मेरा तो सीधा हिसाब है दो आने रोज़ की तरकारी अम्बिकादत्त की माता बोली अरे सेर भर तरकारी मेरे घर आती है दो आने की कहां कुंजड़ा बोला कि मेरी दूकान से मिश्रायन तीन सेर लाती है मिश्रायन बोली हां तीनसेर लाती हूं सेरभर तुम्हारे नामसे सेरभर अपनी बेटी के वास्ते सेरभर दूसरे घरके वास्ते मैं क्या मुफ़्ती हूं यह सुना सब तुम्हारे नाम बताता है कुंजड़े ने कहा अय बुढ़िया बेईमान सदा तू इसी घरके नामसे लाती रही और जो रुपया मिला इसी घरसे मिला तेली तमोली का हिसाब हुआ तो उसमें भी बहुत ग़लत निकला ज़ाहिर हुआ कि मिश्रायन इसी घरके सौदे में अपनी बेटी और दोतीन पड़ोसियों के घर पूरे करती है इसी घरके नामसे सौदा लाती है और दूसरे घर बेच डालती ग़र्ज़ शामतक फुटकर हिसाब भुगतगया अब अकेले बजाज और [illegible] का हिसाब रहा अम्बिकादत्त ने [illegible]

नेचुपकेसरस्वतीसे कहाऐसानहो कि मिश्रायनभागजायसर-
स्वतीने कहा घरबार लड़के बच्चे छोड़कर कहां भाग जायगी
हां शायद ग़ैरतदार होती कुछ खाले परंतु ऐसी ग़ैरतदार
होती तो क्यों ऐसा काम करती लेकिन तोभी इतनी चौकसी
इसकी अवश्य है कि बाहर आते जाते कोई आदमी देखता
रहे शंकरदत्तने अपने एक नौकरको जो साथ आयाथा चुपके
से कह दिया कि मिश्रायनको आतेजाते देखतेरहो अवखान
से छुट्टी मिली और मिश्रायन चुपके से उठकर बाहर निकली
तो भोला नौकर शंकरदत्त का पीछे २ हुआ मिश्रायन
पहले तो अपने घरगई और वहां से कुछ बग़लमें दबा सीधी
बजाजके मकानपर जा उसको आवाज दी बजाज घबरा कर
बाहर निकला और कहा मिश्रायन तुम इस समय कहां
आई मिश्रायन ने कहाकि पण्डितजी आये हुये हैं जिस २
कादेनाहै सबका हिसाबहोताहै कलतुम भी बुलाये जावोगे
ऐसी बात मत करना कि मेरी रुसवाई हो बजाज ने कहा
हिसाब मैं तुम्हारी रुसवाई की क्या बात है मिश्रायन बोली
अयलाला तुम जानतेहो लालच बहुत बुरीहोती है सरकार
के हिसाब में मैं अपनेलिये भी तुम्हारे दूकानसे कभीं २ लट्ठा
नैनसुख दरियाई लेगई बजाजने कहा क्या मालूम तुमअपने वास्ते
क्या लेगई हो मिश्रायनने कहा तुमको तो इस समय हिसाब
करने की सुधनहीं परंतु दोचारथान दरियाईलट्ठा नैनसुखमेरे
हिसाब में निकलेंगे मेरे हाथकी चार चूड़िया सोलह रुपये
कीहैं घिसघिसाकर एकरुपया कम होगयाहोगा पन्द्रहरुपये
मेरे नामसे कमकर देना और दोचाररुपया जो मेरेनामका
निकलेगा देने को मौजूदहूं बजाजने कहा चूड़ियां तुमदेती
होमैं लेताहूं परंतु रातका समयहै बहीखाता दूकान परहै
बेदेखे क्या मालूमहो क्यागयाहै और क्या पानाहै मिश्रायनने
कहा इस समय मेरी इज्ज़त तुम्हारे हाथ है जिसप्रकारहोसके
बचाओ फिर बजाज से बिदा हो सीधी छदामीलाल के घर
[illegible] इस समय
पहुंची वह भी आश्चर्य में होकर [illegible]

मिश्रायन तुम कहां आई मिश्रायन उसके पांवपर गिर पड़ी और कहनेलगीकिमुझसे एकअपराध हुआहै छदामीलालने कहा वह क्या हुआ मिश्रायन बोली कि तुम बचन दो किमैं क्षमाकरदूंगा तो मैं कहूं छदामीलालने कहा बाततो कहो मिश्रायनने कहाचारमहीने हुये पण्डितजीनेआगरेसेसौरुपये तुमकोभेजेथे वहमेरेपाससे खर्चहोगये सरकार में डरकेमारे मैंने जाहिर नहीं किया अब पण्डित जी आये हुये हैं तुमको हिसाब के वास्ते बुलावेंगे मैं इसरुपयेका ठिकाना लगाऊंगी तुमयह मतकहना कि मैंने यह रुपया नहीं पाया छदामी लाल ने कहा दोचार रुपये की बात होती तो मैं छिपा भी देता इकट्ठे सौरुपये तो मेरेकिये छिपनहीं सक्ते मिश्रायन ने कहा क्यालाला सौरुपये का भी मेरा भरोसा नहीं छदामी लाल ने कहा साफ़ बात तो यहहै कि तुम्हारा एक कौड़ी का भी भरोसानहीं जिसघरमें तुमने जन्म भर परवरिश पाई और उन्हीं के साथ यह सलूक किया तो दूसरे के साथ तुम चूकनेवालीहो मिश्रायननेकहा हांलालाजब बुरासमय आता है तो अपनेघर के बैरी बनजाते हैं खैर जो तुमको मुझपर भरोसा नहीं तो लो यह मेरीबेटीकी पहुंची और जोशन रखलो छदामीलाल ने कहा यह मुआमिलाकी बातहै दिन हो तो मालपरखाजाय और मालूमहोकि कितनेकाहैपरंतु अटकल से यह माल पचासका होगा मिश्रायन ने कहा अरे लाला ऐसा अन्धेर मत करो अभी चारमहीने हुये दोनों चीजें नई बनवाईथीं सौ सवासैके लागत कीहैं छदामीलाल ने कहा इसमें बुरा मानने की क्या बातहै तुम्हारीचीज सौ की है या दोसौकी है कोई लिये थोड़ाहीलेताहै तौलानेसे जितनेकी ठहरेगी मालूम होजायगी यहसबबन्दोबस्त कर- के मिश्रायन लौटआई और पण्डितजी के नौकर ने पांव दा- बने में यहसब हाल पण्डितजी से बयान किया अम्बिकादत्त की माताके मुखसे सरस्वतीको भी मालमहुआ भोरहुआतो बजाज और छदामीलालबुलवायेगये हिसाबमें कुछ तकरार

होनेलगी मिश्रायन बढ़ चढ़कर बोलती थी बजाज ने कहा तू बुढ़िया क्या बड़ २ करतीहै उठाओ अपनी चूड़ियां तू तो पन्द्रह रुपये की बताती थी बाज़ार में नौ रुपयेको आंकते हैं फिर छदामीलाल ने पहुंचियां और जोशन निकाल सामने रखदिये और मिश्रायन से कहा यह माल पचास का अंकता है और हमारे काम का नहीं शंकरदत्त ने बजाज और छदामीलाल से पूछा क्यों भाई यह कैसी चीजेंहैं तब दोनों ने रातकी कहानी बयान की उस समय मिश्रायन के मुंह पर मानों लाखोंजूतियां पड़रहीथीं जब हिसाबहोगया तो शंकरदत्त ने देनेको रुपया निकाला तो जितना वाजिबी था आधा २ रुपया सब का देदिया और कहा कि मैंने आगरे से रुपया मंगाया है दस पांच दिनमें आ जायगा तो बाकी भी दियाजायगा सबलोगों ने पूछा कि जो मिश्रायन के तर्फ़ निकला वह किससे लें शंकरदत्त ने कहा कि मिश्रायनसे हिसाब की खबर सुनकर जयजयवन्ती डोली पर चढ़कर आ पहुंची और सरस्वतीसे गिल्लाकिया कि क्योंजी तुमनेमुझको खबर न की सरस्वती ने कहा अभी तो हिसाबहोताथा जब यह हिसाब होचुकता तोमैं तुमको खबरकरती गर्ज़हिसाब होजानेके पीछे शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा अजीइनका रुपया अदाकीजिये मिश्रायन ने नीचे आंखें कर कहा मेरे पास बेटीका गहनाहै उसमें यह अपना २ समझबूझलें बेटी का तमाम गहना तो कुंजड़े हलवाई बनिये बजाज तमोली के हिसाब में आधेदामोंपर निकगया छदामीलाल के सौ रुपयेके वास्ते रहनेका झोपड़ा गिरवी करनापड़ा लिखा पढ़ी पक्के कागजपर होकर चार भले आदमियों की गवाही होगई शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा बस अब आप यहांसे पधारिये तुमऐसी निमकहरामबेईमान का हमारे घरमें कुछकाम नहीं सरस्वती ने कहा इनमें नमकहरामी के सिवाय एक गुण और भीथा वह यह कि घरमें बिरुद्ध डलवानेकी यत्न में रहती थी क्यों मिश्रायन वह कढ़ी कीबात यादहै कि तुमने

कहा कि बहू कहती है कि मेरे शिर में दर्द है बोल तो सही कब तूने मुझसे कहाथा और कब मैंने दर्द शिरका बहाना कियाथा मिश्रायन ने कहा दुलहिन तुम अटारी पर पाठ कर रहीथी मैं कोठेपर गई तुमको पढ़ते देख उलटी फिर आई सरस्वती ने कहा दर्द शिरकी बात अपने मन से बनाई मिश्रायनने कहा मैंने सोचाकि सबेरे से अबतक तुमपढ़रही हो अब कहा चूल्हे में फिर खपाओगी सरस्वती ने कहा भला पहाड़जानेकी बात तूने किसप्रयोजनसे कही थी मैंने तुझसे सलाहकीथी या तूने मुझको कहते सुनाथा इसका कुछ उ-त्तर मिश्रायनको न आया फिर सरस्वतीने इश्तिहार निकाल पण्डितशंकरदत्त के सामने डालदिया और कहा देखिये यह मिश्रायन आपतो मुहल्ले के फाटक से इश्तिहार उखाड़कर लाई और मकानपरलगाया और आपही अम्माजानसेदौड़ी कहनेगईकि महाजनने नालिशकी सरस्वतीये बातें कहती जातीथी और शंकरदत्तका चेहराक्रोधसे लालहोताजाताथा उधर जयजयवन्ती दांतपीसरही थी शंकरदत्तनेकहा मिश्रा-यन तुझको निकालदेना काफ़ीनहीं है तू बड़ी बदजात स्त्री है यह कहकर अपने नौकरको आवाजदी और कहाकि ग-नेश इसपापिनको थानेमें लेजाओ और पर्चेमेंहम इसकासब हालखिदेतेहैं सरस्वतीने शंकरदत्तसे कहा बस अब जाने दीजिये और मिश्रायन से कहाकि चलदे अर्थात् इस विधि अपने कौतुकोंकेकारण मिश्रायन निकालीगई जबमिश्रायनघर पहुंचीतो बेटी बोली क्यों मैं न कहतीथी कि अम्माऐसी लूट तू मतमचा सौ दिन चोरकेतो एकदिन साहका ऐसा न हो किसी दिन पकड़ीजावो तुम किसकी मानतीथी अच्छाहुआ जैसाकिया वैसापाया अब ससुराल में मुझको बदनाम मत करो जहां तुमको तुम्हारा परमेश्वर लेजाय चली जाओ मेरे घरमें तुम्हारा कामनहीं है गहनेको मैंने संतोषकिया प्रारब्ध में होगा तो फिर मिलरहेगा इसप्रकार से परमेश्वर २ करके अपने बैरिनको सरस्वतीने निकालपाया जबमिश्रायन इस घर

से निकलगई तो सरस्वतीने बापके पास जानेको फिर आज्ञा चाही और आनन्द पूर्वक बिदा हो माताके घर आई और सात दिनतक बराबर माताके घर रही जिस२ बातसे बापसे सलाहलेनी थी सबली बापने पूछा मिआयन निकल गई सर-स्वतीने कहा आपकी कृपासे यह सबकाम सिद्धहुआ न बड़े भाई आगरे जाते न अब्बाजान आते न यह वर्षोंकालेखा ते होता न मिआयन निकलती बापनेपूछा अबबन्दोबस्त घरका किस तौरहोगा सरस्वतीने कहाकि मिआयनके निकलते मैं इधरचली आई परंतु अब बन्दोबस्तक्या कठिनहै इसीमिया-यनकी खुराबीथी अबमैं सब देखभाललूंगी देवीदत्त ने पूछा और कहाक्या २ बातेंघरमें तुमनेनई जारीकीं सरस्वतीनेकहा अभी मैंने कुछ देखा भालानहीं आदिहीसे मियायनका झ-गड़ाहोगया अब इरादा है कि हर एक बातको सोचों और बन्दोबस्तकरूं और आपको चिट्ठीकेद्वारा खुबरकरतीरहूंगी देवीदत्तने ब्याह पीछे से सरस्वती का दस रुपया महीना मुकर्रकर दियाथा सरस्वतीसे पूछा अगरतुमको खर्चकीतक-लीफ़रहतीहो तो मैं कुछ रुपया तुमको देताजाऊं सरस्वती ने कहा वही दसरुपये मेरी जरूरतसे अधिकहैं बल्कि आज तकके सबरुपयामेरे पासजमाहैं अधिकलेकर मैं क्याकरूंगी और जबप्रयोजनहोगा तबआपसे मांगलूंगी गर्ज बापसेबिदा हो सरस्वतीने ससुरालमें आकरदेखाकि सासचूल्हा झोंक रहीहै सरस्वतीने आश्चर्यसे पूंछाकि अयअबतककोई मिया-यननहीं रक्खीगई सास बोली आनेकोतो कईआई पर तन-खाहसुनकर हिआवनहीं पड़ताकि किसी को नौकर रखिये लच्छीबुरीथीमगरआठआनेमहीनेपरउसनेपच्चीसवर्षनौकरी की अब जो मिआयन आतीहै खानाऔर दो रुपयेसे कमका नामनहीं लेतीमैंने तुम्हारेआनेपर रक्खाथासरस्वतीने कहा मिआयन तो एकमेरे नजरमें बैठीहै परंतु दर माहा वह भी अधिकमांगतीहै रामकलीकी कोठीवहिनगुलाबासा पकाना सीनासब जानती है एक बाररामकलीने मुझसे कहाथा कि

कोई अच्छा ठिकाना होतो। गुलबासा नौकरीकरनेको मौजूद है अम्बिकादत्तकी माताने पूछावह क्यादरमाहालेगी सरस्वती ने कहा वहतो अपने मुंहसे तीनरुपया रोटी मांगती है परंतु समझायेसे दोरुपये महीनेपर शायदराजी होजाय अम्बिका दत्तकी माताने कहा कि दोरुपया खानादेना होतोहरभा-नदत्त मिश्रकी जोरू अनन्दीचिरौंजी करतीहै उसीकोनरक्खे सरस्वती ने कहा उसको तो मैं चार आने महीने परभी न रक्खों अम्बिकादत्त की माताने कहा कि बेटी क्यों सरस्वती ने कहा पडोसका रहनेवाला आदमी बुरा आंखबची और जो चीजचाही घरमें जाकर रख आई जब घरसे घर मिला है तो हरघड़ी हरभानदत्तकी घरवाली अपने घर जायगी और क्या आश्चर्य है कि रातकोभी अपनेघररहे अम्बिकादत्तकी माताने कहा शालिकराम मिश्र की स्त्रीने अपनी बेटी रामकुअंरि के लिये मुझसेकई बार कहा और रामकुअंरि तो गोलदरवाजे में रहतीहै सरस्वतीनेपूछा वही रामकुअंरि जो अच्छे भांति बनीठनी रहतीहै अम्बिकादत्त की माताने कहाबनीठनीक्या रहती है नई ब्याही ऊईहै कपड़े पहिनने का जरा शौक़ है सरस्वती कहा ऐसा आदमी नहीं रखना चाहिये अम्बिका दत्तकी माताने कहा शालिकरामकी जोरू नौकरी करनेको राजीहै सरस्वतीने कहा उसके साथ एक दुमछल्ला छोटी बेटी का लगाहै वहएकदम माको नहीं छोड़ती यशनाम तोएक का होगा और भोजन करने को दो २ होंगे अम्बिकादत्त की माने कहाफिर और कोईतो मेरे चित्तनहीं चढ़ती सरस्वती ने कहा देखो उसी गुलबासाको बुलाऊंगी अम्बिकादत्त की माताने कहा तनख्वाह क्या होगी सरस्वतीनेकहा कि इमान-दार आदमी तोकमदरमाहे परमिलना कठिनहै इनलोगोंको दो की जगह तीनदेने गौंहैं परंतु लच्छी ऐसीको आठआना देकर घर लुटवाना मंजूर नहींहै उससमयतो सासु बहुओं ने मिलजुलके रसोई बनाली भोजनके पीछे सरस्वती यमुना अपनी ननदको ले अटारीपरचलीगई जमतकपण्डित शंकरदत्त

घररहे सरस्वतीने कोठे परसे उतरना बहुत कम कर दिया था। सिर्फ सुबह शामनीचे उतरतीथी बल्कि यमुनाको भी मना कर दिया था। कि हर घड़ी नीचे मत जाया करो यमुना तो लड़कीथी उसनेपूंछा अच्छी भाभीजान क्यों न जावें सरस्वती ने कहा बड़ोंके सामनेहर घड़ी नहींचलते फिरते खानेकेपीछे घरकेहिसाब किताब में शङ्करदत्त थे और घरवालोसे लड़ाई होनेलगी बीबीकी यह शिकायतथी कि तुमखर्च बहुत थोड़ा देतेहैं। यहां शादीब्याह बिरादरीका लेना देना आनाजाना सब मुझको करनापड़ता है शङ्करदत्तकहते थे कि बीसरुपया महीना थोड़ानहीं है तुमको घरगृहस्थी करनेका ढंग नहीं है इतनेमें शङ्करदत्तने यमुना को पुकारा यमुना आई कहा अपनीभाभी को बुलालाओ सरस्वतीने बुलाने की खबरसुनी तो आश्चर्यमें हुई कि इससमय क्यों बुलाया यमुना से पूछा क्याहोरहा है यमुनाने कहा लड़ाई होरही है सरस्वती गई तो शंकरदत्तने कहा क्योंबेटी अबघरका बन्दोबस्त कौनकरे गा सरस्वतीने कहा अम्माजान करेंगी जिसप्रकार अब तक करतीथीं शङ्करदत्तने कहा इनके बन्दोबस्तको देखलिया बीस रुपया महीना जिसघरमें आताहो उसघरकी यही सूरत है कि न अच्छाकोई बर्तनहै न इज्जतकी कोई चीज जो किसी समय एक चिमचा शरबत दरकार होतो परमेश्वरने चाहा उसका सामान भी घरमें न निकले सरस्वती ने कहा अम्मा जानका इसमें क्या दोष है लच्छी मिशायन ने घरको सत्या नाशकिया पण्डितशङ्करदत्तबोले इनमेंगृहस्थीके करनेकीबुद्धि होतीतो मिशायन का क्या दावा था मिशायन नौकरथी या घरकी मालिकनथी सरस्वती ने कहा पच्चीस वर्ष का जब पुराना नौकर लूटनेपर कमरबांधेतो उसके धोखेको कौनजान सक्ता है ऐसे पुराने आदमीपर तो शुबहा भी नहीं हो सक्ता शंकरदत्त बोले तुमको आखिर शुबहा हुआ या न हुआ सरस्वतीने कहा मुझको क्या शुबहाहुआ उसकी शामत और बुरे दिनथे कि उसने मुझको छोड़ी अपने आप खराबी ली

इतनेमें सासबोली पचासमें तो तुम अपने अकेले दमके वास्ते तीसरुपया रक्खो और यहां कुनबेके लिये बीस रुपया शंकर दत्तने कहा घरकाखर्च बाहरका खर्चकहीं बराबर होसक्ता है तुमने तो मुझको अकेला समझलिया और खिदमतगार सवारी मकान कपड़ा लत्ता भी तो इसीमें है बोहूने कहा कि सवारी और मकान तो सरकार से मिलता है शंकरदत्त ने कहा घोड़ा मिला दाना घास तो अपने गिरहसे खिलाना पड़ता है चार रुपयेका साईस और मकान की मरम्मत फिर सरकार दरबारके मुआफ़िक़ हैसियत देनालेना हजारबखेड़े हैं नहीं मालूम मैं किसप्रकार निर्वाह करताहूं सरस्वती ने सासले कहा अम्मा जान बीस रुपये में तकरार करनेसे क्या फ़ायदा जितना मिलता है परमेश्वर का शुक्रकरो यह बीस हमारे नज़दीक हजारोंके बराबरहैं सासने कहा बेटीमुझसे तो इस बीसमें घर नहीं चलता यह सुनकर सरस्वती ने सास को रोका और शंकरदत्त से कहा आप चाहिये दो रुपये और कमदीजिये परंतु जोकुछ दीजिये महीने २ मिला करे जिससमय पैसा नहींहोतातो उधारलेनापड़ताहै और उधार से घरकी रहीसही बरकत भी उड़जातीहै शंकरदत्तने कहा-हिंदुस्तानी सरकारों में तलब मिलनेका दस्तूर बहुत बुराहै कभी छठेमहीने कभी बरसवेंदिन तलब मिलतीहै इस कारण खर्चका बंधेज नहीं हो सक्ता परंतु छदामीलाल से मैं कह जाऊंगा कि महीने के महीने बीस रुपया तुमको दे दिया करेगा सरस्वतीने पूछा कि महाजन बनाजाइयेगा तो बस आप से सूदमांगेगा शंकरदत्त ने कहा नहीं सूद क्या लेगा हमारे सरकारमेंभी इसका लेनदेनहैं वहांसे वसूलआजायगा सरस्वतीने कहातो बहुत उत्तमहै इसप्रकार बीसरुपये तनख़्वाह ठहरी परंतु अम्बिकादत्तकी माता को बुरा लगा और अलग जाकर सरस्वतीसे गिलाकिया सरस्वती ने कहा कि घरतो बीस रुपयेमें मैंचलादूंगी इसका आपकुछ सोच न कीजिये और पण्डितजीतो तीसरुपयेमें नाममें अपनी हैसि-

बात इसकानहीं रखनाकि मुख़्तारी की नौकरीमें पहिले तो
ऊपरसे आमदनी नहीं और जो हुई भी तो पण्डितजी क्यों
लेनेलगे अगरवह आप लोभलेते हैं और दोचार रुपयाघरसे
अधिक भी आयेतो उचित नहीं यहबात सुनकर सासखुशहो
रही सरस्वतीने गुलबासा मियायन को बुलाभेजा और कह
सुनकर दो रुपया खानेपर राज़ी करलिया और जता दिया
कि गुलबासा कोई ऐसीबात नहो कि तुम्हारे भरोसेमें फ़रक
पड़े जिसप्रकार तुम्हारी बड़ीबहिन हमारे मैके में रहती है
उसी प्रकार तुम रहना गुलबासा ने कहा बेटी भगवान उस
घड़ी मौत देवे कि पराये मालपर नज़र करूं ज़रूरत हो तो
तुमसे मांगकर खाऊं पर बेहुक्म नोनतक चखना दोष सम-
झतीहूं दूसरे दिन शंकरदत्त आगरेको सिधारे और ज़रूरत,
को सबचीज़ें सरस्वतीने इकट्ठीमंगवालीं और सदायहदस्तूर
रक्खा कि सस्ते समय पर हर एक चीज़ ले रखती थी मिर्चा
धनियां अनाज, दाल, चावल, खांड़, लकड़ी, कण्डा, आलू,
अरुई, मेथी, शलजम, सोयेकासाग, हरचीज़ वक़्तपर मोलली
जातीथी मियायन मिलाकर घरमें छः आदमी थे दोनों जून
दालरोटी चावल और दो भांति की तर्कारी मियायन बना-
लेती थी और सातवें दिन सादा पुलाव और मीठे चांवलों
के पकने का मामूल था घरमें दोतीन प्रकार की चटनी कोई
चाशनी दार कोई अर्क नाना की कोई सिर्के की दो चार
प्रकार का मुरब्बा बना रक्खा इसके शिवाय शर्बत अनार
नीबू शर्बत, शिकंजबीन शर्बत, बनफ़शा शर्बत, नीलोफ़र
शर्बत,फालसाकी एकर बोतल बनाली और हरतरहका ज-
ख़ीरा सामान घरमें मौजूदरहा करता था बावजूद इससामान
के पन्द्रह से अधिक ख़र्च नहीं होताथा पांच रुपया जोबचते
थे उससे बड़े २ बर्तन और एक बर्तन चाह बनाने का मोल
लिया दोसंदूक बनाये गये दो अलमारियां असबाबकी को-
ठरीमें बैठने की चौकी पुरानी होगई थी वह दुरुस्त कराई दोप-
लंग तैयारहुये खुलासा यह कि सरस्वतीने इसबीस रुपये में

घरको बड़ी रौनक़दी हर वस्तु में बन्दोबस्त और हरचीज़ में किफ़ायतको दखलदिया लक्ष्मी मिश्रायनके समय में यमुनाके वास्ते दोचार पैसेका नित्यसौदा बाज़ारसे आताथा इसवास्ते कि रसोई में कुछनहीं बचताथा अब सवेरे की रसोई जो कुछ बचजाता था वह तीसरे पहर यमुनाके खानेकेलिये रखदिया जाताथा कभी यमुना को वह खाना दिया गया कभी नमक पारा बनादिये गये और जो आठवें दसवेंदिन यमुना कभी चाहा तो बाज़ारसे कुछ मंगवादिया गया इस घरसे जन्मभर भिक्षुक को एक दिन चुटकी आटा या किसी अपाहिज को आधी रोटी नहीं मिलती थी अब दोनों समय दो२ रोटियां फ़क़ीरोंको भीदी जातीहैं घरमें जो असबाब बेढंगी से साग मूलीकी तरह से पड़ा रहता था अब सब वस्तु ठिकाने लगी कपड़ों की गठरियोंमें तो कपड़े अच्छेप्रकार तह किये हुये बंधेहैं अनाज पानी की कोठरी में हर एकचीज़ एहतियात सेरक्खीहुईहैबर्तन साफ़ सुथरेअपनीजगहरक्खे हैं फूलकेअलग और पीतलवासकुटके अलगगोया घरएककलथीजिसकीकील पुर्जेसबदुरुस्त और उसकलकी कुंजी सरस्वतीके हाथमेंथी जब कूकदियाकलअपने मामूलसेचलनेलगी जबसेसरस्वतीने घरका बन्दोबस्त अपने हाथमें लियाऽधारलेना सौगन्धहोगया सरस्वती घरका सबहिसाब एककिताब में लिखा करती थी जब कोई वस्तुहोचुकी फिर आई और गुलबासा ने खबर की कि बीबी दोदिनकाघी औरहै सरस्वतीनेअपनी किताब निकाल करदेखा किकिसदिन कितनाघी आयाथा और कितनेरोज़के हिसाबसे खर्चहुआ गुलबासा ऐसी ईमानदार नौकर थी कि मुमकिन नहीं था कि कोई चीज़ फ़ज़ूलखर्च होया बेहिसाब उठजाय पिसाई वालोंकी पिसाइयां और धोबिनकी धुवाइयां तकसरस्वतीकी किताबमें लिखीजातीथी जबहर एकचीज़का बन्दोबस्त होगया तो सरस्वतीने दूसरे कार्यों को देखना आरम्भ किया अम्बिकादत्त पढ़ता लिखतातोथा परन्तु उस बेतदबीरी और बेशौक़ी से जिस तरह ... ...दसुर मुख्तार लड़के पढ़ा

करते हैं बाप तो इसके बाहर रहते थे बड़े भाई मे सिर्फ़ अढ़ाई
वर्षकी छुटाई थी इसलिये अम्बिकादत्तपर बड़े भाईका दबाव
कमथा सुबहशाम अम्बिकादत्त सबक़ पढ़लेता था और फिर
अपने हम जोलियों में गंजीफ़ा शतरंज चौसर खेला करताथा
बाज़ दफ़ाखेलमें ऐसामसरूफ़होता किपहररातगये घर आता
सरस्वती को यहहालतोमालूमथा परंतुमौक़ा ढूंढ़तीथी कि
ऐसेढबसे कहनाचाहिये कि बुरामालूम नहो एकदिन बहुत
रातगये अम्बिकादत्तआया और शायदबाज़ीजीतकर आया
था इससे खुशथा आतेही साथभोजनमांगा गुलबासा मिस्रायन
खाना गर्मकरने दौड़ीगई अम्बिकादत्त समझा अभी मिस्रायन
पकारहीहै पूछा मिस्रायनअभीतक तुम्हारीडेगची चूल्हे सेनहीं
उतरीसरस्वतीने कहाकई बेरउतरकर चढ़चुकीहै ऐसेसमय
तुमभोजनकिया करतेहो किरसोई ठंढीहोकरमिट्टीहोजाती
है तुमऐसा उपाय क्योंनहीं करते कि सवेरे भोजन कर लिया
करो तुम्हारे इन्तिज़ार में अम्मा जान कोभी नित क्लेश होता
है अम्बिकादत्त ने कहा अये तुमलोग मेरे आसरे बैठे रहते
हो मैंतो जानताथा कि तुमभोजनकरलिया करते होगे सर-
स्वतीनेकहा पुरुषों के पहले स्त्रियोंका खाना कब उचित है
अम्बिकादत्तने कहा दो चार दिनकी बातहोतो कटसक्ती है
इसमें हठकी क्या बातहै तुम भोजनकरलिया करो सरस्वती
तो उससमय चुपहोरही परन्तु कोठेपर अम्बिकादत्त ने फिर
आप छेड़कर इसी बातको कहा सरस्वतीनेकहा आश्चर्य की
बातहै तुम अपने दस्तूर के खिलाफ़ नहीं करसक्ते और हम
लोगोंसे चाहतेहो कि हम अपने दस्तूरके खिलाफ़करैं तुम्हीं
सवेरे चलेआयाकरो अम्बिकादत्तने कहा भोजनपानेकेपीछे
मेरा बाहर निकलने को जी नहीं चाहता और मुझको नींद
देरको आतीहै घरमें बेकाम कार्यपड़े २ जी घबरातीहैइस-
लियेमैं देरकरके आताहूं कि भोजनके पीछेसोरहूं सरस्वती
ने कहाकि कामकाज तो अपने आधीनहै अगर आदमी अ-
पने वक़्तोंका बन्दोबस्तकरे तो हज़ारों कामहै एक पढ़ने का

शग़ल क्या कम है मैं अपने बड़े भाईको देखा करती थी कि आधीरात तक किताब देखते और जिसदिन संयोग से सो जाते तो बड़ा पछताव किया करते थे तुमपढ़नेमें कममनलगाते हो इसकारण बेशग़लीसे तुम्हारा जी घबराता है अम्बिकादत्तने कहा और क्या मनलगाऊं दोनोंसबक सबकापढ़लेताहूंयादकर-लेताहूं सरस्वतीनेकहा नहीं मालूम तुमकैसापढ़नापढ़तेहो जिसदिनमियांयनकाहिसाबकिताबहोताथा औरअम्माजान तुमसे हिसाब पूछतीथीं तो तुम बतानहीं सक्तेथे मुझकोशर्म आतीथी अम्बिकादत्तने कहा हिसाब दूसरी चीज़है मैंअरबी फ़ारसीपढ़ताहूं उससे और हिसाबसे क्या तअल्लुक्त सरस्वती ने कहा पढ़ना लिखना इसी वास्ते होताहै कि अपना कोई काम अटका न रहे बड़े भाई अरबी फ़ारसी बहुत पढ़गये हैं परन्तु नौकरी नहीं मिलती अब्बा कहा करते हैं कि जबतक हिसाब किताब और कचहरीका काम न सीखोगे नौकरी का ध्यान मतकरो छोटाभाई रामदत्त मदर्सेमें पढ़ताहै और हिसाब किताबमें बड़ेभाईसे जियादा होशियार है और अब्बा उससे बहुत खुशहैं और कहतेहैं कि चार वर्ष मदर्सेमेंऔर पढ़ो तो तुमको कहीं नौकर करादेंगे अम्बिकादत्त ने कहा मदर्सेमें कमउमरआदमीको भरतीकरतेहैं मेरी उमरअधिक है सरस्वतीने कहा मदर्सेमें जाने पर क्या है यों शहर में क्या सिखानेवाले नहीं है जितना समय तुम खेलकूदमें गंवातेहो पढ़ने लिखनेमें लगाओ अम्बिकादत्तने कहा खेलक्या मैं दिन रात खेलताहूं कभी घड़ी कभी दो घड़ीको बैठगयासरस्वती ने कहा खेलना अफ़यून कीभी चाटहै थोड़ेसे शुरुअ होकर बढ़तीजातीहै इहांतक कि लत परजातीहै फिर छूटनाकठिन होताहै पहलेतो ये खेल दोषहैं दूसरे मनुष्योंको पढ़नेऔर कामकी बातें हासिल करनेसे रोकतेहैं कामकार्य के मनुष्य ऐसे खेल नहीं खेलते निकम्मे लोग अलबत्ता इसप्रकार दिन काटतेहैं इनखेलोंमें जैसा दांवजीतनेसे मनप्रसन्नहोताहै हा-रनेसे दुःखभी बहुत प्राप्तहोताहै और जिसप्रकार उस आनन्द

की कुछ जड़ नहीं होती उसप्रकार यह दुःख भी नाहक का होताहै और बहुधा खेलते २ आपसमें मुफ़्तकी तकरार भी होजातीहै मेरी सलाहमानो तो इन खेलों को बिलकुल छोड़ दो लोगतुम्हारे मुंहपरतो कुछनहीं कहते परन्तु पीछे हंसते हैं परसोंकी बातहै कि तुमको कोई आदमी बुलानेआया था मिश्रायननने अन्दरसे जवाबदिया कि बाहर गयेहैं उस पुरुषने अपने साथवालेसे कहाकि मियां इमामबख़्श रंगीकेमकान पर चलोवहां शतरंजके जमघटमें मिलेंगे अब्बाजानकाशहर में बडानामहै ऐसीजगह जाने से नाम बदहोताहै और मैंने अब्बाजानको अफ़सोसकरते सुनाकि हाय हमारे भाग दो लड़कों में कोई ऐसा न हुआ कि उसको देखकर जी प्रसन्न होता परमेश्वरीदत्तको कुछ लिखाया पढ़ाया था वह अपनी नौकरीके पीछे ऐसा पड़ाहै कि लिखना पढ़ना सब भूलगया है ये छोटे साहबहैं इनको खेलकूदसे छुट्टी नहीं बल्कि हमारे अब्बाकोभी किसीने इसकी ख़बर करदी मुझसे पूछते थे मैंने कहा सब झूठहै अगर ऐसी बात होती तो मुझको मालूम होता सरस्वती की नसीहत ने अम्बिकादत्त पर बहुत असर किया और उसने खेलना बिलकुल छोड़दिया अब पहिले के बनिस्बत अरबी फ़ारसीपर ज्यादह मेहनत करनेलगा और एक दस्तूरसे मदर्सेके बाहर हिसाब किताब वग़ैरहभी सीखना आरम्भ करदिया परमेश्वर ये समय में बड़ी बर्कत दीहै उसको बंदोबस्तके साथ बरतने से अम्बिकादत्त की इस्तादाद अरबी और फ़ारसी की बहुत दुरुस्त होगई और हिसाब रयाज़ी कीभी कई किताबें निकल गईं अम्बिकादत्त तोइधर मसरूफ़ रहा सरस्वतीने एक और कारख़ाना इसी बीच में जारी किया इस महल्ले में पण्डित ईश्वरी प्रसाद बड़े नामी गिरामी आदमी थे ईश्वरी प्रसाद तो सरकार महाराजा बलिराम पुरमें दीवान थे परन्तु घरबार लड़के बच्चे सब इसी महल्लेमें रहतेथे मकान बाग़ नौकर चाकर बड़ा कारख़ाना था पण्डित ईश्वरीप्रसादके छोटे भाई अयोध्याप्रसादमहाराजा

कपूरथला के सरकार में मुद्दत तक मुख़्तार कुल रहे जब उस सरकारमें दीवान रामयशको बड़ा अख़्तियार हुआ मसलहतवक़्त समझकर नौकरी छोड़कर घरचलेआये परन्तु लाखों रुपया घरमेंथा नौकरी की कुछ परवाह न थी हज़ारों रुपये की रियासत शहर में ख़रीद करली थी सैकड़ों रुपये माहवारी किराया चला आताथा बड़े शान से रहतेथे ड्योढ़ीपर सिपाहियों का गारद अंदर बाहर तीस चालीस आदमी नौकर घोड़ा हाथी पालकीयग्घी सवारीको मौजूद अयोध्याप्रसाद कीदो बेटियां थीं गुलाब कुंअरि और महताब कुंअरि गुलाबकुंवरि पण्डितचंडीदत्तके बेटेसेब्याहीगईथी परन्तुब्याहके पीछेसे नामवाफ़क़त कि ससुरालमें आना जाना बन्दहोगया महताबकुंवरि की मंगनी पण्डित रामप्रसाद दीवान महाराजा रीवांसे ठहरी हुईथी इन लड़कियोंकी मौसी गुलवास कुंअरि उस महल्लेमें रहतीथी जिसमें सरस्वतीका मैकाथा उस महल्लेमें तो सरस्वती की लियाक़त का शुहराथा गुलवास कुंअरि सरस्वतीके हालसे ख़ूब वाक़िफ़थी कई मर्तबह उसको देखाथा गुलवास कुंअरि अपनी छोटी बहिन महताब कुंअरि की मातासे मिलनेको आई संसारका दस्तूरहै कि कोई आदमी दुःखसे ख़ाली नहीं और यह बात कुछ परमेश्वर की तरफ से है जो हरतरफ से आनन्द होतो आदमी परमेश्वरको भूलकरकेभी याद न करे और न अपनी तईं परमेश्वरका दास समझे गुलवास कुंअरिकी छोटी बहिन फूल कुंवरि को संसार के सब आनन्द प्राप्तथे परन्तु लड़कियों के तर्फ़ से दुखी रहा करती थी उधर गुलाबकुंवरि ब्याह बरात होने के पीछे घर आकर बैठी थी इधर महताब कुंअरि के मिज़ाज की बुनियाद ऐसी बुरी पड़ी थी कि घर में सब से बिगाड़था न माताका लिहाज़ न बहिन का दबाव न पिता का डर नौकरहैं सो आप चिल्ला रहेहैं चेरियां है सो पनाह मांगतीहैं ग़र्ज़ कि महताब कुंअरि सब घरको सिरपर उठाये रहती थी गुलवास कुंअरि के आने से चाहे कि बड़ी मौसी

समझकर महताब कुंअरि घड़ी दो घड़ी को चुप होकर बैठ जाती क्या फ़िकिर गुलबासकुंअरि को पालकीसे उतरते देर नहींहुईथी कि लगातार दोतीनफ़र्यादें आईं बसंतीरोते हुये आई कि देखिये छोटीसाहबज़ादी ने मेरा नया दुपट्टा फार २ कर डाला लल्ली ने शोर मचाया कि महताब कुंअरि ने मेरे गलेमें चकोता भरलिया मेहंदिया बलबला उठी कि मेरा कान नोच लिया दाई चिल्लाई कि देखिये मेरी लड़की के ऐसे ज़ोर से लकड़ी मारी कि बाजूमें बद्धी पड़गई रसोई से मिश्रायन ने दुहाईदी कि देखिये पतीलियोंमें मुट्ठीभर २कर राख झोंक रहीहै गुलबासकुंअरिनेपुकारा किमहताबोयहांआवोमौसी की बोली पहिचान कर महताबकुंअरि चली तो आई परंतु सलाम न प्रणाम हाथोंमें राखपावोंमें कीचड़ इसी प्रकार दौड़ मौसी से चिमट गई मौसीने कहा महाताबो तुम बड़ी शोखी करनेलगी महताबकुंअरिने कहा इसीलल्ली चुड़यलने फ़र्याद की होगी यह कह कर मौसी के गोद से निकल लप झपकर लल्लीका सिर नोचखसोट लिया बहुतेरी मौसी,ऐं २ करती रही एक न सुनी तब गुलबासकुंअरि अपनी बहिन से बोली कि फूलकुंअरि इस लड़की को परमेश्वर के लिये तो दुरुस्त करो यह बेपढ़े दुरुस्त नहीं होगी फूलकुंअरिने कहा मैंमहीनोंसे एकस्त्री कीतलाशमेंहूं जोपढ़ना लिखना सिख-लावे परनहींमिलती गुलबासकुंअरिनेकहाकितुम्हारे महल्ले में पंडित शंकरदत्त की छोटी बहू लाखलियोंमें पढ़ी लिखी एक स्त्री है फूलकुंअरि ने कहा मुझको आजतक ख़बरनहीं देखो मैं अभी आदमी भेजती हूं यह कहकर अपने घर की मिश्रायन को बुलाया और पूछा कि कोई पंडित शंकरदत्त इसमहल्ले में रहतेहैं बहिन कहतीहै कि उनकी छोटी बहू बहुत पढ़ीलिखीहैं उनको लिवालाओ अगर नौकरी करें तो खाना कपड़ा दशरुपयेमहीना देनेको हमहाज़िरहैं औरजब लड़की पढ़लिख जायगी और [illegible] सीखजायगी तो रसोईके अलावा हम उनको खुशकरदेंगी मिश्रायनने शंकर

दत्त के घरमें आई और अम्बिकादत्तकी माता से पूछने लगी कि शंकरदत्तकी स्त्री तुम्हीहो गुलबासा मिश्रायनने कहा हां यहीहैं आवोबैठो कहांसेआई मिश्रायनने कहा तुम्हारीछोटी बहू कहांहै अम्बिकादत्तकी माताने कहा कोठेपरहै मिश्रा-यनने पूछा मैं उनकेपास ऊपरजाऊं गुलबासा ने कहा आप अपना पता निशान बताइये बहू यहां आजांयगी मिश्रायनने कहा मैं पंडितअयोध्याप्रसाद के घरसे आईहूं अम्बिकादत्त की माताने सबछोटे बड़ोंकी खैरसल्लाहपूछी और मिश्रायन सेकहा बहूसे क्याकामहै मिश्रायनने कहा बहूआवैं तो कहूं जोकि सरस्वतीके नीचे उतरनेका समयभी आगयाथा थोड़ी देर पीछे सरस्वती नीचे उतरआई सरस्वतीको मिश्रायन ने देखाऔरबात चीतकी तो नौकरीकेवास्ते कहते हुये संकोच किया परन्तु बातों२मेंयहकहाकि फूलकुंअरिको अपनी छोटी लड़कीका पढ़ाना मंजूरहै उनकी बडीबहिनगुलबासकुंअरि ने आप का ज़िकिर किया तो फूलकुंअरि ने मुझ को भेजा सरस्वतीने कहा दोनों बीबियोंको मेरीतर्फ़से प्रणाम कहना और यहकहना जो कुछ भला बुरा मुझको आता है उसके सिखाने पढ़ाने में किसी प्रकार संकोच नहीं इसवास्ते कि आदमी इसीलिये पढ़ताहै किदूसरेकोफ़ायदा पहुंचावै और गुलबासकुंअरि को तो मालूम होगाकिमैं अपनेमैकेमें कितनी लड़कियों को पढ़ातीथी और मेरा जी बहुत चाहता है कि फूलकुंअरिकी लड़कीको पढ़ाऊं परंतुक्याकरूं नतो फूलकुंअरि लड़कीको यहांभेजैंगी और नमेराजाना होसक्ताहै मिश्रायन ने दमाहेकातो साफ़नामनलिया परन्तुदबी जबानसे कहाकि फूलकुंअरि सब प्रकारकेखर्च पातकी ज़िम्मेदारी भी करनेको मौजूदहैं सरस्वतीनेकहा यह उनकीकृपाहै और उनकीरि-आयतपर यहीबात शोभितहै परन्तुउनके पड़ोसमें हमग़रीब भीपड़ेहैं परमेश्वरमंगा भूखानहींरखताहै बेदामोंकी चेरीबन करसेवा करनेको मैंहाज़िरहूं और दमाहादार पढ़ानेवाले दरकार हैं तो शहरमें बहुत मिलेंगे इसकेपीछे मिश्रायन ने

सरस्वती का हालपूछा और जब यह सुना कि यह तहसील-
दारकी बेटी है और पंडितशंकरदत्तभी पचास रुपये महीनेके
नौकर हैं तो मिश्रायनको बहुतलज्जाहुई नौकरी का इशारा
नाहक किया परन्तु सरस्वती की बातचीत सुनकर मिश्रायन
लट्टू होगई हरचंद अमीरी घरके कारखाने देखेहुये थी परंतु
सरस्वतीके साफ़ और मीठे वचन सुनकर मोहित होगई और
मअज़िरतकी कि बीबी मुझको माफ़करना सरस्वतीने कहा
क्यों तुममुझको कांटोंमें घसीटतीहो पहिले तो नौकरी कुछ
गालीनहीं ऐब नहीं दूसरे अनजानमें जो तुमने पूछा क्याडर
है ग़रज़ मिश्रायन विदा हुई और घरमें आकर कहा कि बीबी
शंकरदत्तकी बहू लाख पढ़ी हुई स्त्रियोंमें एक स्त्री है जिसकी
सूरत देखने से आदमी बनजाय पास बैठे मनुष्यता प्राप्त हो
छांह पड़जानेसे गुण सीखे और हवा लगजानेसे अदब पकड़े
नौकरी करनेवाली नहीं तहसीलदारकी बेटीहै रईस आगरे
के मुख्तार की बहू घरमें मिश्रायन और टहलुई नौकर हैं
दालानमें चांदनी बिछीहै सोज़नीगाव तकिया लगीहै अच्छे
विधिसे जीवनकर रहीहैं भलाउनको नौकरीकी क्यापरवाह
है गुलबास कुंअरिबोली सचहै फूलकुंअरि तुमने मिश्रायनको
भेजातोथा परंतु मुझको भरोसा न था कि वे नौकरी करेंगी
मिश्रायनने कहा परंतु वे तो ऐसी अच्छी आदमी हैं कि संतही
पढ़ानेसे राजीहैं फूलकुंअरिने पूछा कि यहां आकर पढ़ायेंगी
मिश्रायनने कहा भलाजो नौकरकी आसनहीं रखता वह यहां
क्यों आनेलगा-फूलकुंअरि ने कहा फिर लड़की वहां जाया
करेगी गुलबासकुंअरिने कहा इसमें क्याडरहै दो क़दमपर तो
घरहै और शंकरदत्त को क्या तुमने ऐसा बेइज़्ज़त समझा है
हमारे भाईके ससुरेके चचेरे भाइयोंसे हैं फूलकुंवरिने कहा
फिर तो हमारे जात पांत की हैं गुलबासकुंवरिने कहा तो
परमेश्वर न करे कुछ ऐसीवैसी नहीं पहिले इनकाकाम खूब
बनाहुआ था जबसे रईस बिगड़ा बिचारे ग़रीब होगये फिर

भीदो एक आदमी सदा घरमें नौकर रहते हैं फूलकुंवरि ने

कहा अच्छा महताबकुंवरि वहीं चली जायाकरेगी अगले दिन गुलबास कुंवरि और फूलकुंवरि दोनों बहिन महताब-कुंवरि को लेकर सरस्वतीके घर आईं गोकि सरस्वतीके यहां ग़रीबी सामान था परंतु उसके इन्तिज़ाम और बन्दोबस्त के ढंगसे उन दो स्त्रियोंका वह आदरभाव हुआ कि सबप्रकार की वस्तु बैठे २ प्राप्त होगई दो चार प्रकारका इतर, चौघड़ा, इलाइची, चिकनी डली, बातकी बातमें सबआगया अच्छे २ मज़े की गिलौरियां तैयारहोगईं दोनों बहिनों ने खाईं और सरस्वती से कहा कि कृपा करके इस लड़की को मनसे पढ़ा दीजिये सरस्वतीने कहा पहिले तो आप मुझको क्या आता है परंतु दो चार अक्षर बड़ोंकी कृपासे आतेहैं उसकेबतानेमें अपनी शक्तिभर उठा न रक्खोंगी चलते हुये फूलकुंवरि एक अशर्फ़ी सरस्वती को देनेलगी सरस्वतीने कहा कि इसकीकुछ ज़रूरत नहीं भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि मैं पढ़वाई आपसे लूं फूलकुंवरि ने कहा भगवान २ करो पढ़वाई देने के वास्ते हमारा क्या मुंहहै आज महताबकुंवरि विद्याआ-रम्भ करेगी इसकी मिठाई मंगाकर बच्चोंको बांटदीजिये सर-स्वती ने अशर्फ़ी फेरदीकहा एकअशर्फ़ीकी मिठाई क्याहोगी सेर आधसेर मिठाई बांटनेको बहुतहै यह कहकर गुलबासा मिश्रायन की तर्फ़ इशाराकिया वह कोठरीमें से एक थाली भरकर बताशे निकाल लाई सरस्वती ने गणेश का पूजन करके थोड़े २ बताशा गुलबास कुंअरि और फूलकुंअरि को दिये और फिर भरीहुई थाली गुलबासा को उठादी किबच्चों को बांटदो फूलकुंअरिने कहा अच्छा तुमने मुझको शर्मिन्दा किया सरस्वती ने कहा कि हम बिचारी ग़रीब किस लाय-क़ हैं परन्तु यहां जो कुछहै वहभी आपहीका है अलबत्ता मेरा देना वही है कि महताब कुंअरि को पढ़ादूं भगवान वह दिन करे कि मैं आपसे सुर्ख़रू हूं ग़र्ज़ लल्लोपत्तो की बातें हो हुआकर गुलबासकुंअरि और फूलकुंअरि चली गई और महताब कुंअरिको सरस्वतीको सौंपगई सरस्वतीनेजिस

ढंगपर सहतावकुंअरि को पढ़ाया जो वह विस्तार पूर्वक लिखा जाय तो एक अलग पोथी बनजाय परंतु संक्षेप हाल इस जगह लिखा जाता है कि महातावकुंअरि के बैठते ही महल्ले का महल्ला टूटपड़ा जिसको देखो अपनी लड़की को लियेचलाआताहै परंतुसरस्वतीने भले आदमीकीलड़कियोंको चुनलिया और कमीनों की लड़कियों को इसबहाने से टाल दियाकिमैं आयदिन अपनी माताकेघरजाती रहतीहूं पढ़ना पढ़ाना जब तक जमकार न हो बेफ़ायदा है फिर भी बीस लड़कियां पढ़नेबैठीथीं परंतुसरस्वतीको किसी लड़की से लेने लिवाने की सौगन्ध थी एक दो रुपिया इनका लड़कियों पर खर्चहोजाता था सवेरेसे दोपहर तक पढ़ना होता था और फिर भोजन के लिये चार घड़ी की छुट्टी इसके पीछे लिखना छः घड़ी दिनरहेसे सीना सीने पिरोने का काम गुंजाथी था इसकारण कि न सिर्फ़सीना सिखलायाजाताथा बल्कि अनेक प्रकार की जाली काढ़ी जाती थी अनेक भांति की सिलाई होतीथी मसाला बताना और टांकना जाली काढ़ना पहले तो सरस्वतीको सब सामग्रीके इकट्ठाकरने में दशरुपया खर्च हुआ परन्तु फिर तो उसीकामसे बचतहोने लगी जो काम लड़कियां बनाती गुलवासा उसको चुपके से बाजार में बेंच-लाती इसप्रकार धीरे २ पाठशालाकी एक रक़म जमाहोगई जो लड़की गरीबकंगालहोती उसीरक़मसे उसके वस्त्रबनाये जाते पुस्तकें मोललेदी जातीं लड़कियोंके पानी पिलाने और पंखाझलनेके लिये एकखवासी नौकरथी और मदर्सेकी रक़म से उसकी तलब मिलती थी लड़कियों का यह हाल था कि और स्त्री पढ़ानेवाली के पास लड़कियों का जाते हुये प्राण निकलताथा परन्तु सरस्वतीकी विद्यार्थिनी उसपर मोहित थीं अभी वह सोके नहीं उठी आपसे आप आने शुरू हुईं और पहर रातगये तक जमआरहती थीं और घरको बेमन जातीथीं इसकारणकि सरस्वती सबके साथ मनसे प्यारकरती थीं और पढ़ानेका क़ायदह ऐसा अच्छारक्खाथाकि बातोंर में

तालीमहोती थी न यहकि सवेरे २ से २ का चर्खाचला तो दिन छिपेतकबन्द नहीं होता जिसप्रकार सरस्वतीको उसके बापने पढ़ाया था उसीप्रकार सरस्वती अपने विद्यार्थिनियों को पढ़ातीथी पस वे लड़कियां शागिर्द की शागिर्द और सहेली की सहेलीथीं जबकिसी लड़कीका व्याह हुआ बड़ेसे बड़ी रक़मसे उसको थोड़ा बहुत गहनादिया जाताथा अगर सरस्वती अपने पाठशालाको बढ़ाना चाहती तो सारे शहर की लड़कियों के पाठशाला उजाड़ होजाते सैकड़ों स्त्रियां अपने लड़कियोंके हेतुखिरौरी और बिनतीकरतीथीं और आप लड़कियां दौड़ २ आतीथीं इसकारण कि और पाठशालोंमेंदिन भरकी क़ैद पढ़ानेवालियोंकी टहलीपढ़ना कमसारखाना और कामकरना बहुत दिन भरपढ़ तो सिर्फ़ दो अक्षर सवेरे से संध्यातक मामूली मार और जहां चुपकी और पढ़ानेवाली की नजर पड़ गई आफ़तआई और कामको पूंछो तो तड़के आने के साथ घरमें झाड़दी बिछौना तहकिये और चार २ पांचने मिलकर कम्बख़्त भारी बोझल चारपाइयां उठाईं और फिर उस जगह बिछौना बिछाकर पढ़ने बैठीं जिससमय मुंह से आवाज निकली पढ़ानेवाली औरतने बनैठी फेंकनीआरम्भ करदी और दो चार जो किछुअच्छी का मुंह देखकर उठीथीं कामधंधे में लगगईं किसी ने पढ़ानेवाली औरत का लड़का गोद में लिया बोझके मारे कूला टूटाजाता है परंतु मार के डरसे गर्दन पर बलासवार है और समय टालती फिरती हैं बैठीहुई लड़कियोंकी आवाज कानमें चलीआतीहै दिलहैकि अन्दरही अन्दरसहमाजाताहै मारकेआवाजसे यह मुसीबत भली मालूमहोतीहै किसी ने रातके जूठेबर्तन मांजने शुरूअ किये कि घट्ठे पड़ पड़गयेहैं और गन्दे रह रहजाते हैं परंतु छोटी बहिन पिटरही है और चिल्लारही है कि अच्छी बी मैं मरगई अच्छीबी परमेश्वरके लियेछोड़ दो हायरी २ जयअम्मा जय बाबा अच्छीमैं तुमपर वारीगई और दीदी हैंकि झांय झांय जल्दी २ बर्तन मांजरहीहैं इनकामों से फ़ुरसत हुई तो

मसाला पीसने आटा गूंधने आग सुलगाने का समय आया
फिर दो पहर को पंडितायन हैं कि सो रहीं हैं और मालूम
नहो पंखा झल रहीं हैं और दिल में दुआ मांग रही हैं कि पर-
मेश्वर ऐसी सोवें कि फिर न उठें ग़र्ज़ और मदरसों में यह मुसी-
बत रहती है सरस्वती के यहां न मार न धाड़ बड़ा डर यह था
कि सुनो तुम अपना सबक़ याद नहीं करती तो तुम्हारे सबब
से हमारी पाठशाले का नाम बद होता है मैं तुम्हारी माता को
बुलाकर कह दूंगी बी तुम्हारी लड़की यहां नहीं पढ़ती तुम
किसी दूसरी पाठशाले में पढ़वाओ इतना कहना था कि ल-
ड़की का दम निकला फिर सबक़ है कि ज़बान पर याद है या
जिसने सबक़ याद नहीं किया उस से कहा कि आज तुमने
सबक़ याद नहीं किया और लड़कियां दोपहर के बाद सियेंगी
और तुम पढ़ना यह कहना था कि उसने जल्दी २ सबक़ याद कर
लिया न यहां पाठशाला में झाड़ू देनी है न बिछौने उठाने हैं
न चारपाइयां ढोनी हैं न बर्तन मांजने न किसी की सेवा करनी
है बल्कि इन लड़कियों पर एक टहलुई नौकर है इस पाठशाले
में पढ़ना लिखना सीना तीन काम लड़कियों को सिखलाये
जाते हैं इन्द्रकुंअरि एक स्त्री इस महल्ले में रहती थी चांदकुंअरि
उसकी बेटी कोई दश वर्ष की होगी उस चांदकुंअरि को पढ़ने
और लिखने और सीने पिरोने का बड़ा शौक था इन्द्रकुंअरि यह
चाहती कि चांदकुंअरि सारे घर में झाड़ू देती पेपोते बर्तन मांजे
ऐसे कामों में चांदकुंअरि का जी न लगता माता के कहने सुनने
से करतो देती मगर बे मनसे इन्द्रकुंअरि जो एक दिन चांद
कुंअरि से नाराज़ हुई तो साथ ले जाकर सरस्वती की पाठशाला
में बैठा आई और कहा बीबी यह लड़की बड़ी निकम्मी है जिस
कार्य को कहती हूं टकासा जवाब दे देती है इसको ऐसा
अदब सिखलावो कि घर के कामकाज पर इसका जी लगे सरस्वती ने
जो देखा तो चांदकुंअरि को अपने ढब का पाया उधर चांद-
कुंअरि को पढ़ाने वाली अपनी मर्जी के अनुसार मिली नूर के
तड़के आती तो दो पहर को भोजन करने जाती भोजन खाया

और भागी पानी पाठशालामें आकर पीती और तीसरे पहर की आई२ कहीं चारघड़ी रातगये जाती कभी२ इन्द्रकुंअर इसको सुधलेने पाठशालेमें आती तो कईबार उसकोलड़कियों के साथगुड़ियां खेलते देखा दो चार बार छिंडकुलिया पकाते एकदिन चार घड़ी रातगई होगी चांदकुंअरि कोजानेमें देर हुई इन्द्रकुंअरि उसको लेनेआई तो क्या देखतीहै कि यमुना कहानियां कहरहीहै और पाठशालेकी सब लड़कियां आस पासबैठी और सरस्वती भी लड़कियों में बैठी हुई कहानियां सुन रहीहै तबतो इन्द्रकुंअरि का जी जलकर खाकहोगया और बोली वाह बीबी अच्छा तुमने लड़कियों का नाश कर रक्खाहै जब कभी मैं चांदकुंअरिको देखने आई कभी इसको मैंने पढ़ते न पाया पाठशाला क्याहै यह तो अच्छा खेलघरहै तभी तो लड़कियाँ दौड़२ आतीहैं सरस्वतीने कहा किबीबी जो तुम्हारी मर्जीके अनुसार तुम्हारी लड़कीकी तालीमनहीं होती तो तुमको अखतियारहै अपनी लड़कीको उठालेजाओ परंतु पाठशालेमें वे अर्थका दोष मतलगाओ भला मैं तुमसे पूंछती हों कि चांदकुंअरिने बाईजी की पाठशाला में कितने दिन पढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहा तीनमहीने सरस्वतीने पूंछाबा-ईजीके यहां चांदकुंअरिने क्यापढ़ा इन्द्रकुंअरिने कहाअक्षर अभ्यास सरस्वतीने कहा तीन महीने में अक्षर अभ्यास पढ़ा और यहां चारमहीनेसे तुम्हारी लड़की पढ़तीहै चौथाईभाग विष्णु सहस्र नाम और दो पुस्तक नागरी यहां पढ़ चुकी है बाईजी की पाठशाले से कितना अधिक होता है और जब चांदकुंअरि यहांआईथी तो कालीलकीर तक इसकोखींचनी नहीं आती थी अब नाम और थोड़ी बहुत चिट्ठी लिख लेती है कि साथ बमूजिब अक्षरकी बूबेनहीं होते बीस तक पूरी गिनतीनहीं जानतीथी अब पन्द्रहका पहाड़ा यादकरती है सीना कुछनहीं आता था अब इसके हाथ का बखिया देखो लाइयो चांदकुंअरि वह करती जिसमें तूने बखियाकिया है बेग अपनी माताको दिखला चांदकुंअरि ने जिसमें बखिया

कियाथा और टोपियां जिसमें चमेलीका जालकिया था और कामदानी आदि जो काढ़ीथीं दौड़ी२ उठालाई और अपनी माताको दिखाया इन्द्रकुंअरि एक२बातके दाम२ उत्तर पाकर हक्का बक्कासी रहगई सरस्वतीने कहा जो बी कुछ न्यावभीहै चार महीनेमें तुम्हारी लड़की और क्या सीखलेगी इन्द्रकुंअरि ऐसी खिसियानी हुई कि घड़ों पानी पड़गया अब सरस्वती के सामने आंख नहीं मिलासक्ती थी इन्द्रकुंअरि के आजाने से यमुना की कहानी तो रहगई और सबलड़कियां इसके ओर घूर२कर देखनेलगीं इन्द्रकुंअरि ने कहा बीबी मुझको इसकी क्या खबर थी चांदकुंअरि दिनभर तो यहां रहती है रातको ऐसी देरकर जातीहै कि भोजन खाया और सोरही मुझको इससे पूछना गाछना कभी पड़ानहीं दो चार फेरजो मैं इधर को आनिकली तो कभी गुड़िया खेलते पाया कभी छिडकुलिया पकाते कभी कहानियांसुनते इससे मुझकोख्यालहुआ कि यह अपना समय खेल कूदमें खोती है अबतो मेरे मुंह से एक बात निकलगई क्षमाकीजिये सरस्वतीनेकहा तुम्हारा संदेह भी अनुचित नहीं था परन्तु मैं इन्हीं खेलकी बातोंमें इन को कामकी बातें सिखाती हूं छिडकुलियोंमें लड़कियां अनेक प्रकारके भोजन बनानेकी युक्ति सीखतीहैं मसाले का अन्दाज़ नमक की अटकल खाद की पहिचान इनकोआती है क्यों चांदकुंअरि परसों तुम लड़कियोंने मिलाकर कितना जर्दा पकाया था उसकी युक्ति और सबहिसाब किताब हो तो हमको सुना दो चांदकुंअरिने कहा हिसाब तो यमुना ने अपनी पुस्तकमें लिखरक्खाहै परन्तु युक्तितो आपकीआज्ञानुसार मैंने खूब ध्यान लगाकर देखली है और अच्छेप्रकार मेरे समझ में आगई है सेर भर चावलघे पहिले उनकोएक तसले पानीमें भिगादिया धेलेकी हरसिंगारकी डंडियांमंगवाईं तीन पैसेभर मिलीथीं उनको कोई डेढ़सेर पानीमें जोश किया जब उबाल आगया और रंगत आ गई तो छानकर अरक्क में चावल निचोड़कर डालदिया चावल जब अधकचड़े

होगये और एक कनी रहगई तो चावलोंको कपड़े पर फैला दिया कि पानीभर निकल जाय फिर आध पावघी डेगचीमें लौंगों का बघार देकर कड़ कड़ाया और चावलछोड़ दिये ऊपरसे चावलोंके बराबर शक्करडालदी और अट कलसे इतना पानी डालदिया कि चावलों की एक कनी जो रहगई थी गलजाय फिर एक छटांक किशमिश घीमें कड़कड़ा जबफूलगई चावलों में छोड़ दीं और ऊपर तवे अंगारे रखकर दम दे दिया सरस्वतीने चांदकुंअरिसे कहा युक्तितो दुरस्तहै परन्तु चावलों को जो मैंने देखाथा तो बैठगयेथे मालूमहोताहै कि तुमने कपड़े पर फैलाकर ठंढे पानीसे उनको धोया नहींथा फिर सरस्वती इन्द्रकुंअरिकी ओर देखकर बोलीकि क्योंजी चर्दातोतुम्हारी लड़कीनेठीकपकाया यहसबहिडकुलियाका कारणहै फिर यमुनासे कहा तुम अपने चर्दे का हिसाब तो सुनाओ यमुनाजो हिसाबकी बहीउठालाई कहाभाभीजान छःसेरी चावल सेरभर पौनेतीनआनेके और एकपैसेकी हर सिंघारकीडंडियाँ और लौंगेंदोसेरकाघीहै पौनपाव संगाया आधपाव बघारनेवक्त डाला और छटांक भरकिशमिश कड़- कड़ाकर दमदेतेवक्त डेढ़आनेका घीहुआऔर चौसेरी शक्कर सेरभर चारआनेकी एक पैसेकी किशमिश कुलपौनेग्यारह आनेपैसे खर्चहुये दमलड़कियोंकासाझाथा पौने दोआने तो मेरेथे और एक२आना और लड़कियों का सरस्वती ने कहा तुमने हिसाबमें धोखाखायायमुना सोचीतो कहा भाभीजी चावलोंमेंकौड़ियां बचीं बनिये ने हजमकीं अय हय डंडियां और लौंगेंउसमेंआजातीं तो एकपैसाबचता गुलबासोमिस्आ- यन जा तू बनिये से कौड़ियां लेआ सरस्वती ने कहा अय हय क्या करती हो कौड़ियों का सुआ मिला परसौं की बात अब कुछ न कह तुम्हारे भूलकी सजा है अब सरस्वती महताबकुंअरि से बोली चर्दे की युक्ति और लागत तो मालूम हुई भला सेरभर चर्दा तुम सबने क्या किया महताब कुंअरि ने जवाब दिया मझोले दो थाले भरकर परमेश्वर के नामदे

दिये फिर छः तश्तरियां भरी गईं दश लड़कियों में से दो२ ने एक२ तश्तरी ली और छठी तश्तरी में मैं अकेली थी सरस्वती ने पूछा क्या तुमने दोहरा भाग लिया महताबकुंअरि बोली नहीं मेरी तश्तरी आधी थी सबसे पूछ लीजिये सरस्वती ने कहा फिर तुम बिरादरी से अलग क्यों रही महताबकुंअरि तो चुप हुई चांदकुंअरि ने कहा इनको सबके साथ खाते घिन आती है महताबकुंअरि ने कहा घिन की बात नहीं है मैं सबसे पीछे आई इससे अकेली रह गई आप यमुना से पूछ लीजिये चांद कुंअरि ने कहा तुम तो अभी थोड़ी देर हुई मेरा जूठा पानी पीने पर लड़चुकी हो महताबकुंअरि ने कहा मैं लड़ी थी या इतनी बात कही थी कि जितनी प्यास हुआ करे उतना पानी लिया करो गिलास में जूठा पानी छोड़ देना ऐब की बात है फिर सरस्वती ने यमुना से पूछा कि वह पुस्तक जिसमें भोजन बनाने की युक्तें लिखी हुई हैं और जो तुमको मैंने दी है उसमें की सब भोजन बनाने की युक्तें तुम देखचुकी या अभी नहीं यमुना ने थोड़ी देर सोच कर कहा मैं अपनी समझ में वह सब भोजन बनवा चुकी हों बल्कि कई२ बेर नौबत पकवाने की आचुकी है और जितनी बड़ी२ लड़कियां हैं मामूली खानों की युक्ति सबको मालूम है इसके सिवाय पुलाव ज़र्दी मुतञ्जन समोसे मीठे सलोने कसली बड़े दहीबड़े सुहाल सेव घी की तली दाल मोठ चौकड़ियां पापड़ बूंदानी तसमई हलवा सोहन पपड़ी नर्म अन्दसे की गोलियां वग़ैरह सब चीज़ें बहुत बेर पक चुकी हैं और सब लड़कियों ने पकते देखी हैं बल्कि अपने हाथों पकाई हैं और महताबकुंअरि को तो चटनी और मुरब्बा से तो बड़ा शौक़ है ये चीज़ें जैसी वह बनाती है वैसा और लड़कियां कम जानती हैं इसके पीछे सरस्वती ने इंदरकुंअरि से कहा कि बीबी अब तुमको यहां के हिंडकुलियों का फायदा तो मालूम होगया होगा रात ज्यादह गई बाकी लड़कियों के घर दूर हैं अगर कल आओ तो गुड़ियों की सैर भी तुमको दिखायें और शाम तक

रहे तो कहानियां भी सुनवायें सब लोग बिदा ज्ञये अगले दिन जो इन्दरकुंअरि आई तो लड़कियों के कसीदे और लड़कियों के बिनेज्ञये गोटे लड़कियोंके मोड़े ज्ञये गुखुरू लड़कियों की बनाई ज्ञई टोपियां और यमुना लड़कियों के ब्योंत कियेज्ञये और सिये ज्ञये मर्दाने जनाने कपड़े सरस्वतीने सब दिखाये जिसके देखने से इन्दरकुंअरि को बड़ा अचंभा ज्ञआ इसके पीछे लड़कियों के गुड़ियों के घर दिखाये इन घरों में गृहस्थी का सब समान फर्श फरूश गाउतकिया उगालदान चिलमची आफताबा पिटारी पर्दा चिलमन छत गीरी पंखा मसेहरी पलंग हरप्रकार के बर्तन हरप्रकारका सामान आरा यथ अपने ठिकाने से रक्खाज्ञआ था गुड़ियां ऐसीसजी ज्ञईथीं कि आन मान जैसे ब्याह के घरमें पाऊन जसा है जब गुड़ियों के घरोंको देखचुकी तो सरस्वतीने इन्दरकुंअरि से कहा कि लड़कियों के सब खेलों में मुझको गुड़ियों का खेल बज्ञतप्रिय है इसके वसीले से लड़कियां सीना पिरोना कपड़ों की ब्योंत और गृहस्थी का बन्दोबस्त हर त्योहारोंके दस्तूर छठी खीर चटाई दूध चढ़ाई ब्याह बरात वग़ैरह की रीति रस्मों से वकफियत हासिल करती हैं तुम्हारी लड़की अभी थोड़े दिनोंसे आई हैं जो लड़कियां मेरी पाठशाला में बज्ञतदिनोंसे पढ़ीहैं जैसे मेरीनन्द यमुनाऔरमहताबकुंअरिहैमैंसौगन्धखाकरकहती हैंजो इनकोइसीसमयकिसी बड़ेभरेपुरेघरका बन्दोबस्तसौंप दियाजाय तो परमेश्वर रक्खे ऐसाकरेंगी जैसे कोईबड़ीसयानी पढ़ीलिखी स्त्री करतीहै मैं तो पढ़नेपर ताकीद नहीं करती बल्कि इनको संसारके कामबतातीहूं जो थोड़ेदिनपीछे इनके सिरपर पड़ेगा यह कहकर सरस्वतीने महताबकुंअरि को बुलाया और कहा कि बुआ तुम्हारी गुड़ियोंका घर तो अच्छेप्रकार आरास्ता है परएककसरहैकि तुम्हारी गुड़ियों केपास रंगीनजोड़ेनहींमालूम होते शायदतुमको रंगनानहीं आता महताबकुंअरिने कहा रंग तो यमुनाने मुझको बज्ञत सखादिये हैं थोड़ी नहीं रंग सरस्वती ने कहा भला बतओ-

सहीतो महताब कुंअरि बोली बसीत के रंग सुर्ख नारंजी, गुलनार, गुले,शफ़तालू; मईई, धानी ज़र्दा और जाड़ेकेगेंदई जोगिया, उन्नाबी, काही, तेलिया, काकरेजी,सियाह,नीला गुलाबी, ज़ाफ़रानी, कोकई, करंजी, और गर्मी के पियाजी, आबी, चम्पई, कपासी बदामी, काफूरी, दूधिया, खुशखाशी, फालसई सिंदूरिया, रंगतो और बहुत हैंमगर मैंने वहीबयान किये जोअकसरपहनेजातेहैं सरस्वतीने पूछा रंगोंके नामतो तुमने बहुतसे गिनवादिये भलायहतो बताओ यहसबरंगतुम को रंगनेआतेहैं महताब कुंअरिनेकहा मैंने उन्हींरंगों का नामलिये जो मुझको रंगनेआतेहैं सरस्वतीने कहाभलाबता-ओ मईई क्योंकर रंगतेहैंमहताबकुंअरिने कहा काहीकंद अच्छे गहरेरंगकीआधगजभरलेआवाइयेऔर पानीखूबजोशकरके फिटकिरीडालदे ऊपरसे कंदका टुकड़ा डालकर हिला दिया फिटकिरीकीतासीरसे कंदकारंगकटजायगा पसउनमेंकपड़ा रंगलिया सरस्वतीने कहा भला और जो कंद न मिले मह ताबकुंअरि ने कहा तो टेसूकेफूलों का जोशकरके फिटकिरी पीसकरमिलादी मईईहोजायगी परंतु हलका कपासीअच्छा मईई वे कंदके रंगानहीं जाता अगर कंदकीजगह बानातका रंग काटाजाय तो बहुत अच्छा रंग आताहै परंतु इनदिनों मजीठन ऐसाचलाहै कि सब रंगोंको मातकियाहै कपड़े तो कपड़े मिठाई खाने का गोटा मजीठन में बहुत अच्छा रंगा जाता है बड़ी बहिन ने मजीठन के रंगका जर्दा बनाया था ज़ाफ़रान से अच्छा रंगथा सरस्वती ने घबड़ाकर पूछामह-ताबकुंअरि कहीं तुमने तो मजीठन के रंगेहुये चांवल नहीं खाये महताबकुंअरि ने कहा मैंनेखाये तो नहीं परंतुखाने से क्याबुरी बात है सरस्वती ने कहा अयहय मजीठन में संखिया पड़तीहै खबरदार कोई चीज मजीठन की रंगी हुई जबानपरमतरखनामहताबकुंअरिने कहा मैंनेतो मजीठनका रंगाहुआ गोटा बहुतदेखाथाहै सरस्वतीने कहा क्या हुआ थोड़े मजीठनमें तो बहुतेरा गोटारंगाजाता है इसकारणसे

तुमको कुछ नुकसान नहीं किया परंतु याद रक्खो कि इसमें जहर है महतावकुंअरिने कहा मजीठनकी रंगीऊई मिठाई लोग महीनों खाते हैं सरस्वतीने उत्तरदिया बऊत बुराकरते हैं जहर जब मियाद पर पऊंच जायगा जरूर असर करेगा मालूमऊई तो लड़कियां अपनेकसीदे और पुस्तकें रखरखा मासूल बमूजिब खेलने और खाने और पहेलियां कहनेसुननेको आबैठी सरस्वतीने इंदरकुंअरिसे कहा कि हां चुड़ चिड़ियां की कहानियां नहींहोती हैं कहानियों की एक बऊत अच्छी पुस्तक है जिसमें बड़ी अच्छी कहानियां हैं हर एक कहानी से एकनसीहत की बात निकाली है इस पुस्तक की जबान भी बऊत मीठी है अब यह लड़कियां उसी पुस्तककी कहानियोंसे जो बहलायेंगी कहानियां कहने से इनकी बात चीत साफ़होती है मतलबकी बातकी खूबसूरतीसे बयान करनेकी ताक़त बढ़ती जातीहै जब कभी मुझको सावकाश होता है तो मैं कहानियों के बीचमें इनसे उलझतीजातीहूं औरजैसी इनकी समझ है मेरी बातका जवाब देती हैं अगर नादुरुस्त होताहै मैं बतादेतीहूं पहेलियों के बूझनेसे इनकी बुद्धि बढ़तीहै और इनके जिहन को तेजीहोती है तुम इनमें बैठकर सैर देखो मुझको आज अलपकुअंरि की माता ने बुलाभेजा है उनके बच्चेका जी अच्छानहींहै बऊत २ विरौरी बिनती कहला भेजीहै न जाऊंगीतो बुरामानेगी और आप मेराजी भी नहीं मानता इन्दरकुंअरि बोली हां मैंने भी सुनाहै कि उनके लड़के ने कई दिनसे दूध नहीं पिया अय हय परमेश्वर करे जीतारहे दशवर्ष पीछे भगवान ने वह बच्चादियाहै इस के पीछे इन्दरकुंअरि ने कहा बीवी तुमको उन्होंने इलाज के हेतु बुलाया होगा सरस्वतीने कहा इलाज वलाजतो मुझको कुछ भी नहीं आता एकवार पहिले इस लड़के को प्यासहो गई थी मैंने जहरसुहरा, बंसलोचन, गुलाबकालोरा, छोटी इलायची, जीरेकीगरी, कवावचीनी, खुरमा, इसप्रकार चार पांच दवाइयां बतादीथीं परमेश्वरकी कृपासे लड़का अच्छाहो

गया इन्दरकुंअरिने कहा तुमबीबी सब गुणोंमेंपूरी हो सरस्वती बोली इसमें गुणकीक्या बातहै हमारे मैकेमें दवादर्मन होती रहतीहै जबमैंछोटीथीजो दवाआतीमहींउसको छानती बनाती और ध्यानरखती इस प्रकार पर सुनी सुनाई दो चार दवायादहैं जिसको जरूरतहुई बतादी और बच्चोंका इलाज तो स्त्रियां कार करालेती हैं जब ऐसी मुशकिल आ पड़ती है तब बैद डाक्तर के पास ले जाती हैं इन्दरकुंअरि ने कहा बीबी तुमने कृपा करिके मुझको अपनी पाठशाला का बन्दोबस्त तो दिखाया परन्तु परमेश्वर के लिये तनिक क्षण भर ठहर जाओ तो मैं देखूं कि लड़कियां किस प्रकार कहानियां कहती हैं और कहानी में तुम किस प्रकार सिखाती हो सरस्वती ने कहा मुझको देर होती है पर खैर तुम्हारी खातिर है अच्छा लड़कियो आज किसकी बारी है यमुना ने कहा बारी तो इन्दर रानी की है परन्तु चांदकुंअरि से कह लाइये सरस्वती ने कहा अच्छा चांदकुंअरिकोई छोटी सी कहानी कहो चांदकुंअरि ने कहानी आरम्भ की एक बादशाह था सरस्वती ने पूछा बादशाह किसीको कहते हैं चांदकुंअरि बोली जैसे लखनऊ में वाजिदअली शाहथे सरस्वती, यह तुमने ऐसी बात कही जो लखनऊ और वाजिद अली शाह को जानता हो वही समझे चांदकुंअरिने कहा बादशाह हाकिम को कहतेहैं सरस्वती, तो कोतवाल और थानेदार भी बादशाह है, चांदकुंअरि, नहीं कोतवाल थानेदार तो बादशाह नहींहैं ये तो बादशाह के नौकरहैं सरस्वती, क्या कोतवाल हाकिमनहींहै चांदकुंअरि हाकिमतो है परंतु बादशाह सब से बड़ा हाकिम होता है और सब पर हुक्म चलाता है सरस्वती हमारा बादशाह कौन है चांदकुंअरि जब से अंगरेजों ने वाजिद अली शाह से तखत छीनलिया और वाजिदअली शाह कलकत्ते चले गये तब से तो कोई बादशाह नहीं यह सुन कर सब लड़कियां हंस पड़ीं सरस्वती ने कहा चांदकुंअरि तुम बड़ी ना समझ हो

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि वाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तख़्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हज़ारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जवाब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका विक्टोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताब कुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की वलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांचहज़ार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताब कुंअरि, कम्बारीबाज़ार से गुसाईंगंज को सातकोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरहसौ साठ गज़ का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमषारण्य के मेला में गई थी तुमभी मेरे साथ गई थीं तुमनेभी देखा था थोड़े २ दूर सड़कपर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरोंपर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे आधे कोस का मील होता है और हर मीलपर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमषार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां लन्दन किस दिशा में है इन्द्रकुंअरि, उत्तर में है सरस्वती, वह मुल्क गर्म है या ठंढा इन्द्रकुंअरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंढा है जितना उत्तर को जाओ गर्मी कम है और जितना दक्षिण को चलो गर्मी अधिक होती जाती है इन्द्रकुंअरि, अच्छी बीबी बाह बाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्या बात है इन्द्रकुंअरि, आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री राज क्या करती होगी सरस्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती हैं मुल्क का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्द्रकुंअरि, स्त्री तो क्या करती होगी करते सब कुछ अंगरेज होंगे बराय नाम स्त्री को बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज मलिका के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का अधिकार जुदा है अपने२ काम पर सब मुस्तैद रहते हैं और आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी तो नौकर चाकर सब काम किया करते हैं इन्द्रकुंअरि, मेरा जी तो अंगीकार नहीं करता कि स्त्री राज्य करसके सरस्वती, भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्द्रकुंअरि, सुना क्यों नहीं खुद मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती, इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा मुल्क है और मलिका विक्टोरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका विक्टोरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं मलिका विक्टोरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं लाखों नौकर तनख़ाहें भी अधिक हैं इन्द्रकुंअरि, अच्छी बी मलिका का कोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दाग़ लगा दिया है कई वर्ष हुये मलिका रांड होगई इन्द्रकुंअरि मलिका के सन्तान है सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि वाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तख़्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हज़ारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जवाब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका विक्टोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताब कुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की वलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांचहज़ार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताब कुंअरि, कन्धारीबाज़ार से गुसाईंगंज को सातकोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरहसौ साठ गज़ का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमषारण्य के मेला में गई थी तुमभी मेरे साथ गईं थीं तुमनेभी देखा था थोड़े २ दूर सड़कपर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरोंपर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे आधे कोस का मील होता है और हर मीलपर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमषार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां लन्दन किधर है महताबकुंअरि, उत्तर में है सरस्वती, वह मुल्क गर्म है या ठंढा महताबकुंअरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंढा है जितना उत्तरको जाओ गर्मी कम है और जितना दक्खिन को चलो गर्मी अधिक होतीजाती है इन्दरकुंअरि, अच्छी बीबी बादशाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्याबात है इन्दरकुंअरि, आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री जात क्याकरती होगी सरस्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती हैं मुल्क का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्दरकुंअरि, स्त्री तो क्या करती होगी करते सब कुछ अंगरेज होंगे बरायनाम स्त्रीको बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज मलिका के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का अधिकार जुदा है अपनेर काम पर सब मुस्तैद रहते हैं और आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी सबी नौकर चाकर सब काम किया करते हैं इन्दरकुंअरि, मेरा जी तो अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य करसके सरस्वती, भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्दरकुंअरि, सुना क्यों नहीं खुद मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती, इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा मुल्क है और मलिका विक्टोरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका विक्टोरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं मलिका विक्टोरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं लाखों नौकर तनखाहें भी अधिक हैं इन्दरकुंअरि, अच्छी बी मलिका काकोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दागलगा दिया है कई वर्ष हुये मलिका रांड़ होगई इन्दरकुंअरि मलिकाके सन्तान है सरस्वती, हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

में क्यों नहीं आती सरस्वती, वहां भी बड़ा राज्य है वहां के कामों से छुट्टी नहीं मिलती इन्दरकुंअरि, अच्छी मलिकाको हजारोंकोस दूर बैठे यहां की क्या खबर होती होगी सरस्वती, क्यों नहीं तनिक२ सी खबर होती है डाक और तार बिजली पर रात दिन खबरआती जाती है हजारों अखबार वलायत जाते हैं इन्दरकुंअरि, मलिका को किस प्रकार देखें सरस्वती, क्योंकर बताऊं परंतु उनकी तसवीर अलबत्ता देख सकी हो इन्दरकुंअरि, खैर तसबीरही देख लेती सरस्वती बोली बीबी तुम भी अजब तमाशे की औरत हो क्या तुमने रुपया नहीं देखा इन्दरकुंअरि, क्यों नहीं देखा सरस्वती जी का चेहरा जो बना है वह मलिका की तसवीर है चिट्ठियों की टिकट पर मलिका की तसवीर है बल्कि मेरे पास मलिका की एक बड़ी अच्छी तसबीर और है यमुना मेरा संदूकचा तो उठा ला तो यमुना दौड़ी गई और उठा लाई संदूकचे में से सरस्वती ने मलिका की तसवीर निकाल कर दिखलाई और सब लड़कियोंने अति प्रेमसे मलिका की तसवीर को देखा इन्दरकुंअरि, क्या अच्छी तसवीर है अयन मयन मलिका खड़ी है सरस्वती बोली यह तसवीर हू बहू मलिकाकी है रुपयेके चेहरेसे मिलाकर देखो कितना फ़र्क़ है यह तसवीर हाथकी बनाईहुई नहींहै एक आयनाहोता है उसको कुछ मसाला लगाकर सामने रखदेतेहैं खुद बखुद जैसीकी तैसी सूरत उतर आतीहै इन्दरकुंअरि, महताबकुंअरि ने लंदनको पांचहजार कोस दूरबताया तो कहीं बर्षों में यहांसे वहां आते जाते होंगे सरस्वती, नहीं समुद्र२ एक महीने में अच्छे प्रकार से पहुंच जातेहैं इन्दरकुंअरि, अय हय समुद्रहोकर जाना पड़ताहै अंगरेजोंके भी कैसे मन हैं इनको समुद्र से डरनहीं लगता मेरेतो समुद्र के नामसुननेसे रोंगटे खड़े होतेहैं सरस्वती, समुद्र से डरने की क्या बात है आनन्द से जहाज पर बैठ लिया चलता चलता चलता हुआ घर मिलगया इन्दरकुंअरि, अय हय हवाके का कितना बड़ा

हुए हैं जो पार सालकी बातहैकि गुलजारीमल महाजनकुनबे
समेत द्वारका को गया था और मेरी मौसिया सास भी उन
यात्रियोंके साथगईथी जहाज पर चढ़नाथा कि एक दो दिन
पीछे जहाज डूबगया घर लौटना नसीब न हुआ सरस्वती,
हां संयोगकी बातहै जहाज कभी कभी डूबभी जातेहैं परंतु
परमेश्वर न करे आय दिन डूबाकरते तो दरियाके यात्राका
कोई नाम भी न लेता अब तो दरिया का रास्ता खुशकी के
सड़कों से ज्यादा आबाद हो रहा है हजारों लाखों जहाज
नित्य दिन आते जाते रहतेहैं अंगरेज और उनके बीबीबच्चे
और कुल अंगरेजी असबाब सब जहाज़के ऊपर यहां आता
है चन्दरकुंअरि, अंगरेजोंकी स्त्रियोंका क्या जिकिर वह तो
कुछ औरही प्रकारकी स्त्रियांहैं उनकी क्या रीस वह तो बा-
हर फिरतीहैं घूमतीहैं नन्हे२ बच्चोंको वलायत भेजदेतीहैं
और उनका मन नहीं कुढ़ता नहीं मालूम किसतरह की
मायेंहैं और किसप्रकार उनके मनको संतोष आताहै फिर
बाहरकी फिरनेवालियां और पत्थरके दिल इनको एक समुद्र
क्या पवनपर उड़नाभी कुछ कठिननहीं सरस्वती, बाहरकी
फिरनेकी तुमने जो कही तो उनके देशमें परदेका चालनहीं
बलवेके दिनोंमें हम लोग एक गांवमें भागकर गये थे वहां
भी पर्देकी चाल चलन न था सबकी बहू बेटियां बाहर नि-
कलतीथीं मैं तो चारमहीने वहांरही बाहरके फिरनेवालियों
में वह लाज और शरम देखी कि परमेश्वर सब पर्देवालियों
को देवे और बच्चोंको वलायत भेजदेनेसे तुमने क्योंकरसमझा
कि उनको प्रीति नहीं कि सन्तान को पढ़ने से रोकें गुण न
प्राप्तकरने दें नामकोतो प्रीति और हक़ीक़तमें सन्तानकेहक़
में कांटे बोतीहैं और बच्चोंको मूर्खअज्ञान रखतीं और प्रीति
को नाम बदनाम करती हैं यहां पहुंचकर सब चुपहुईं तो
चांदकुंअरिने अपनी कहानी आरंभकी और उस बादशाह
के कोई बेटा न था बादशाह ने यह समझकर कि मेरे पीछे
यही लड़की वारिसराज्यकी होगी उस लड़कीको खूबपढ़ाया

लिखवाया और राजनीति की विधि अच्छे प्रकार सिखाई और अपने जीतेजी उसको राज पाट सौंपदिया चांदकुंअरि यहां तक पहुंचीथी कि सरस्वतीने कहा तुम ऊपर२ कहानी कहती जातीहो और मेरे जीमें पूछनेको हजारों बातें भरी हैं पर क्या करूं दिनहो चुकनेपर आया और मुझको अलप कुंअरिके घर जाना अवश्यहै संध्याके समय किसीके घरखबर को जानाभीवर्जितहै मैंतो अब ठहरनहीं सक्ती तुमलड़कियां आपसमें कहो सुनो इन्दरकुंअरिने कहा लाबुआमैं तो जातीहूं तुम्हारा जी चाहे तो बैठीरहोया कल्ह फिर आ जाना यहांतो रोजयही हुआ करताहै सरस्वती यह कहकर अलप कुंअरिके घर सिधारी और इन्दरकुंअरि ऐसीरीझीकि पहर रात तक लड़कियों में बैठीरह गई सरस्वती के पीछे यमुना और महताबकुंअरि ने मजे२ की बातें कहानी में निकालीं सरस्वती महताबकुंअरि को बहुत चाहती थी और उससे अधिक अपनी नन्द यमुना को सरस्वती ने महताबकुंअरि को इस तरहपर पढ़ाया कि दोवर्ष में हिंदी भाषा की बड़ी२ पुस्तकें पढ़ने लगी और चिट्ठी और हिसाब लिखलेती थी वह बदमिजाजी महताबकुंअरि की बाकी रहीन वह चिड़ चिड़ा पन बड़ी सीधी साधी लिखीपढ़ी गुणवंती प्यारी लड़की बन गई गुलाबकुंअरि का जिस प्रकार पर उजड़ा हुआ घर सरस्वती ने बसाया अगर उसका ब्योरा लिखाजावे तो दूसरी पुस्तक बन जाय अर्थात् यह कि पण्डित अयोध्या प्रसाद का सब घर छोटे बड़े सरस्वतीके चरण धो धो पीते थे महताबकुंअरि की माने लाख २ यत्न की कि सरस्वती कुछ ले पर उसने कुछ नहीं लिया जब कि महताबकुंअरि का व्याह होने लगा तब पण्डित अयोध्याप्रसाद ने पण्डित शंकरदत्त का दबाव डालकर सरस्वती को हजार रुपये के जड़ाऊ कड़े दिये और कहा सुनो तुम मेरी पोती और निवासी के बराबर हो मैं तुमको पढ़वाई नहीं देता बल्कि अपना बच्चा समझकर देताहूं [illegible] शंकरदत्त ने समझाया तो सरस्वती ने

रहने के लिये इधर तो सरस्वती अपनी पाठशाला के बंदो-बस्त में थी उधर अम्बिकादत्त बेरोजगारी से घबड़ाता था एकदिन सरस्वती से कहनेलगा कि अब मेरा जी बहुत घब-ड़ाता है अगर तुम्हारी सलाह हो तोमैं तहसीलदार साहब के पास पहाड़पर चलाजाऊं और उनके वसीलेसे नौकरीकी तलाश करूं सरस्वतीने थोड़ीदेर सोचकरके कहा कि नौकरी करनी तो बहुत अवश्य है इस कारण कि तुम देखते होकि कैसी तंगी से घर में गुजर होती है अब्बा जान अब बूढ़े हुये उचित यह है कि वह घर में बैठें और तुम कमाकर उनकी सेवा करो सिवाय इसके यमुना बड़ी होती जाती है मैं उसकी संगनी के चिंता में हूं और मनो कामना यह है कि बहुत ऊंचे जगह इसका ब्याह हो और मैं यत्न कररही हूं परमेश्वर ने चाहा तो इसी साल में इस की बात चीत ठहरी जाती है परन्तु इसकेलिये बड़ा सामान दरकारहोगा और इससमय तक किसी प्रकार की कोई वस्तु घरमें मौजूद नहीं है भाईजान पहिले तो अलग हैं फिर ऐसी थोड़ीनौक-री में उनसे अपना निबाह नहीं हो सक्ता वह दूसरे को कहां से देसक्ते हैं फिर सिवाय इसके कि तुम नौकरी करो कोई सूरत नहीं परन्तु पहाड़ पर जाने की मेरी सलाहनहीं अब्बा तो तुम्हारे वास्ते कोशिश करेंगे और निश्चय है कि जल्दतर तुमको नौकरी मिल जाय परन्तु किसी का सहारा पकड़ कर नौकरी करना कुछ ठीक बात नहीं बला से थोड़ी हो पर अपने पराक्रम से हो जाना अब्बा कोई ग़ैर नहीं है रिश्ते में भी तुमसे बड़े हैं उनसे लेना क्या बल्कि मांगना भी ऐब नहीं फिर भी परमेश्वर किसी का इहसानमन्द न करे सदाकी आंख झपक जाती है उन्हों ने मुंह पर न रक्खा तो कुनबे में परमेश्वर रक्खे सौ आदमी हैं मुंहदर मुंह न कहेंगे तो पीठ पीछे अवश्य कहेंगे कि देखो ससुरे के सहारे से नौकरी हुई अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या करूं आगरा चला जाऊं सरस्वती ने कहा आगरे में क्या है रईसकी सरकारतो

आप तबाह हैं नहीं मालूम अम्बादत्तको पहले का लिहाज व मुरौवत मानकर पचास रुपया वह किस तरह देता है नये आदमियों की गुंजायश उसके सरकारमें कहां, अम्बिकादत्त ने कहा और बहुत सरकारें हैं सरस्वती ने कहा जब से अंगरेजी हुई सब रईस ऐसेही तबाह हैं और पिछले नाम नमूद को सब निबाहते हैं दूसरे दस पांच नूरतें उनके यहां लगी लिपटी रहती हैं सो भी क्या खाकर, बर्सों तनखाह नहीं मिलती अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या इलाज, सरस्वती ने कहा अंगरेजी नौकरी तलाश करो अम्बिकादत्त ने कहा अंगरेजी नौकरी तो बे सई सिफ़ारश नहीं मिलती हजारों लाखों आदमी मुझसे बेहतर २ मारे २ फिरते हैं कोई नहीं पूछता सरस्वतीने कहा हां यह सच है परंतु जब आदमी किसी बातकी इच्छा करे तो परमेश्वर पर भरोसा करके निरास न हो मैंने माना कि हजारों नौकरी के तलाश में फिरते हैं परंतु जो नौकर हैं वह भी तुम्ही ऐसे आदमी हैं और सौ बात की कि एक बात तो यह है कि नौकरी भाग्य से मिलती है बड़े आदमी देखते रहजाते हैं और अगर परमेश्वर को देना मंजूर होता है तो न वसीला है न लियाक़त छप्पर फाड़कर देता है घर से बुलाकर नौकर रखलेते हैं अम्बिकादत्त ने कहा तो गरज यह है कि घर बैठा रहूं सरस्वतीने कहा यह हर्गिज मेरा मतलब नहीं है जहां तक अपने से होसके यत्न करना चाहिये अम्बिकादत्त ने कहा यही तो कठिन है क्या यत्न करूं सरस्वती ने कहा जो लोग नौकरी पेशा हैं उनसे मुलाकात पैदा करो उनमे हित और प्रेम बढ़ाओ उनके वसीले से तुमको नौकरी की खबर लगती रहेगी उन्हीं के वसीले से तुम किसी हाकिम तक पहुंच जाओगे अम्बिकादत्त ने यही किया कि नौकरी वालों से मुलाक़ात करना शुरूअ की यहांतक कि सरिश्तेदार तहसीलदार ऐसे लोगों में आने जाने लगा रोज़के आने जाने से सबको मालूम हुआ कि यह भी नौकरीके तलाशमें है यहांतक लाला रुद्रप्रसाद

ने जो कचहरी में रोजकार नवीस थे अम्बिकादत्त से कहा कि अगर नौकरी की तलाश है तो मेरे साथ कचहरी चला करो थोड़े दिन उम्मैदवारी करो सरिश्ते के कामसे वाक-फ़ियत हासिल करो हाकिमों को सूरत दिखाओ इसी प्रकार कहीं न कहीं ढब लगजायगा उसके कहनेसे अम्बिका दत्त कचहरी जाने लगा और रुद्रप्रसाद के साथ कामकिया करता था यहां तक कि हाकिम से दस्तखत करा लाता हाकिम लोग उसको जाननेलगे इसी बीचमें छोटे २ उहदे दारानकी दो चार एवज़ियां अम्बिकादत्तको मिलगईं किसी अमले को रुखसत की ज़रूरत हुई वह आधी तिहाई तन-ख़ाह पर इसको एवज़ दे गया यहां तक कि संयोग से एक दश रुपये का मुहर्रिर पेशी तीन महीने की रुखसत पर गया था सो तीन महीनेके पीछे उसने इस्तीफ़ाभेजदिया पण्डित अम्बिकादत्त उसकी जगह पर मुकर्ररहोगया परंतु कभी २ सरस्वती से खिफ़ा होकर आता तो अम्बिकादत्त हिका-रत के साथ कहा करता कि क्या वाहियात नौकरी है दिन भर पीसना और दश रुपया और न ऊपर से कुछ पैदा है न आगे को बढ़ने की आस मैं तो इसको छोड़दूंगा सरस्वती सदा ऐसे ख़यालात पर उसको लानत मलामत करती और कहती कि तुम बड़ी नाशुकरी करते हो वह दिन भूलगये कि उम्मैदवारी भी नसीब नथी या अब नौकर होतो नौकरी की क़दर भी नहीं करते घरके घर बैठे क्या दश रुपये कम हैं अपने बड़े भाई को देखो कि कई वर्ष तक सौदागर के यहां दश रुपये की नौकरी करते रहे और जब तुम्हारा नौ-करी में मन नहीं लगता तो तुम से काम क्या खाक होता होगा आखिर को नौकरी खुद छूटजायगी इसीप्रकार थोड़े से बहुत भी होता है हमारे अब्बा पहिले आठ रुपये महीने के मिसलनवीस थे अब परमेश्वर की कृपासे तहसीलदार हैं और भगवानने चाहा तो और भी बढ़ेंगी ऊपर की आम-दनी पर कभी भूलकर भी नज़र मतकरना हरामके माल में

हर्गिज़ बरकत नहीं होती भाग से बढ़कर मिल नहीं सक्ता फिर आदमी अपनी नियत को डामाडोल क्यों करे जो इससे अधिक मिलने वाला है तो परमेश्वर यों हलालसे भी देसक्ता है ग़रज़ सरस्वती नित्य अम्बिकादत्त को समझाती रहतीथी यहां तक कि जिस हाकिम के पास अम्बिकादत्त नौकर था वह डिपटी कमिश्नर देहली का मुक़र्रर हुआ यह हाकिम अम्बिकादत्त परबहुत मेहरबानी करताथा दिन को कचहरी में यह हाल अम्बिकादत्त को मालूम हुआ शाम को अम्बिकादत्त घरमें आया तो बहुत उदास था सरस्वती ने पूछा खैरियत है आज क्यों उदास हो अम्बिकादत्त ने कहा क्या बताऊं मिस्टरवुड साहब की बदली दिल्ली को होगई वह तो एक अपने जानने वाले हाकिम थे अब कचहरी में रहने का मज़ा नहीं सरस्वती बहुत देर तक सोच में रही फिर कहा बेशक मिस्टरवुड साहब का बदल जाना अफ़-सोस की बात है परन्तु न इस क़दर कि जितना तुमको है जो उनकी जगह आवेगा परमेश्वर उसके दिलमें भी रहम डाल देगा आदमी को आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये सरस्वती ने पूछा मिस्टरवुड साहब कब जायंगे अ-म्बिकादत्त ने कहा कल शामको डाक पर सवार हो जायंगे सरस्वतीने कहा तुम उनके बंगलेपर नहीं गये अम्बिकादत्त ने कहा अब क्या जाता सरस्वती ने कहा यही तो मिलने का समय है और कुछ न होगा तो कोई चिट्ठी परवानातुम को दे जायंगे अम्बिकादत्तने कहा अच्छा सबेरे को जाऊंगा बहुत तड़के कपड़े पहिये पहना अम्बिकादत्त मिस्टरवुड साहब के बंगलेपर गया मिस्टरवुड साहब ने कहा अम्बिका दत्त हम अब दिल्ली को जाता है और हम तुमसे बहुत राज़ी था अब तुम चाहे तो हमारे साथ दिल्ली को चलो हम तुमको वहां नौकरी देगा और जबतक नौकरी न होगी हम अपने पास से पन्द्रह रुपये देगा अम्बिकादत्त ने सोचकर कहा कि

माघे पूछलूं यारज अम्बिकादत्त घरलौटकर आया तो जिकर किया कि मिष्टरवुडसाहब मुझको साथलियेजाते हैं अम्बिकादत्त की मा ने तो सुनतेही गुलमचाया सरस्वती भी सन्नाटे में होगई आखिर अम्बिकादत्तने पूछा कि साहबोबताओमैं जाकरक्या जवाब दूं अम्बिकादत्तकी माबोली जवाबक्यादेना है अब क्या तेरेलिये वह बैठारहेगा या तेरेलिये सिपाही भेजरहा है अम्बिकादत्त ने कहा अच्छा मैं उससे इन्कार आनेका करआंय। वह अपने जीमें कहेगा कि हिंदुस्तानीकैसे खुदग़रज़ी हैं। तेहैं मतलबतक हमसे झूठबोला अम्बिकादत्त से माने कहा अच्छा जाकर कहआओ कि साहबमेराजाना नहींहोसक्ता अम्बिकादत्त सरस्वती से पूछा क्यों जी तुम्हारी क्या सलाह है सरस्वती ने कहा सलाह और होतीहै मनकी अभिलाषा तो यहथी कि तुमयहांरहो घरकाबन्दोबस्त सिर्फ़ तुम्हारे दमसेहै और आखिर घरमें कोई मनुष्य भी चाहिये और सलाह पूछो तो जाना उचितहै जब एक हाकिमखुद बेकहेसुने तुमको साथ लेजाताहै तोज़रूर अपनी जगहपहुंच- करबहुतसलूककरेगा अम्बिकादत्तने कहा पांचरुपयेके वास्ते क्या दो तीन सौ कोसका सफ़र करूं मेरा तो दिल जाने को नहीं चाहता वह मसल है कि घरकी आधी न बाहरकी सारी सरस्वती ने कहा यों तुमको अख्तियार है परंतु ऐसी समय भागोंसे मिलाहै फिर हाथ न आयेगा और सफ़रकौन नहींकरता हमारे तुम्हारे अब्बा देखो इनलोगों ने सफ़र में उमर तै करदी और अभी तुमनेपांचरुपयेसुनलिये पीछेदेखो- गे कितने पांचहैं और जो नहींजाते तो फिर दस रुपये से बेदिलीमत ज़ाहिर करना अम्बिकादत्त ने कहा तो यहां की नौकरी का इस्तीफ़ा देजाऊं और फ़र्जकिया कि वहां कोई सूरत न हुई तो इधरसे भी गया और उधरसे भी गया सर- स्वती नेकहा कि अव्वल तो यह मानलेनाकि वहां कुछसूरत न निकलेगी बुद्धिके बरख़िलाफ़ है उड साहब इतनाबड़ा हा- किम तुमको कामदेनाचाहे और सूरत न निकले मेरेसमझ

में नहीं आता और फिर इस्तीफ़ा क्यों दो महीने दो महीने की छुट्टी लो अम्बिकादत्त ने कहा हां रुख़सत मंजूर हुई पड़ी है सरस्वती ने कहा मंजूर होने को क्या हुआ उसी मिस्टर उड साहब से कहो वह चिट्ठी लिखदेगा ग़रज़ सरस्वती ने जबरदस्ती जोतकर अम्बिकादत्त को जाने पर राजी किया और अपने पास से पचास रुपया नक़द दिया और छः जोड़े नये कपड़े बना दिये रामलाल रामदेई मिश्रायन के बेटे को साथ कर दिया पण्डित अम्बिकादत्त दिल्ली को रवाना हुये सरस्वती ने पण्डित शंकरदत्त को यह सारा हाल चिट्ठी में लिखा और यह भी कह दिया कि उड साहब दिल्ली को आगरे होकर जायंगे अगर ऐसा होसके कि आप वहां उनसे मुलाक़ात करके उनकी सिफ़ारिश कुछ रईस से करादें तो बहुत अच्छा होगा पण्डित शंकरदत्त ने मिस्टर उड साहब की तलाश की और रईस के कुछ गांव ज़िलअ़ देहली में भी थे शंकरदत्त ने रईस की तर्फ़ से साहब की दावत की रईस के बाग़ में ठह-राया खाने के पीछे साहब और रईस दोनों बैठे हुये बातें कर रहे थे कि पण्डित शंकरदत्त ने साहब से कहा कि लखनऊ के रियाया को आप की जुदाई का बहुत रंज है अगर्चि आप सिर्फ़ दो बर्ष लखनऊ में हाकिम रहे परन्तु आप के इन्साफ़ और आपके शुफ़्क़ी परवरी से वहां के सब लोग राज़ी थे एक बन्दा ज़ादा भी आपके ख़िदमत में हाज़िर था उसके लिखने से सब हाल मालूम रहता था साहब ने पूछा क्या कोई आप का लड़का भी मेरी कचहरी में था शंकरदत्त ने कहा अम्बिकादत्त साहब ने कहा वह तो हमारे साथ आता है वह आप का बेटा है शंकरदत्त ने कहा आप का गुलाम है रईस ने इस समय कहा कि पण्डित शंकरदत्त हमारे रिया-सत के बहुत पुराने नौकर हैं और हमको उनकी परवरिश हरतरह मंजूर रहती है परन्तु आप तो जानते हैं कि हमारे यहां अब गुंजायश नहीं पस अगर आप इनके बेटे की परव-रिश फ़रमायेंगे तो हम आपके बड़े इहसानमन्द होंगे मिस्टर

उड साहब पहिले से अम्बिकादत्त के हाल पर मेहरवान था
अब ऐसी समय सिफ़ारिश होने से मिस्टर उड साहब को
अम्बिकादत्त का बहुत बड़ा ख्याल होगया पहिले तो अम्बि-
कादत्त जवान नौ उमर दूसरे भले आदमी का बेटा तीसरे
रईस का सिफ़ारसी चौथे खुद साहब का रफ़ीक़ पांचवें
लायक़ अब इतने हक़ अम्बिकादत्त को हासिल होगये
साहब ने पहिले रोज़ कचहरी करतेही अम्बिकादत्त को
पचास रुपये का नायब सरिश्तेदार किया और पण्डित शंकर
दत्त को खत लिखा कि फ़िल हमने अम्बिकादत्त को
पचास रुपये की नौकरी दी है हम जल्द इसकी तरक़्क़ी करेंगे
आप रईस की खिदमतमें इसकी इत्तिला करदीजिये शंकर-
दत्त ने नज़र बर मुनासिब साहब का शुकरिया अदा किया
और वह अम्बिकादत्त जो कभी उम्मेदवारी का मुहताजथा
और छोटे २ ओहदेदारों की एवजियां करताथा और सिर्फ़
दश रुपये महीने का मुहर्रिर था और पन्द्रह रुपये महीनेके
वादे पर सरस्वती के जोतने से उड साहब के साथ दिल्लीगया
था अब एक दमसे पचास रुपये का ओहदेदार होगया
अम्बिकादत्त की माता अगर्चि जाने से नाराज़ हुई थीं पर
पचास का नाम सुनकर उनकी भी बाछें खुलगईं अब तो
घरमें चौगुनी बरकतहोगई सरस्वतीका बन्दोबस्त और बीस
की जगह अब साठ रुपये महीना घरमें आनेलगा क्या पूछना
है अम्बिकादत्त आखिर एकही वर्ष में सरिश्तहदार होगया
परन्तु सरिश्तहदार होने तक सम्हला हुआ था खर्च भी
बराबर आता था चिट्ठी भी बराबर चली आती थी आखिर
जवान आदमी था खुद मुख़्तार होकर रहा संगति बुरीमिल
गई बहक चला चिट्ठियों में कमी होनी शुरू हुई सरस्वती
तो बड़ी बुद्धिमान थी समझ गई कि कुछ दाल में काला है
बहुतदिन तक सरस्वती चिन्ता में रही कि अब क्या यत्नकरूं
अन्तको सिवाय इसके कुछ समझ में न आया कि आपजाना
चाहिये हरचन्द सरस्वती ने दिल्ली जाने का दिलमें पक्का इ-

रादा करलिया था परंतु सलाह के वास्ते जयजयवन्ती को बुला भेजा और सब वृत्तान्त उससे कहा जयजयवन्ती ने कहा बहिन दीवानी हुई है अपना वतन छोड़कर अब कहां दिल्ली जाती फिरेगी सरस्वती ने कहा मुझको जन्मभूमि से क्या प्रयोजन है जिसके साथ मेरा सम्बन्ध है जहां वह है वहीं मेरा घर है जयजयवन्ती ने कहा अय हय कुनबेवाले क्या कहेंगे हमारे कनबे में से कोई आज तक बाहर नहीं गया सरस्वती ने कहा इसमें एकको क्याबात है आखिर यही कहेंगे कि खसम के पास चली गई तो बुरा क्या कहा और कुनबे की रीति जो पूछो तो पिछले दिनों न डाकथी न रेल न रस्ते आबाद थे स्त्रियों का सफ़र करना बहुत कठिनथा इसकारण लोग नहीं जाते थे अबक्या कठिन है जो आज शाम को रेलपर बैठूं और परमेश्वर कुशल खैर रक्खे तो परसों दिल्ली दाखिल गोया लखनऊ से बिठूर गये जयजयवन्तीने कहा क्या बुलाये की चिट्ठी आई है सरस्वती ने कहा चिट्ठी तो नहीं आई है जयजयवन्तीने कहा बे बुलाये जाना भी उचित नहीं सरस्वती ने कहा तुम उचित और ग़ैरउचित को देखती हो और मैं कहती हूं जो मैं न जाऊंगी तो जन्म भरके लिये घर बिगड़ जावेगा जयजयवन्ती बोली अय बहिन ऐसी तुम क्यों गिरी पड़ती हो तुमको उनकी क्या परवाह है परमेश्वर तुम्हारे पाठशाले को सलामत रक्खे तुम दूसको रोटी खिलासकती हो सरस्वतीने कहा वाह आपकी क्या समझ है यह पाठशाला तो मैंने अपनाजी बहलानेकेवास्ते मुकर्रर करलिया है कुछ मुझको इससे कमाई करनी मंजूर नहीं भगवान जाने तुमको निश्चय होय या न होय पाठशाले की रक़मसे आजतक एक पैसा मैंने अपने ऊपर खर्च नहीं किया जब वह दिल्ली गये थे तो पचास रुपया नक़द और बीस रुपये के कपड़े उसी जायदाद से उनको बनवा दिये बाक़ी कौड़ी २ का हिसाब लिखाहुआ मौजूद है देखो स्त्रियों की कमाई भी कोई कमाई है जो स्त्रियों की कमाई से घर बसा करें तो पुरुष क्यों हों जयजयवन्ती ने

कहा बहिन ऐसी भरी बर्षात में कहां जाओगी जाड़ा आनेदो उसगम खुले मौसम में देखलेना सरस्वती ने कहा अयहाय देर करना तो गजबहै अब जो काम समझानेसे निकलेगा फिर बड़े झगड़ों से न मिटेगा जयजयवन्ती ने कहा अब बहिन घर छोड़ते हुये तुम्हाराजी नहीं कुढ़ता सरस्वतीने कहा क्यों नहीं कुढ़ता क्या मैं आदमी नहीं हूं परन्तु यह थोड़ी देर तक कुढ़ना बेहतर या जन्म भरका कलापा बेहतर जयजयवन्तीने कहा तुमने अपनी सासमेभी आज्ञा लेली है सरस्वती ने कहा भला वह क्या आज्ञादेंगी परन्तु हमारी सास बिचारी सीधी आदमी है मैं समझा दूंगी तो बिश्वास है कि न रोकें गरज यह कह सरस्वतीने अपनी इच्छा जाने की और उसका प्रयोजन अपनी साससे एकदिन कहा बात तो नेकथी उसमें कौन मनाकर सक्ता था सरस्वती का जाना ठहरगया एकदिन सरस्वती सब कच्चा हाल अपनी माता से भी कह आई और बिदाहो आई पाठशालेके लिये लड़कियों को समझा दिया कि यमुना तुम सबको पढ़ाने को बहुतहैं मैं दो महीनेके लिये जातीहूं सब लड़कियां बदस्तूर आयाकरें सरस्वती बिदा होनेके लिये अपनी बड़ी बहिन परमेश्वरी के पासभी गई वहां परमेश्वरीदत्त ने पूछा क्योंजी तुम जाती हो पाठशाले को क्या कर चली सरस्वतीने कहा पाठशाला और घर सब आपको सौंपे जातीहूं परमेश्वरीदत्तने कहा वाह क्या खूब सुझको न घरसे प्रयोजन न पाठशालेसे वास्ता मैं क्याकर सक्ताहूं सरस्वतीने कहा प्रयोजन रखना और न रखना सब आपके आधीन में है परमेश्वरीदत्त ने कहा यह बात तुमको कहनी उचित नहीं भला मेरा क्या अखतियारहै घर तुम्हारी बहिनने छुड़वाया रहा पाठशाला सो लड़कियोंकाहै लड़कों का पाठशाला होता तोमैं सबको पढ़ादिया करता सरस्वतीने कहा अब आप और बहिन दोनों घरमें चलकर रहियेअम्मा जान अकेलीहैं परमेश्वरीदत्तनेकहा अपनी बहिनको समझावो सरस्वतीने कहा समझानेको क्याहाजतहै वहतोआपजानती

समझतीहैं यहां अकेले उनको क्लेश होताहै न बच्चोंका कोई सम्हालने वालानघरका कोई देखनेवाला दुःख सुख आदमी के साथहै बेजरूरत अलग रहना उचित नहीं और पिछली बातें अगर्इ गुजरी हुईं आपुसकीनाइत्तिफ़ाक़ी क्या और इसका रंजक्यापरमेश्वरी अलग घरकरने का मजा खूब चख चुकीथी और बहाना ढूंढतीथी कि फिरसाथ रहनेको कोई कहे तुरंत राज़ी होगई सरस्वती अपने साथ दोनोंको लिवालाई अम्बिकादत्तकी माको सरस्वतीके जानेका बहुत रंजथा अब उसकी भीतसल्ली होगई कि एकबहूगईतो दूसरी मौजूद है यमुनाको अलबत्ता बड़ा सोच हुआ कि देखिये क्या हो परंतु सरस्वतीने उधर तो यमुना की तसल्ली की और समझा दिया कि अब वहबातें नहीं हैं इधर अपनी बहिनको समझा दिया कि यमुना अब बड़ी होगई है कोई बात कड़ी न कहियेगा पाठशाले के हेत परमेश्वरीदत्त से इतना कह दिया कि पढ़ाना लिखाना सब यमुना कर लिया करेगी आप सिर्फ़ ऊपर के बंदोबस्त की खबर ले लियाकीजिये और पाठशालेका हिसाब यमुना को लिखवा दिया कीजियेगा ग़रज़ सरस्वती इसतरहसे बिदा हुई और रेलपर सवार हो दिल्ली पहुंची यहां अम्बिकादत्तको सरस्वतीके अचानक पहुंचने से बड़ा आश्चर्यहुआ पूछा कुशल तोहै कहीं अम्मासेतो नहीं लड़आई सरस्वतीने कहा परमेश्वर २ करो क्या अम्माजान मेरी बराबर की थीं जो मैं उनसे लड़ती इस चार बर्षमें कभी तुमने मुझको उनसे या किसू से लड़ते देखायहां अम्बिकादत्तने खूबहाथ पांवनिकालेथे और बुरी संगतिमें फंसाहुआथा ठकुरसुहातियेजमाथे और उसको उल्लू बनाए हुये थे बाजार घूसका गर्म था नाच रंगतमाशा निशि दिन हुआ करता था अमीरी ठाठ थे और तनख्वाह से चौगुनाखर्च यहीहाल कुछदिनों और रहता तो ज़रूर मिस्तीर उड साहबको शकपैदा होताआखिरको नौकरी जातीरहती अच्छे समय सरस्वती जा पहुंची तुरंत उसने हर एक ओर से बन्दोबस्त करना आरंभ किया और समझाया कि तुमको पर-

मेश्वर ने सौ का नौकर कर दिया उसका यही बदला है कि तुमको उस पर संतोष नहीं अम्बिकादत्तने कहा जो खुशीसे दे उसके लेने में क्या हर्ज है सरस्वती ने कहा क्या खून रुपया भी ऐसी चीज है कि कोई उसको बेप्रयोजन खुशीसे देता है इन दिनों लोग रुपया को ऐसा जानते हैं कि इज्ज़त तक की परवाह नहीं करते परंतु रुपया नहीं छोड़ते आदमी अपने ऊपर समझे कि हम किसी को क्या दिया करते हैं तुमको तो एक रुपया भी बेप्रयोजन देना बुरा मालूम होता है फिर लोगों के पास ऐसा कहां का खज़ाना भरा पड़ा है कि वह बेप्रयोजन दे जाते हैं जब देखते हैं कि काम बिगड़ता है न देंगे तो मुक़द्दमा ख़राब होगा लाचार उधार लेकर घरवा-लोंके गहने बेंच जमीन गिरों रख कर घूस देते हैं अम्बिका-दत्त ने कहा मैं आप नहीं मांगता वह आप देते हैं तो क्या फिर इसमें डर है सरस्वती बोली पहले तो घूस छिप नहीं सकी सिवाय इसके आदमी पर प्रगट न हुई परमेश्वर जो अंदर बाहर का हाल देखता है वह तो जानता है पस आदमियों को पाप जमअ करना और परलोकके लिये अधर्म की गठरी बांधना क्या ज़रूर है ग़रज़ ऊंच नीच समझा कर सरस्वतीने अम्बिकादत्त से तो बहकरा के थोड़े दिन पीछे सरस्वती ने पूछा ये चार आदमी जिनको बाहर सीधा जाता है कौन आ-दमी हैं अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी के उम्मेदवार विचारे परदेशी हैं मैंने कहा अच्छा जब तक तुम्हारी नौकरी न लगे मेरे पास रहो सरस्वतीने पूछा फिर अब तक क्या इनको नौ-करी नहीं मिली अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी मिलती है पर उनकी हैसियत से कम है सरस्वतीने कहा जब उनकी यहां तक दशा पहुंची कि दूसरे घर पड़े हुये रोटियां खाते हैं तो हैसियत की क्या बात रही थोड़ी बहुत जो मिले कर लें अ-म्बिकादत्त ने कहा परमेश्वर जाने तुम क्या कहती हो इज़्ज़त से घटकर कैसे कम दरजे की नौकरी करें सरस्वती ने कहा कमदर्जे की नौकरीमें बेइज़्ज़ती होती है और दूसरेके सिर रहने

देने में बेइज़्ज़ती नहीं जब इन लोगों में इतनी लज्जा नहीं तो और सुभावभी इनमें अवश्य बुरे होंगे इनका साथ रहना अच्छा नहीं ज़रूर तुम्हारे नाम से यह भी जोते होंगे इनसे कहो या नौकरी करें या सिधारें अम्बिकादत्त ने कहा मेरी मुरव्वत तो यह नहीं चाहती कि मैं जवाब दूं सरस्वती ने कहा जब उनमें मुरव्वत नहीं तो तुमको मुरव्वत का लिहाज़ क्या ज़रूर है अगर तुमसे बचे तो कुनबे में बहुत से अज़ीज़ हैं उनका हक़ ग़ैरों से पहिले है और ग़ैरों में भी ऐसों को देने से क्या हासिल और यह ज़रूर नहीं कि तुम सख़्ती से जवाब दो किसी तौर उनको समझा दो खुलासा यह कि ये लोग अम्बिकादत्त के बिगाड़ने वाले थे सरस्वती ने हिकमति से उनको निकलवा दिया नौकरों में से जो २ बद चलन थे छांट २ कर निकलवा दिये गये डेढ़वर्ष सरस्वती ने रहकर भीतर बाहर सब बन्दोबस्त करदिया अब दुर्गादत्त का ब्याह होने वाला था सरस्वती के बुलावे में चिट्ठी गई जयजयवन्ती ने जल्द आनेको लिखा सरस्वतीको गये हुये भी बहुत दिन हो चुकेथे सरस्वती ने इरादा लखनऊ आने का किया परंतु अपने मनमें सोची कि अम्बिकादत्त को अकेला छोड़ना योग्य नहीं अम्बिकादत्त से कहा कि परदेश में अकेला रहना उचित नहीं अब कोई अपना सम्बन्धी साथ रहना ज़रूर है मेरे समझ में तुम अपने चचेरेभाई रामसहायको बुलाय लो वह यहां तुम्हारे पास कचहरी का काम सीखेगा और पढ़ेगा भी और कदाचित् कहीं उसकी नौकरी भी लगजाय पण्डित शिवदत्त चचा को अम्बिकादत्त की चिट्ठी गई और सरस्वती के रहते रामसहाय पहुंच गये यह लड़का बहुत नेक बख़्त था और अम्बिकादत्त से सिर्फ़ दो वर्ष छोटा था अब सरस्वती को सब तरह विश्वास होगया कि दिल्ली से बिदा होकर आगरा पहुंची यहां शंकरदत्त के पास दश दिन रही शंकरदत्त की उमर बासठवर्ष की थी और सुल्तानी की नौकरी में बहुत मेहनत थी सब हाकिमों की कचहरी में जाकर रईस के

मुक़द्दमात की खबर लेना और सुबह शाम अमलों में जाना बेचारे पण्डित जी रातको जो आतेथे तो बहुत थक जाते थे सरस्वतीने कहा अब आपका समय नौकरी करनेका नहीं है सुनासिबहै कि आप घरबैठिये एक पुस्तकमें मैंने पढ़ा है कि आदमी अवस्था के तीन भाग करै पहला भाग गुण और विद्या सीखनेका दूसरा भाग संसारके कामोंके बन्दोबस्तका तीसरा भाग आनन्दसे रहने और परमात्मा के भजनका पस आप घर चलकर आनन्द से बैठें पण्डित शङ्करदत्त ने कहा पहले तो रईस छोड़ता नहीं और दूसरे आख़िर मेरीजगह कोई कामभी करनेवाला चाहिये सरस्वतीने कहा जब आप अपने बुढ़ापे का हाल वर्णन कीजियेगा तो निश्चय है कि अवश्यमान जायगा और काम करने को तो भाई जान क्या कम हैं पण्डितजीने कहा वह कचहरी दरबार का दस्तूर क्या जानें सरस्वतीने कहा थोड़े दिन उनको बुलाकर साथ रखिये देखने भालने से सब मालूम होजायगा पण्डितजी को सरस्वतीकी बात पसन्द आई सरस्वती तो लखनऊ पहुंची और पण्डित शङ्करदत्त ने परमेश्वरीदत्त को बुला भेजा थोड़े कालमें परमेश्वरीदत्तने बापकासबकाम उठालिया और रईस को अपनी सेवासे बहुत प्रसन्न किया तब शङ्करदत्तने रईस से कहा कि अब यह लड़का हुज़ूर में हाज़िर रहेगा मुझको आज्ञा दीजिये कि घरमें बैठकर परमेश्वर का भजन करूं रईस दिल चला था उसने पण्डित जी की बात मानली और बीस रुपये महीना पण्डितजीकी पिन्शन करदी और पण्डित शङ्करदत्त की जगह परमेश्वरीदत्त को पूरी तनख़ाह पर नौकर रखलिया सरस्वती लखनऊ में आई तो उसने यमुना की मंगनी की फ़िकिर की महताबकुंअरि रीवांसे अपने घर आई हुई थी और उन्हीं दिनों गुलाबकुंअरि भी ससुराल से छोटीबहिन से मिलने आईथी पण्डित अयोध्या प्रसाद का तो तमाम घर सरस्वती का चेला था दोनों बहिनें सरस्वती के आनेके समाचार सुनकर दौड़ी आईं गुलाबकुंअरि ने कहा

कि बीबी जैसाजी तुममें पड़ा था बयान नहीं होसक्ता भला
महताबकुंअरि तो तुम्हारी विद्यार्थिन है परंतु मैं शागिर्दों
से भी अधिक हूं मेरा उजड़ाहुआ घर तुम्हींने बसाया सर-
स्वती ने कहा मैं किस लायक हूं गुलाबकुंअरि ने कहा
वाह २ जी तुम कैसी बातें कहतीहो मैं तो जीतेजी तुम्हारा
सलूक नहीं भूलोंगी और क्या कहूं तुम तो हम लोगों की
सेवा किसी प्रकार ग्रहण नहीं करती नहीं तो अपने खाल
की जूतियां तुम को बनवा देती तब भी शायद तुम्हारा हक्क
अदा न होता सरस्वतीने कहा पहिले तो मुझसे कोई काम
बननहीं पड़ा और अगर कोई काम मेरा तुम्हारे पसंदहुआ
तो परमेश्वरने तुमको सब क़ाबिल बनाया है हम ग़रीबों को
खुशकरदेना कौन बड़ी बात है महताबकुंअरि बोली अय
हय अपने मुंह कैसी बात कहती हो सरस्वती बोली कि
परमेश्वर रक्खे उधर तुमतो पोतड़ोंके अमीर और अमीरों
के शिरताज और इधर यह सरदार और सरदारों की बेटी
अबतो इस शहरमें तुमसे बढ़कर दूसरा अमीर नहीं तुमतक
जो आदमी पहुंचकर निरास रहे तो उसके भाग का दोष
है महताबकुंअरि ने कहा अच्छी बी क्या बात है सरस्वती
ने कहा बड़ा कठिन कामहै तुम क़रारकरो कि हमनिरास
न करेंगी तो मैं कहूं महताबकुंअरि और गुलाबकुअरिने
जाना किसी की नौकरी चाकरी के लिये कहेंगी दोनों ने
कहा बीबी परमेश्वर की सौगंध तुम्हारे लिये हम दिलोजान
से हाजिर हैं हमको तो बड़ी आरज़ू है कि तुम हम से कुछ
फर्मायश करो सरस्वती ने कहा वह काम तो मेरे नज़दीक
बड़ा है परन्तु अगर तुम दोनों बहिनें जीसे कोशिशकरो तो
बड़ा नहीं है दोनों बहिनोंने परमेश्वर की सौगंध खाई और
कहा जो हमसे हो सकेगा तो हम अपनी शक्तिभर उठा न
रक्खेंगी सरस्वतीने कहा मेरी यह अभिलाषा है कि यमुना
की सगाई द्वारिका प्रसादसेहोजाय यह सुनकर दोनों बहि-
नें चुप हुईं फिर इधर उधर की बातें होने लगीं जब दोनों

बहिनें उठनेंका हुई तो सरस्वतीने महताबकुंअरिका दुपट्टा पकड़ा और दूसरे हाथसे गुलाबकुंअरिका और कहाकि मैं अपना हक़ झगड़कर लूंगी और जब तक मेरा सवाल पूरा न होगा परमेश्वर की सौगंध जाने न दूंगी महताबकुंअरि बोली भला बीबी इसमें हमारा क्या अखतियारहै अभी तो हारिका प्रसाद लड़काहै दूसरे ऐसी बातोंमें मा बापके होते बहिनों को क्या दखलहै सरस्वती ने कहा बड़ी और ब्याही हुई बहिनें माताके बराबर होती हैं पिछले नाते वे सब की सलाहके नहीं होने ऐसा मुमकिननहीं है कि तुमसे सलाह न हो महताबकुंअरि ने कहा अभी हमारे यहां तो कुछ इस बातका चर्चानहीं है इसी प्रकार बातमें और बातहोने लगी सरस्वतीने कहा बीबियो मेरा मतलब तो रहा जाता है हां नाका मुझको उत्तर दीजिये गुलाबकुंअरि ने कहा भला हम क्योंकर हामी भरसक्ती हैं सरस्वतीने कहा संपति स्वरूप स्वभाव तीन बातें चाहियें सो संपतितो हम गरीबों के पास नामको नहीं रही स्वभाव सो महताबकुंअरि तुम यमुना को अच्छे प्रकार जानती हो दो बर्ष तुम्हारा उसका साथ रहा तुम सचकहना लाज संकोच सुशीलता अदबनेक-बख़्ती लिखना पढ़ना सीना पिरोना अच्छे भोजन बनाना और सब प्रकारकी बातें यमुनामें हैं या नहीं क्यों महताब कुंअरि मैं झूठ कहती हूं तो तुम बोलो महताबकुंअरि ने कहा बीबी भला चांदपर कोई खाक डालसक्ता है यमुना को परमेश्वर जीता रक्खे बड़े घरोंमें तो भला कोई यमुना का पासंघतो होले सरस्वतीने कहा कि अबरहा स्वरूप सो नाक कान आंख जैसे आदमी में होते हैं वैसेही यमुना में भी हैं वह भी आदमी का बच्चा है जवान हुये पीछे इससे अच्छी सूरत निकल आये गी गुलाबकुंअरि बोली ऐ बीबी यमुना को तुम आदमी का बच्चा कहती हो परमेश्वर की सौगंध यमुना हमारे सुन्दर लड़कियों में अपना दूसरिहा नहीं रखती है बड़े घरों में ऊंची दुकानफीका पकवान हम

ने तो कोई खरूपवान न देखा देखो हम दोनों बहिनें मौ-
जूद हैं भगवान सौगंधखाना लौंड़ियां हमसे अच्छी हैं और य-
मुना तो चन्दे आफ़ताब चन्दे माहताब खूबसूरत की खी
कहां देखने में आई सरस्वती ने कहा फिर बुआ सिवाय
ग़रीबी के और हममें क्या बुराई है महताब कुंअरि ने कहा
अच्छा आज हम इस बातका चर्चा अपनी माता से करेंगी
सरस्वती ने कहा बात चीत तो मैंभी कर सकी हूं तुम मन
से इसमें सहायता करो और अब यह बात जो छेड़ी है तो
ऐसा हो कि पूरी होजाय दोनों बहिनों ने वचन दिया कि बी-
बी जैसा आपका मन चाहता है वैसाही होगा ग़रज़ कि उस
समय दोनों बहिनें बिदा हुईं दूसरे दिन सरस्वती अब फूल
कुंअरिसे मिलनेको गई तीन सौ रुपये का बहुत अच्छा श्वाली
रूमाल कामदार जो दिल्ली से लाई थी फूलकुंअरि को भेट
दिया फूलकुंअरि ने कहा तुम हमको बहुत शर्मिन्दा करती
हो हम को तुम्हारी टहल करनी चाहिये न कि उलटा तुमसे
लें सरस्वती ने कहा यह रूमाल अवश्य कर मैंने आपही के
लिये बनवाया था डेढ़ वर्ष से इसी हेतु मैंने गठरी में बांध
रक्खा था कि लखनऊ चलकर मैं आपको दूंगी फूलकुंअरिने
कहा मैं इसको लेती हूं परंतु मुझको परमेश्वर की सौ-
गन्ध लाज आती है कभी आपने भी तो फ़र्माइश की होती
मेरा जी प्रसन्न होता इतना सहारा पाकर सरस्वती हाथबांध
कर खड़ी होगई और अपनी मनोकामना बयान की फूलकुं-
अरनेकहा अच्छा आप बैठियेतो सही सरस्वतीने कहा अब
मैं अपनी इच्छा पूर्ण करके बैठूंगी फूलकुंअरिने हाथ पकड़
करबैठा लिया और कहा बेटा बहुओं के काम कठिन हैं कु-
म्हार से दमड़ी का सिकोरा लेते हैं तो ठोक बजा कर लेते
हैं और यह तो जन्म भर कमाइयोंके व्योहार हैं सोचसमझ
कर सलाह मशविरा करके ऐसेकाम होतेहैं अब इसका तुम
ने चर्चा किया अबमैं इनके पितासे और अपनी बड़ी भगिनी
और कुनबे वालों से पूछोंगी जैसा होगा देखा जायगा अभी

तो द्वारिकाप्रसाद लड़का है सरस्वती ने कहा मैंने अपने हौं-सिले से बढ़कर सवाल किया है मेरे पास ग़रीबी और आ-जिज़ीके सिवाय देने लेनेको कुछ नहीं है अगर्चि फूलकुंअरि ने जबान से न कहा परंतु अन्दाज़ से मालूम हुआ कि बात बुरी नहीं लगी चलते समयसरस्वती गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि से कहती गई कि अब इसका निबाह तुम्हारे आ-धीन है सरस्वतीके जाने पीछे दोनों बहिनोंने यमुना की बड़ी तारीफ की फूलकुंअरि थोड़ी ही बातोंमें राजी होगई और अपनी लड़कियों से बोली कि असल तो लड़की को देखना है परमेश्वरकी कृपासे हमारे घरमें किसीवस्तु की कमीनहीं महताबकुंअरि बोली गो उनके घर में ग़रीबी है परंतु सर-स्वती बड़ी चालाकी स्त्रीहै मुंहसे नहीं कहतीतो क्याहै परंतु समयपर बहुत बढ़ चढ़कर करेगी फूलकुंअरि बोलीअच्छा वह आयेंउनसे पूछाजाय संध्यासमय पण्डित अयोध्या प्रसाद आये तो गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि ने यमुना के मुक़द्दमे को इस तरह पेश किया जैसे कचहरीमें वकील अपने मुक़ा-द्दमोंको पेश करतेहैं ग़रज़ बहुत शोच बिचार करके पण्डित अयोध्या प्रसाद ने यमुना की बात को पसन्दकिया दूसरे दिन गुलाबकुंअरि महताबकुंअरि दोनों बहिनें पास सरस्वतीके आईं और कहा बीबी मुबारक हमारा इनाम दिलवाइये सरस्वतीने कहा परमेश्वर तुम सबको भी मुबारक करे और इनाम देने का मेरा क्या मुंहहै मेरा इनामहै आशीर्बाद सो रातदिन तुम्हारे लियेमैं करतीहूं महताबकुंअरिनेकहानहीं आनतो अवश्य करमुंहमीठा करना चाहिये सरस्वतीने कहा बैठियेर मिठाई खाइयेगा गुलबासाको बुलाया और पांचरुपये निकाल उसके हाथदिये कहा कि पांच रुपयेकी अच्छी मि-ठाईपांच चारप्रकारकी ले आओ और दोनों बहिनोंको पान दिये इतनेमें मिठाईकी टोकरीभी आगई सरस्वती परमेश्वरी महताबकुंअरि गुलाबकुंअरि सबने मिलकर खाई और जो बची पाठशालामें भेजदी अब सरस्वतीने कहा इससमय तक

मैंने अम्माजान की खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसों अच्छी साथत अच्छा लग्न सुहूर्त है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्म मंगनी की होजायगी दोनों बहिन बिदा हुईं तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अम्माजान कुछ आप को यमुना के ब्याहकाभी सोच है सासबोली क्या सोच करूं कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात सोचीहै जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी म-बोली भला बेटी झोपड़े का रहना महलों का ख़ाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दूसरिहा नहीं और हम ग़रीब कि रहने तक का झोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी ट्था कहकर बात खोनीहै सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने पुलाव जर्दा में मगनहैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्नहैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना मेंहै वह उनके बड़ोंकोभी नसीब न हुआ होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बातकरूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हज़ार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनबे में तो ढूंढलो अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपकी बराबरी में पूछा जाताहै दूसरे यह बात मुंहसे कहने कीहै कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दराई क्या बला है बड़े २ स्वरूपवालोंको देखाहै कि जूतियों के समान आदर है और कुरूपेहैं कि लाखोंके लाल बने बैठेहैं सरस्वतीनेकहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बहुत आदमीजिनकी सूरत अच्छी हुई पर प्रकृति

उनकी बुरी और स्वभाव निकम्मे होतेहैं और मनमें घमण्ड होता है इसकारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिज़ाज उनकी सुन्दराईके मोलको घटा देताहै जैसे कोई घोड़ाहै रंगतका साफ हाथ पांवका अच्छा बाल भौंरी से निर्दोष जोबन का दुरुस्त परन्तु चाल का बुरा कहुंलहै दुलती अलग चलाताहै खड़ा होकर उलट जाता है ऐसे घोड़े की कोई सूरत देखकर क्याकरे और जो अच्छे सूरतकेसाथ क़दमबाज़ ग़रीबभी होतो अमोलहै तैसे मेरीनन्द यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपनादूसरिहा नहींरखती अम्बिकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देनेकोभी चाहिये हम ग़रीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जो बातभी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज्ज़त और आदर दहेज पर नहीं होताहै स्त्री पुरुषके मेल मिलाप परहै गुलाबकुंअरि क्या घोड़ा दहेज लेकर गईथी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिनभी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनकोभी हमारे बराबर दहेज मिलाथा फिर क्यों रोज़ लड़ाई होती रहतीहै यह तो अपना २ स्वभाव और अपना२ गुणहै अम्बिकादत्तकी माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहींहै परन्तु कुनबेके लोग कब मानते हैं लड़केने खयाल न किया तो क्याहै सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुज़रेंगी आखिर जीको बुरा लगताहीहै एक तो बेटी वालेका योंही सिर नीचा होताहै उसपर दान दहेजवाजबी वाजबी यह बेल मढ़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वतीने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा थोड़ेही पास बैठे रहते है हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बहुधा क्रोध का सामनाहै सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरी रखलेंगी महताबकुंअरि को जैस

मैंने अम्मा।जान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसों अच्छी सायत अच्छा लग्न मुहूर्त है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्म मंगनी की होजायगी दोनों बहिन बिदा हुईं तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अम्माजान कुछ आप को यमुना के ब्याहकाभी सोच है सासबोली क्या सोच करूं कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात सोचीहै जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी मा-बोली भला बेटी झोपड़े का रहना महलों का ख्वाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दुसरिहा नहीं और हम ग़रीब कि रहने तक का झोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी वृथा कहकर बात खोनीहै सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने पुलाव पादों में मगनहैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्नहैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना मेंहै वह उनके बड़ोंकोभी नसीब न हुआ होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बातकरूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हजार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनबे में तो ढूंढ़लो अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपभी बराबरी में पूछा जाताहै दूसरे यह बात मुंहसे कहने कीहै कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दराई क्या बला है बड़े २ स्वरूपवालोंको देखाहै कि जूतियों के समान आदर है और कुरूपेहैं कि लाखोंके लाल बने बैठेहैं सरस्वतीनेकहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बहुत आदमी जिनकी सूरत अच्छी हुई पर प्रकृति

उनकी बुरी और स्वभाव निकम्मे होतेहैं और मनमें घमण्ड होता है इसकारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिज़ाज उनकी सुन्दराईके मोलको घटा देताहै जैसे कोई घोड़ाहै रंगतका साफ हाथ पांवका अच्छा बाल भौंरो से निर्दोष जोबन का दुरुस्त परन्तु चाल का बुरा कटहा है दुलत्ती अलग चलाताहै खड़ा होकर उलट जाता है ऐसे घोड़ेकी कोई सूरत देखकर क्याकरे और जो अच्छे सूरतकेसाथ क़दमबाज़ ग़रीबभी होतो अमोलहै तैसे मेरीनन्द यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपनादृसरीहा नहींरखती अम्बिकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देनेकोभी चाहिये हम ग़रीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जो बातभी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज़्ज़त और आदर दहेज पर नहीं होताहै स्त्री पुरुषके मेल मिलाप परहै गुलाबकुंअरि क्या थोड़ा दहेज लेकर गईथी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिनभी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनकोभी हमारे बराबर दहेज मिलाथा फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहतीहै यह तो अपना २ स्वभाव और अपना२ गुणहै अम्बिकादत्तकी माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज़ पर नहींहै परन्तु कुनबेके लोग कब मानते हैं लड़केने खयाल न किया तो क्याहै सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुज़रेंगी आखिर जीको बुरा लगताहीहै एक तो बेटी वालेका योंही सिर नीचा होताहै उसपर दान दहेजवाजबी वाजबी यह बेल मढ़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वतीने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा थोड़ेही पास बैठे रहते है हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बहुधा क्लेश का सामनाहै सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरी रखलेंगी महताबकुंअरि को जैसे

मित्रताई यमुनाके साथहै आप देखतीहीरहीं गुलाबकुंअरि परमेश्वर जाने जाहिर में जब वह मिलती हैं बिछी जातीहैं मैं भी तो आखिर जीती बैठी हूं यमुना को जो बुरी प्रकार देखेंगी मुझको क्या मुंह दिखावेंगी और सौ बातकी एक बात मैं यह जानतीहूं कि सास नन्दें भी हवा देखा करती हैं लड़केको रीझाहुआ देखेंगीतो किसी की सामर्थ्य नहींकि कोई यमुनाको आंख उठाकर देखे अम्बिकादत्त की माता ने कहा भला तुम्हारी मर्जी क्या है ढांक के पत्तेपर पांव पूजदूं सरस्वती ने कहा यह तो मैंभी नहीं कहती परन्तु न होने में क्या बेटा बेटीके काम काज इस प्रकार नहीं करते हैनादि-खाना एक रीति रस्म संसारकी है जितनी चादर देखे उतना पांव फैलावे जितना मक़दूर हो और जो बन पड़ा दिया और जो न होसका न दिया नाम निशानके पीछे घर का दिवाला निकालना बुद्धि के विरुद्ध है मेरी पाठशाला में एक शहज़ाद कुंअरि लड़की पढ़तीथी उसके पिताको बलवे की खैरख्वाही में सरकार से पन्द्रह हज़ार रुपये इनाम मिलेथे किसी अंग-रेज़ की जान बचाई थी पन्द्रह हज़ार रुपया उनको इतना था कि जन्मभर इज़्ज़तसे रहते एकबेटा और एक बेटीब्याहने कोरठी शेख़ीमें आकरपन्द्रह हज़ार सरकारका दियाहुआ उठा बैठे और दो हज़ार रुपया ऊपरसे उधार लेकर लगा दिया उस समयतो चारों ओर वाह२ हुई अब घरमें इसप्रकार क्षेपसेटेर करते हैं कि भोजनतकका भीठिकाना बहुत कठिन से लगता है ब्याह में मुझको भी बुलावा आया था सामान और तैयारी देखकर मेरी तो होश की चिड़ियां उड़गईं बल्कि शहज़ादकुंअरि की माता ने बुरा भी मानाहो इस-लिये कि मैंने तो उस समय कह दिया था कि बीबी बेटा बेटीका देना आंखों सुखकलेजे ठंढकथी कहां गया खिचड़ी में परन्तु अपनी हंडिया की खैर मनानी अवश्यहै कहनेको तो मैं कहगुज़री पीछे मुझकोभी पछतावा आया कि शह-ज़ादकुंअरि कहेंगीकि लेना एक नदेनादो यह बे प्रयोजन

भांजी मारतीहै अम्बिकादत्तकी माने कहा हां सचहै मगर कमबख़्त संसारमें रहना है क्या करें कहां गांयहो न हो कर नाही पड़ताहै संसार कीसी न करें तो नकू कौन बनेगरीबी सारी बे इज़्ज़ती कराती है सरस्वती बोली ग़रीबी की क्या बातहै संसारमें तो ग़रीब लोग अधिक हैं जो ग़रीब होना बेइज़्ज़ती की बात है तो जगत में बे इज़्ज़त बहुत हैं ग़रीबी अमीरी सबअपनी अपने भागकेहै सब एकसे क्योंकर होजांय अम्बिकादत्त की माता बोली हय हय शादी ब्याहमें अगर बहुत ख़र्च करने की अंगरेज़ी सरकार से मनाही होजाती तो झगड़ा मिटता सरस्वती, अख़बार से तो प्रकट होताहै कि अंगरेज़ कुछ बन्दोबस्त करने वाले हैं और कहीं २ कुछ बन्दोबस्त होगया है और ब्याहमें ख़र्च की एक हद्द बांधी गई है परंतु यह काम हम लोगों के करने काहै सब एका करके जितने ख़र्च वे फ़ज़ूल हैं छोड़दें, अम्बिकादत्त की मा बोली ख़र्चके फ़ज़ूल होने की जोतुमने कही सो जिसको पर-मेश्वरने दिया है कुछ फ़ज़ूल नहीं हां जिसकी गांठ पैसा कौड़ीनहीं उसकोतो सभी फ़ज़ूलहै सरस्वती, यह न कहिये शादी ब्याह मेंतो वाजिबी ख़र्च कम है फ़ज़ूल बातोंमें अधिक रुपया उठ जाता है जैसे नाच, तमाशा, बाजा गाजा, आत-शबाज़ी, आरायश, नौबत, नक़्क़ारा, चौथी, चाली, बहुत भारी जोड़े जड़ाऊ गहना सभी फ़ज़ूल हैं अम्बिकादत्त की माता बोली तो सीधी यही एक बात क्यों नहीं कहती कि ब्याही फ़ज़ूल है सरस्वती हंसनेलगी और कहा ब्याह तो फ़ज़ूल नहीं है परंतु उसके ऊपरके सब सामान निरे ढको-सले हैं अम्बिकादत्त की माता भला रक्खें तो रक्खें तुम तो कपड़े गहने को भी वाहियात बतलाती हो सरस्वती निरे कपड़े और निरा गहना तो काम की चीज़ है परंतु भारी कपड़े और निरा गहना तो काम की चीज़ है परंतु भारी भारी जोड़े आपभी सोचियेकि किस काम आतेहैं मेरे जोड़े पड़े २ सड़ते हैं घरमें पहनने से कमबख़्त दिल कुढ़ताहै कभी कभाड़ शादी ब्याहमें पहन गये या त्योहार को पहनलिया

बाकी बारह महीने गठरीमें बंधे रक्खे रहतेहैं उसपर यह बखेड़ाकि आय दिन धूपदेना और जो बेचनेजाओ तो माल का मोल नहीं मिलता मसाला गोटा किनारी के दाम तक नहीं खड़ेहोते यही हालजड़ाऊ गहनेका है पण्डित सुन्दर दास की बेटीका ब्याह आपने सुनाहै मुझको तो ऐसे ब्याह भातेहैं अम्बिकादत्त की माता बोली कौन पंडित सुन्दरदास सरस्वती, लड़कियों के मदर्से के अफ़्सर अम्बिकादत्त की मा बोली वह तो शहरके रहने वाले नहीं सरस्वती, नहीं पटने के ओर के रहने वाले हैं स्त्री और बच्चों को अपने पास बुला लिया है मगनी इसी शहरमें की थी घरवाली चाहतीथी कि अपने देशजाकर अपनी बेटी का ब्याह करें यहां से बरात जाय पंडितजीने स्त्रियोंको समझा बुझा यहीं करनेको राजी कर लिया एक दिन चार मेल मिलापवालों को बुला भेजा वो जो घरमें पहुंचे तो सुनाकि घरमें बेटीका ब्याहहै थोड़ी देर के पीछे समधी पुरोहित नाई लड़के को साथलिये आ मौजूद हुये ब्याह होगया ब्याहके पीछे पण्डित सुन्दरदास ने हजार रुपये नक़द बेटी दामादके आगे लाकर रखदिये और कहा भाई मेरी कमाई में तुम्हारे भाग्य का इतनाही था जो मैं चाहताती इसमें बिरादरीकी और आस पड़ोसकी जिव- नार भी करदेता और संसार के ब्योहारके अनुसार एक दो भारी जोड़े भी बना देता परंतु जो शोचा तो यही उचित दिखाई दियाकि नक़द तुमको देदूं अब तुमचाहो जिसप्रकार अपने काम में लावो अम्बिकादत्त की माता बोली कि हां परदेश में पण्डितजी ने जो मनभाया सो किया कहने सुनने वाला कौन था सरस्वती, क्यों कहने सुनने वाला घरवाली थी परदेश पर क्या है हिम्मत चाहिये करने वाला हो तो शहर में भी कर गुज़रे कहने वालोंको बकनेदिया अपने काम से काम रक्खा अम्बिकादत्त की माता बोली क्या तुम ने यमुना का इस प्रकार ऊंघता उदास ब्याह करना बिचारा है सर- स्वती, मैं तो लोगों के कहने सुनने की परवाह नहीं करती

मेरा बशचले तो यमुनाका ब्याह पण्डित सुन्दरदासकी बेटी के अनुसार करूं उन्होंने तो दो चार महमान बुलाये थे और मैं तो इसकी भी कुछ जरूरत नहीं जानती अम्बिका-दत्त की माता बोली न बेटी परमेश्वरके लिये तो ऐसा अंधेर मत करो हम बुढौती में मेरी यही एक बच्ची ब्याहने को है अब क्या मैं मरघट से किसी का ब्याह करने फिर आऊंगी सरस्वती, नहीं ऐसा तो मैं नहीं कहूंगी परंतु यह बात मैंने जीमें ठान रक्खी है कि न तो एक पैसा उधार लिया जाय और न कोई जायदाद गिरों रक्खी जाय जो कुछ जोड़ा बटोड़ा यमुना के नाम रक्खा है और जो कुछ उसके भागसे समयपर मिलजाय वही बहुत है अम्बिकादत्त की माता ऐसा होतो क्या बातहै परंतु जब दूसरे तर्फवाले हामी भरें सरस्वती ने कहा जो वह राजी हो जांय अम्बिकादत्त की माता बोली उनका मान लेना क्या हंसी ठट्ठाहै परमेश्वर रक्खे एक बेटा नहीं मालूम क्या २ हौंसिले उनके मनोंमें हैं वह तो बराबर के टक्कर को देखकर बातकरेंगे और सब अरमान निकालेंगे सरस्वती ने कहा जबसे मैं दिल्लीसे आई हूं इसबातकी फि-किरकर रहीहूं उधर सब बातचीत ठीकठाकहोगई है अभी गुलाब कुंअरि महताब कुंअरि दोनों भागी हुई आई थीं फूलकुंअरि और पण्डितअयोध्याप्रसाद ने मानलिया है अब बिलंबनहींकरना चाहिये परसों अच्छा बारभीहै और अच्छी सायत मुहूर्तभीहै इधरसे मिठाई भेजी जाय और बात पक्की होजाय फिर ब्याह देखा जायगा परमेश्वरदत्त की मा यह बात सुनकर आश्चर्यमें रहगई और कहा बात तो अच्छी है हमारी प्रतिष्ठासे कहीं अधिक हैं परन्तु उनके योग्य सामान तुमसे होना कठिन है सरस्वतीने कहा जब यमुना का भाग्य ऐसे ऊंचे घरमें.लड़ाहै तो परमेश्वर समय पर सब सामग्रीभी इकट्ठाकर देगा इतनेमें पण्डित शङ्करदत्त बाहर से आये सो वह भी मगनी का हाल सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा बहुत अच्छी दो बे शोचे साचे परसों मिठाई भेजदो अर्थात बहुत अच्छी दो

मन मिठाई चालीस रुपये की थालियों में भरकर भेजदी सगनीका होनाथा पण्डित अयोध्याप्रसादने ब्याहका सामाना करना आरम्भ कर दिया और पण्डित शङ्करदत्त से कहला भेजा कि बहुत दिन से मेरी मनोकामना यह है कि तीर्थ यात्रा करूं और केवल इसी बातका इन्तिज़ारहै कि द्वारिका प्रसाद का जल्द ब्याह होजाय क्योंकि जीवनेका भरोसानहीं पण्डित शङ्करदत्त ने सरस्वती से पूछा कि क्या जवाब कहला भेजें सरस्वतीने कहा इस समय यह कहला भेजना चाहिये कि हमभी इसी चिन्तामें हैं जहां तक होसक्ता है यत्न करते हैं सामान जो देना मंजूर है इकट्ठा होजाय तो हमको भी यह काम कर देना है जितना बेग होजावे उतनाही उत्तम है पण्डित अयोध्याप्रसादने इसके उत्तर में यह कहला भेजा कि मैंने दान दहेज लेनेके लिये आपके यहां नातेदारी नहीं की मुझको केवल लड़की चाहिये इधर से जवाब गया बहुत अच्छा हमकोभी वैशाख में ब्याह कर देना मंजूर है अर्थात् वैशाख सुदी तीज लग्न मुहूर्त ब्याहका ठीक हुआ और दोनों ओरसे सामान होने लगा सामान का आरम्भ होना था कि पण्डित शङ्करदत्तको चिन्ता आई किसीसमय कहतेथे छदामी लालसे उधार लूं कभी सोचतेथे कि रुईका कटरा बेंचडालूं सरस्वतीने पण्डित शङ्करदत्त को दुचित्ता देखकर पूछा कि आपने खर्चका क्या यत्नकियाहै पण्डित शङ्करदत्तने कहा क्या बताऊं कि ब्याह का दिन सिर पर चला आता है रुपये का यत्न कहींसे बन नहीं पड़ता छदामीलालसे मैंने उधार मांगा था वहभी टाल टल गया रुई कटरा बेंच डालनेको सोचा था कोई गाहक नहीं ठहरता सरस्वतीने कहा कभी आप व्यो-हरियाका नाम न लीजे और न रुई कटरा बेचियेगा उधार से कोई वस्तु बुरी नहींहै और जायदादका बेंचडालना कौन कठिनहै परन्तु उसका मिलना फिर बहुत दुर्लभ है पण्डित शङ्करदत्त ने कहा ऋण तो लूं नहीं और कोई वस्तु बेंचूं नहीं तो क्या मैं रसायन बनाना जानता हूं रुपया कहां से

आवे सरस्वती ने कहा पहिले घरका हिसाब देखिये कपड़े तो कुछ पहिले से तैयार हैं सिर्फ थोड़ा मसाला लेना होगा सो मेरे जोड़े में कोई २ बहुत भारी हैं उनमें से कम करके इतना मसाला निकल आवेगा कि यमुना के जोड़ोंमें पूरा होजाय बर्तन भांड़ा मौजूद है कोई मोल लेना नहीं काठकबाड़ यह सब मैं अपना देदूंगी बे प्रयोजन पड़ा २ सत्यानाश होता है और रुपया आखिर आपके पासभी कुछ होगा पण्डितशङ्कर दत्तने कहा मेरे पास तो पांच सौ रुपये हैं सरस्वतीने कहा बहुतबहुत हैं जो मैं दिल्ली जाने लगीथी तो पाठशालेकी रकममें चारसौ रुपये थे वह अबतक रक्खे हैं मेरे पीछे दोसौ रुपये और हुये आधा दीदीका हिस्सा है और आधा यमुनाका यह मिलाकर पाठशालेकी रक़म पांचसौ होजायगी यमुनाके छोटेभाई को मैने चिट्ठी लिखी है और तीनसौ रुपये मंगवाये हैं दोसौ रुपये भाई जानने भेजनेको लिखा है इसप्रकार डेढ़ हजार नक़द इससमय मौजूद है हजारके कड़े जो महताबकुंअरिके व्याहमें मुझको मिले थे मेरे किस कामके हैं मैंने चाहाथा कि यमुना को व्याहमें देदूं परन्तु फिर सोचा कि उसी घरके कड़े उसी घरमें जाने उचित नहीं मैं इनको बेंच डालूंगी जयजयवल्लीके वसीले से बाजार में भेजे थे कश्मूमल जौहरी तेरह सौ रुपये देताथा यमुनाके भाग्यसे शायद आगे अधिकका गांहक मिल जाय और एक यह मेरे मनमें बैठी है कि आप भाईजान के लानेको आगरा जाइये और रईससे उनका छुट्टी दिलाने में व्याहका जिकरकर दीजिये रईस बड़ा हौसलेवाला है विश्वास होता है कि वहभी कुछ सहायता करे इसलिये कि सदा से हिंदुस्तानी सरकारों की यह रीति है कि शादी व्याहमें अपने पुराने सेवकों के सहायक होते हैं सरस्वती की सलाह से पण्डित शंकरदत्त आगरा गयेतो रईसने पूछा कि पण्डित जी किस कारण आये पण्डित जीने कहा कि मेरी लड़कीका व्याह है पस इस हेतु आया हूं कि आप परमेश्वरीदत्त को एक महीने की छुट्टी देवें और यह तो अर्ज नहीं कर सका

कि हुजूर के कुनबेसे कोई शरीक होवे परंतु दीवान साहब जो इन दिनों लखनऊमें हैं सरकार की तर्फसे शादीमें तशरीफ लावेंतो बराबर वालोंमें बड़ी इज्जत बढ़ेगी रईसने परमेश्वरीदत्तकी छुट्टी मंजूरकी और पण्डित शंकरदत्तके आने जानेका खर्च दिया और दीवान जीको हुक्म भेज दिया कि हमारे तर्फ से पण्डित जीके यहां जाना और पांचसौ रुपये न्योता देना सरस्वतीके सलाहसे यह पांच सौ बे बैठे बैठाये मुफ्त आगये उधर जड़ाऊ कड़े जयजयवन्तीके मारफ़त मल्लिका जहां के पास पहुंचे तो वह देखकर लोट पोट होगई और आंख बन्दकरके दो तोड़े हवाले कर दिये अबतो रुपये की चारों ओर से रेल पेल होगई सरस्वती के अच्छे बन्दोबस्त से बहुत अच्छे जोड़े तैयार हुये और जो गहना बना वह दोहरा तेहरा बना पण्डित शंकरदत्तके तो कई पुश्तोंमें ऐसा ब्याह नहीं हुआ था समधियाने वाले भी यह सामान देखकर दंग होगये गहने जो २ दिये गये ब्योरा उसका संक्षेप से यह है नाक में नथ और कील माथे में टीका कानमें पत्ते जड़ाऊ और सादे छपके की बालियां, मगर, मुरकियां, बिजुलियां, करनफूल, झुमके, गलेमें चम्पाकली, गुलशी, तोड़ा, धुक धुकी, चन्दनहार, कण्ठमाला, पचलड़ी, भुजापर जौशन नोरत्न, भुजबन्द, नौनगे, हाथों में कड़े जोगरची, चुहोदंतियां, पहुंचियां, जहांगीरियां, अंगुलियों में अंगूठी छल्ले आरसी पांवमें पायजेब कड़े कारचोबी जालदार मसालेदार मिलाकर बहुत से जोड़े और सौसे अधिक बर्तन और ऊपरी सामान भी बहुत अच्छा इसी प्रकार का दिया अर्थात् बड़े धूम धाम से यमुनाका ब्याह हुआ यमुना सुखपाल परबिदा हुई पण्डित अयोध्या प्रसाद ब्याह हुए पीछे थोड़े दिनों तक बहू का रंग ढंग देखते थे यहां क्या देखना था यमुना तो सरस्वती के खराद परचढ़ चुकीथी किसी प्रकार कोर कसर इसमें नहीं रही थी पण्डितजी ने जितना बहू को परखा गुणी चतुर पाया पण्डितजीको जबअच्छा बिश्वास हुआ कि यमुना

सब विधि घरको सम्हाल लेगी तो पण्डित अयोध्या प्रसाद ने तीर्थ यात्रा का सामान शुरूश्र कर दिया नक़द रुपिया तो आप अपने साथ लिया मकानात, दुकानात, गंज गांव गिरावं, सब बेटे के नाम लिख दिये और आप स्त्री सहित तीर्थ यात्रा को निकल खड़े हुये यमुनाका यद्यपि ब्याह होचुका था परंतु यमुना सरस्वती का पहले से भी अधिक लिहाज करती थी जरा २ सी बात में सरस्वती से सलाह लेती अब सरस्वती को अपने बुद्धि के प्रकाश का अच्छा समय मिला बड़ा कारखाना बड़े कार्य वो बन्दोबस्त किये कि द्वारिका प्रसाद को परमेश्वर झूठन बुलवाये समयका राजा महाराजा बना दिया अभी तक तो सरस्वती ग़रीबीकी दशामें थी नंगी क्या नहाये क्या निचोड़े परंतु अब परमेश्वर रक्खे दौलतधन सम्पदा उसके नंद को मिली तो फिर उसके बन्दोबस्त करने का मनमाना समय सरस्वतीको मिलगया ऐसे समयमें जो२ काम सरस्वती ने किये वह प्रलय कालतक लोगोंकी जबानपर रहेंगे मगर अफसोस है कि उसके लिखनेका सावकाश नहींरहा जोनसीहत मानने वाला हो और बातका सुनने समझने वाला हो तो जितना लिखजा चुका है वहभी कुछकमनहीं अनेक प्रकार की बात और अनेकप्रकारकी शिक्षा इसमें मौजूद कहने को तो कहानी क़िस्सा है परंतु हक़ीक़त में नसीहत व हिदायत है अबइस पुस्तकके समाप्त करनेके पहिले एकबात यह लिखनी अवश्य है कि सरस्वती बहुतसी छोटीअवस्था में पुत्रवती होगई थी सो सरस्वतीके सन्तानोंका चर्चा इस पुस्तक में नहींहुआ अब उसका जिकरकिया जाताहै सरस्वतीके लड़केतो बहुत हुये परमेश्वर की माया से जीते कम रहे एक लड़का महेश दत्त आखिर में जीता रहा कई लड़कों के ऊपर यह लड़का हुआ था इस लड़के के उत्पन्नसे पहिले एक बेटा मंगलप्रसाद और एक बेटी मैना मरचुकी थी बच्चोंके पालनेमें एहतियात बहुतेरी होती थी सर्दी गर्मी का बचाव खाने तक के समय मुक़र्रर थे और कपड़ा लत्ता अन्दाज और खबरदारी ऐसी

भारी कि खुराबचीज कहीं मुंहमें न डालने पावें जब दांत निकले मसूढ़ा में नस्तरदिया गया कि ऐसा नहो कि दांतों के क्लेशको मच्छान सम्हाल सके जब बालक चार वर्षका ड़ुआ तुरंत चेचक के बचावके लिये टीका लगवादिया गरज जहां तक मनुष्य की बुद्धि काम करतीहै सब प्रकार का बन्दोबस्त किया जाता था परंतु तक़दीर के आगे तदबीर नहीं चलती मंगलप्रसाद चार बर्ष का होकर मरा पेचिश ड़ुई दस्त बन्द करने की दवा दी बुखार आने लगा सरसाम होगया पला पलाया बालक हाथसे जाता रहा यह दाग़ मिटा न था कि मैना सात वर्षकी होकर बीमार पड़ी और कुछ ऐसे बला के दस्त छूटे कि प्राण लेकर बन्दड़ुए दुनियां जहान की दवायें ड़ुईं परन्तु मौत कब दवा को मानतीहै मैनाके मरनेका सरस्वती को बड़ुत बड़ा दुःखड़ुआ पहिलेतो लड़की दूसरे कुछ मरने वाली थी अपनी माता पर ऐसी मोहित थी कि एक क्षण मात्र अलग न होती साथ सोना संग उठना माता की दवातकहो तो अवश्य चीखलेना और छोटीसी उमरमें बस पढ़ने में ध्यान जब मंगलप्रसाद मराथा तो स्त्रियोंने सरस्वती के ईमान में खलल डालना चाहा था कोई कहती कोख का खलल है प्रदुमनमिश्र का इलाजकरो कोई कहती दूध पर नज़र है चौराहे में उतारा रखवाओ कोई कहती घर अच्छा नहीं लच्छन ओझासे किलवाओ कोई कहतीसफरमें आई गई हो कोई चुड़यल लपटगईहै किछौछे चलोगंडे तावीज़ अमल मंत्र टोने टटके सारे दुनियां जहांन के लोग बतलातेथे परंतु वाहरी सरस्वती यों ऊपर तले दो बच्चे मरे लेकिन सदा परमेश्वर पर भरोसा रखती थी किसी ने कुछ कहा भी तो यही उत्तरदियाकि जब परमेश्वर की इच्छाहोगी तो यों भी वह अपनी कृपा करसक्ता है मैनाके मरनेकी ख़बर जबदेवीदत्तको कांगड़ेमें पड़ुंचीतो बड़ुत घबड़ाये और उस घबड़ाहट की दशामें बेटीके नाम उन्होंने यह चिट्ठी लिखी॥

स्वस्तिश्री चिरंजीविनी सरस्वती को देवीदत्त का आशीष

प्राप्त होवै इससमय मुझको लखनऊ की चिट्ठीसे मैनाकेमरने का हाल मालूमहुआ मैं इसबातसे इन्कार नहीं करता कि मुझको क्षेम नहीं हुआ परंतु मेरी बुद्धि ऐसी बेठिकाने नहीं हुई कि ना समझपुरुषों के प्रकार मैं सन्तोष न करसका मुझको तुम्हारा बड़ा शोच है तुमपर यह दुख बड़ा भारी हुआ होगा परंतु हरएक समयमें मनुष्यको बुद्धि से सम्मति लेना चाहिये बुद्धि हमलोगोंको इसीहेतु परमेश्वर ने दीहै कि दुख में हमअपनी बुद्धिसे सहायता लेवें मनुष्योंको संसारकी दशा पर बिचार करना अवश्यहै और यहशोचप्रयोजन से खालीन नहीं है पृथ्वी आकाश पहाड़ बन नदी मनुष्य पशु पक्षी वृक्ष अनेकप्रकार की बस्तु संसार में हैं और इस संसार का बड़ा भारी फैलाव है दिनमें एक समय पर सूर्यका निकलना रात्रि का होना चन्द्रमा और तारागणोंका चमकना कभी सर्दी कभी गर्मी कभी बसीत और जल के प्रभाव से भांति २ के फलफूलका उत्पन्न होना यहसब बातें विचार करने वाले को बर्षों तक शोचने को बहुत हैं आप मनुष्य को अपनी दशा शोच बिचार करने को क्या कमहै किसप्रकार मनुष्य उत्पन्न होता है और किस भांति पलता और सयाना होता है और क्योंकर बालापन और युवा और वृद्ध का समय इस पर व्यतीत होताहै और किसप्रकार अन्तमें संसारको त्याग करता है यह बड़ी उत्तम और कठिन बात बिचार करने योग्यहै यह सब कारखाना किसी हेतुसे परमेश्वरने जारीकर रक्खा है और जब तक वह चाहेगा यह रचना इसीप्रकार रचा रहेगा संसारके खाने शुमारीसे प्रगट होता है कि एक घंटेमें साढ़े तीन हजार मनुष्य संसार में मरते हैं याने एक पलमेंएकआदमी और इतनेही उत्पन्नभीहोतेहोंगेअबहिसाब करो कि एक महीनेमें कैलाख मनुष्य मरते और पैदा होते हैं और शोचो कि लाखों बर्षसे यही तार चला आताहै पस अनगिन्त आदमी अबतक संसारमें मरचुकेहैं मौत एकसा-मली और जरूरी बात है बड़े २ बलवान राजा महाराजा

और बड़े ऋषि मुनि तपस्वी योगी पण्डित आचार्य्य वैद्य जो कि संसारमें मुर्दोंको जिला सक्ते थे आप कालके चबेना हो-गये संसारमें जो पैदा हुआहै यह परमेश्वर की आज्ञाहै कि वह एकदिन मरे फिर जो यह आज्ञा किसी दिन हमपर या हमारे किसी सम्बन्धी या नातेदार पर जारी की जाय तो हमको कोई कारण दुख माननेका नहींहै यह बात खूबसोच करनेके योग्यहै और जब तुमको मृत्युका भेद प्रकट होजावेगा तो मुझको भरोसा है कि तुमभी मेरे प्रकार समझोगी कि किसीके मरनेपर शोक करना व्यर्थहै किसीके मौतपर दुखित होना दिलके लगाओ परहै जो हम सुनें कि ब्रह्मा का बाद-शाह मरगया इसपर उसका कुछ खेद नहीं होगा इसलिये कि हमको उससे कुछ प्रयोजन न था बल्कि महल्ला और प-ड़ोसमें जो कोई ग़ैर आदमी मरजाय जिस्से किसीतरह का वास्ता न हो तो हमको बहुत कम दुःखहोताहै फिर हमको ज़ियादती शख्सके मरनेका होता है जिससे हमको तअल्लुक़ है और जितना तअल्लुक़ है भारीहै उसी क़दर रंजभी भारीहै नानी के भतीजी के पोतेबहू पर विवासे के बेटे की जोरू जो मरे तो क्या दूरका वास्ता दर को सम्बन्ध रिश्तेनाते पर कुछ नहीं बल्कि मेल मिलापसे भी दुःख होताहै अब शोचना चा-हिये कि संसार में हमको किससे अधिक तअल्लुक़ है इसके वास्ते कोई दस्तूर मुक़र्रर नहीं है नज़दीक का रिश्ता हो और सदा लड़ाइयां और सदा बिगाड़ रहाहो तो ऐसे रिश्ते दार ग़ैरसमझे जातेहैं या अपना गोत नहीं और सम्बन्धनहीं परन्तु प्रीति मेल मिलापहै तो उनके मरनेसे बहुत दुःख होता है और हर एक शख्स अपने हालत के मुवाफ़िक तअल्लुक़ रखता है यह संसार के बन्धन सब प्रयोजन अर्थ होतेहैं जो अपना सम्बन्धी हमारे फायदे में विघ्न डाले अवश्य कि वह हमसे छूटजाय जो ग़ैर आदमी हमारे काम आवे अवश्यहै वह मिस्ल अपनोंके प्याराहो परन्तु वह अर्थ जिस्से तअल्लुक़ प्रगट होताहै ज़रूर नहीं कि रुपये पैसेका हो यद्यपि बहुधा

ऐसे प्रकार का होता है परन्तु कभी उम्मेद से भी तअल्लुक़ पैदा होता है बहुत लोग हमारे मित्र हैं जो हमको कुछ देते नहीं परन्तु यह आसरा है जो हमको कभी किसी प्रकार की ज़रूरत होगी तो यह काम आनेवाले हैं तअल्लुक़ के पैदा होने के कई कारण होते हैं मैं इस बातको अब बहुत नहीं बढ़ाता प्रयोजन मेरा इस चिट्ठी में संतान के तअल्लुक़ के लिखने से है यह तअल्लुक़ जो संतान से है सर्वत्र है कोई मा बाप बल्कि कोई पशु पक्षी तक इससे निवृत्त नहीं है इससे मालूम होता है कि केवल अर्थ औ प्रयोजन पर इसकी बुनियाद नहीं है बल्कि परमेश्वर चाहता है कि माता पिताको अपने संतानकी प्रीति हो क्योंकि संतान थोड़े दिनों तक मुहताज पालने की होती है इसलिये यह प्रीति माता पिता को परमेश्वरने लगा दी है कि इस प्रीति के लगाव से मा बाप बच्चों को पालें और बड़ा करें यहां तक कि वह बड़े होकर आप संसारमें रहने सहने लगें यह सन्तानका पालदेना इतना तअल्लुक़ तो परमेश्वरके तर्फ़ से माता पिता को दियागया अब रहे यह बखेड़े कि अब संतानकी तमन्ना है नहीं है तो दवा है इलाज है मंत्र तअवीज़ गंडा है संतान हुई तो यह चिन्ता है कि बेटे हों बेटियां न हों या जो हों जीते रहें यह खुद मनुष्यों की अपने हवस की बातें हैं रही यह बात कि सन्तानकी आस जो मनुष्यने परमेश्वर की इच्छा से अधिक अपने मनमें प्रगट की निस्संदेह अपने अर्थ और प्रयोजनके हेतु होती है अर्थभी कई प्रकार के हैं बाज़ मनुष्य यह समझते हैं कि संतानसे नाम चलता है बहुतेरे जानते हैं कि बुढ़ापेमें हमारी सेवा करेंगे ब[illegible]ों को यह ध्यान होता है कि हमारी सम्पत्ति धनको [illegible]ारे पीछे लेंगे अब इन खयालों पर सोच करो कि [illegible] तो वाहियात और झूठे हैं नाम चलता क्या मानी कि [illegible] यह जानें कि फलाने के बेटे और फलाने के पोते हैं [illegible] तो हम जब आप संसार से न रहे तो जो किसीने हम[illegible] जाना तो क्या और न जाना तो क्या अब विचार करो [illegible] नाम कहां तक चलता है किसी

मनुष्यसे उसके बाप दादोंके नाम पूछो तो कदाचित् परदादे तक सब कोई बता सकेगा इसके ऊपर संतान को नहीं मालूम होगा कि हमारे सगरदादा कौन थे दूसरे मनुष्यों को उनके मुरदोंकी हड्डियाँ उखाड़नेकी क्या जरूरत है फिर जो नामभी चला तो दोतीन पीढ़ीतक आगे कुशल चेम और दो तीन पुश्त तक नाम चलनाभी एक खयाली बातहै दश बर्षसे मैं इस जिले में हूं हजारों आदमी मुझको जानते हैं और हजारोंको मैं जानता हूं परन्तु न मैं उनके बापको जानता हूं और न वह मेरे बापको जानतेहैं दूसरा कारण संतानके अभिलाषा का यहहै कि बुढ़ापे में सेवा करें यह ध्यान कितना वाहियातहै यह क्योंकर निश्चय है कि उनके बड़े होने तक हम जीते रहेंगे और मानो कि हम जीतेभी रहे तो उनके निस्बत यह ध्यान करना कि बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे एक मन समझौता है इस कलियुगमें हम ऐसी संतान बहुत कम पाते हैं जिनको माता पिता का अदब और सेवा करनेका ध्यान होता है अदब और सेवा को तो अलग रहने दो इनदिनों तो बहुधा संतान से माता पिता को दुःख क्लेश पहुंचताहै जिस संतान की मनुष्य अभिलाषा करते हैं अन्त तक उनके हाथोंसे दुःख पातेहैं जब तक छोटे हैं पालना एक मुसीबत आज आंखें दुखतीहैं कभी पसुलीका दुःख कभी दस्त जारी कभी दांत निकलतेहैं कभी चेचक निकलीहै परमेश्वर २ करके बड़े हुये तो उनके खाने कपड़े का सोच आदमी नहीं मालूम किस हालमें है नौकर है या नहीं पैसा पासहै या नहीं इनको जहांसे [illegible]सके देना जरूर मातापिताको उपास हो तो हो इनको कुछ न हो तो दमड़ी छदाम रोजके चने चाहियें अब माबाप चा[illegible]हैं कि लड़का काम सीखे पढ़े लिखे और पूत कपूतहै कि [illegible]ढ़ने के नाम से कोसों भागता है जब तक मदर्से के चार लड़के [illegible]ग पकड़ के घसीट न ले जांय जाना सौगन्धहै और वहां गये [illegible] मास्टरकी आंख बची कहीं चौराहे पर निकल गये कहीं खड़े [illegible] खड़े गुड़ियां खेलते हैं

कहीं बाजारोंमें खाक छानते फिरतेहैं और तनिक बड़े हुये माता पिताको जवाबदेनेलगे लुच्चोंकी संगति और बदमासों का साथ न नाचसे परहेज न बुरी सुहबत से बचाव पुरुषों के नाम बदनाम करते फिरते हैं इसीप्रकार बहुधा लड़के चोर जुआरी ऐयाश औवाश गंजेड़ी भंगेड़ी होजातेहैं अब संतानब्याहनेयोग्य हुई सारा शहर छान मारा कहीं ढबकी बात नहीं मिलती मेल मिलापवाले हारकर बैठरहे कुनबेके लोग एक २ से कह चुके कोई हामी नहीं भरता एक दुरदशा में प्राण हैं माता बिचारी मंदिरों में मानता मांगती फिरती है नजूमी जोतिषी से जन्म पत्रादिखाती है और हरवक्त परमेश्वरसे यह मांगती है कि ग़ैब से किसी को भेज परमेश्वर २ करके कहीं बातचीत ठहरे तो माता बिचारीके पास चांदी तकका तार नहीं समधियाने वाले सोने चांदी का गहना मांगते हैं कोई बिधि घरको उजाड़ पजाड़के बचाकर ब्याह किया चिड़िया की जान गई खाने वालों को स्वाद नहीं मिला दहेज है कि फेंका २ फिरताहै समधिन कहतीहै क्या दिया ऐसे न होतमें बेटी जननी क्या जरूर थी कोई वस्तु आंख तले नहीं आती बात २ में ताना तिशना है दामाद जो आवे उनके मिजाज नहीं मिलते व्याहको चार दिननहीं हुये कि जोड़ू खसममें जूती पैजार होनेलगी बेटीकी बेटे दी और लड़ाई कीलड़ाई मोललो फिर यह नहीं कि यह लड़ाई एक दिनहै बल्किजन्म भरकी मुसीबतका चर्खा चला बेटीके संतानहोने का लग्गा लगा माता बे दामोंकी चेरी बे दर्माहे की दाई बनगई जन्म भर अपने लड़कों के पालने के दुख सहती रही अब परमेश्वर परमेश्वर करके दो वर्ष से आराम मिला था कि बेटे के चेंगे पोटे सम्हालने पड़े जो बहूआई तो झगड़े की गांठ लड़ाई की पोट सासकोतो जूतीके समाननहीं समझती नन्दोंकातथुनों में प्राणकर रक्खाहै न जेठसे शर्म न ससुरेकी लाज स्त्रीहै कि पुरुषों की पगड़ी उतारे लेतीहै परमेश्वर पनाहमें रक्खे बेटे नालायकों को देखिये कि जीतेजी तो यह उधम जोतरक्खीहै

यह भड़ुआ बीबीके पक्षपरहै उलटा माता पितासे लड़ता है यहां तक कि माता पिता घर छोड़कर अलग भारके मकान में जा रहे यह फल इस समयके संतानसे माता पिताको मिलताहै बहुत थोड़े हैं वह मनुष्य जो सन्तान से सुखपाते हैं फिर हमलोग अपनी अज्ञानतासे सन्तानकी अभिलाषकरते हैं गोया हम लोग दुखकी कांक्षाकरके बुलातेहैं अवरहा यह हाल कि माल और सम्पत्ति का कोई वारिस हो इसकारण से पुत्रकी लालसा की जाय यह ध्यान कितना मूर्खहै क्योंकि जब आदमी आप संसारसे उठगया तो उसके धन दौलतको जो उनकेबेटोंने लियातो क्या अथवा माल लावारिसहोकर सरकारमें गयातो क्या यह दौलत सम्पत्ति परलोक में कुछ काम न आवैगी परंतु उतनीही काम आयेगी कि जितनी परमेश्वरके राहमें हम आप खर्चकर जांय या हमारे पीछे हमारे नामसे परमेश्वर के राहमें खर्चहो जब हमने धनदौलतको आप खर्च नहीं किया और ऐसाजरूरी काम सन्तान के जिम्मे छोड़गये तो हम से अधिक कोई निर्बुद्धि नहीं है जो सन्तान माता पिताके जमअ्की हुई संपति सेंत मेंत पा जाते हैं उनके खर्च करनेमें उनको सोच नहीं होता मनुष्य उसी धनका आदर करताहै जिसको वह खुद अपनी मेहनत और बलसे पैदाकरता है पस माता पिता तो सन्तान के लिये संपति छोड़गयेऔर उसने नाच रंगमें उड़ादी मुकद्दमे करदी और इतनाभी नहीं होताकि पिताके नाम एकसीधा भी किसी साधू या किसी अतिथि कोदे क्या ऐसे सैकड़ों हजारों कहानी संसार में नहीं हैं कि लोग जन्मभर इकट्ठा करते२मरगये सन्तानने दौलत पातेही वह गुलछर्रे उड़ाये कि थोड़े दिनोंमें बापकी जमाकी हुई दौलत उठाकरबैठरहे इस बातसे तुमको प्रकटहोगा कि जितना अधिक बंधन अपने मनसे तुमने सन्तान में बढ़ा लियाहै वह हमारे हक़में बहुत लोभ देनेवालाहै हमको सन्तानसे इतने बंधन रखनेकी आशाहै कि जब तक वह हमारी ... इतान रहें हम

उनकी पालनाकरें और इस पालनमेंभी इस बातकी तमन्ना अपने मनमें न आने दें कि सन्तान बड़ी होकर इस पालनके बदलेमें कभीहमारी सेवा करेगी यह अभिलाष प्रगटकरना बड़ी ना समझी की बात है बल्कि यह समझना चाहिये कि परमेश्वरने जो हमारा मालिकहै उनकी पालनेकी सेवा हम से तअल्लुक़की है हम संतानको पालतेहैं परमेश्वरकी आज्ञा की तामीलकरतेहैं यह फुलवाड़ी परमेश्वर की है और हम उसकी ओरसे इसफुलवाड़ीके माली हैं जो फुलवाड़ीका मालिक किसी वृक्षको क़लमकराने अथवा काटडालनेकी आज्ञा दे माली यह कब कहसक्ता है कि मैंने इस वृक्षको बड़े यत्न और क्लेशसे पालाहै यह क्योंकाटा और क़लमकिया जाता है संसार के सब बन्धन केवल इतने लिये है कि आदमी एक दूसरे को लाभ पहुंचावे हम थोड़े दिनों के लिये संसार में भेजे गये हैं और यहां हमको किसी का पिता किसी का पुत्र बनादिया है इसलिये कि वह लोग हमारी और हम उन लोगों की सहायता करें और मेल मिलाप से अपने जीवन के दिन पूरे करजांय संसार हमारा घर नहीं है हमको ऐसी जगह भी जाना होगा कि जहां न कोई हमारा है न हम किसी के हैं जो हम किसी के पिता हैं तो केवल थोड़े दिनके लिये और जो किसी के बेटे हैं तो भी थोड़े दिनों के लिये फिर हम किसी को मरता देखें तो दुःख क्लेश उठानेकी क्या बात है क्लेश तो तब हम करें जब हम यहां बैठरहैं हमको खुद भी तो जाना है नहीं मालूम किस घड़ी बुलाया हुआ और चलना ठहर जाय फिर सब से कठिन यह है कि मरना केवल यही नहीं है कि शरीर से प्राण निकल गया बल्कि वहां जाकर बात २ का लेखा देना होगा ज़बान झूठ और गाली और बेहूदह बकवाद की जवाबदिही करेगी आंख नजर लड़ाने की सज़ा पायेगी कानको किसी की बदी और बुरी बातों के सुनने की सज़ा दी जायगी हाथसे किसी पर ज़ादती की है या पराया माल चुराया है काटा जायगा

पांव जो वेराह चले हैं शिकंजे में कसे जायंगे बड़ा टेढ़ा समय होगा परमेश्वर अपनी दया से बेड़ापार करे तो हो सक्ता है जिनको इनबातों से निश्चिन्ताई हो वह किसी के मरने पर ग़म करें या किसी के पैदा होने से आनंद करैं तो हो होसक्ता है परन्तु संसारी मनुष्यों में कोई ऐसा भी मनुष्य है जो अपने परलोक से निश्चिन्त होचुकाहो सरस्वती अपनी सुधि लो और परलोक के हेतु सामान करो कि जहां सिवाय अमल के कुछ काम न आयेगा और परमेश्वर से बिनती करो कि वह हम सबका अंजाम बख़ैर करे॥

इति स्त्री दर्पण समाप्तः॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रामायण नानार्थ नौ स-	भगवद्गीता विष्णु सहस्त्रना-	भाषा महाभारत विजय
कुन्दावली	म सहित	मुक्तावली
दूसरी पुस्तक रामायण माला	भर्तरी गीत	शृंगार प्रकाश
तीसरी रामायण गीताष्टक	देवी भागवत नागरी	दोहावली रत्नावली
चौथी ज्ञान दोहावली	कल्पसूत्र	समर विहार विन्द्राबन
पांचवीं रस सारिणी	बिहारी सतसई सटीक	रसल सार
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	कथा चित्रगुप्त
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्यनारायण की कथा स०	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कृष्ण बाल लीला
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी संध्या	गीत गोविन्द सटीक
राम कलेवा	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स०	रामाभिषेक नाटक
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक	इन्द्र सभा नागरी
कवि कुल कल्पतरु भाषा	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	सिंहासन बत्तीसी
प्रेम रत्न	निर्णय सिन्धु	शुक बहत्तरी
बन यात्रा	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अर्थात् गुल-
भजनावली	दैवज्ञ भरण	बकावली
बारह मासा फ़क़ीर अल्ला	ज्ञान चालीसी	गुलसनोबर नागरी
चरखा	शङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चन्द्रिका
बारह मासा बलदेव प्रसा-	योग वाशिष्ठ देव नागरी में	छन्दोर्णव पिङ्गल
द कृत	मार्कण्डेय पुराण	हिदायत नामा माल गुज़ारी
कृष्ण सागर	बैताल पच्चीसी	हिदायत नाम बन्दोबस्त
हारीत स्मृति नागरी	दान लीला नाग लीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
भगवद्गीता सटीक नागरी	सभा विलास	बाल बोध
रामायण राम विलास	विक्रम विलास	क़ानून ॥
यमुना लहरी	इन्द्रजाल नागरी	ताज़ीरात हिन्द अर्थात्
षट् पञ्चाशिका	कायस्थ कुल भास्कर	ऐक्ट ४५ सन् १८५९ ई०
कल्पसूत्र भाषा	क़िस्सह गोपी चन्द भरतरी	ऐक्ट २५ सन् १८६६ ई०
विनय पत्रिका सटीक	बहार विन्द्राबन	ज़ाबिते फ़ौजदारी
किताब पटवारी ४ भाग	पद्मावती खण्ड आल्ह खंड	मजमूआ ऐक्ट लगान अ-
रस राज	लावनी व शेर बनारसी	वध जिस्के साथ नीचे लि-
कृष्ण प्रिया	युगल विलास	खे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं॥ ॥
ज्ञान स्वरोदय	जनक पच्चीसी	ऐक्ट २४ सन् १८६५ ई०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ऐक्ट १० सन् १८७७ ई०	भाषा चन्द्रोदय	आरण्य काण्ड
जदीद	इंगलिस्तान का इतिहास	किष्किन्धा काण्ड
ऐक्ट १९ सन् १८६१ ई०	गणित लगा १ भाग	सुन्दर काण्ड
ऐक्ट नं. २ सन् १८६६ ई०	तथा २	लंका काण्ड
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	तथा ३	उत्तर काण्ड
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	गणित प्रकाश १ भाग	अक्षरारम्भ
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २	भाषा तत्त्व दीपिका
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	तथा ३	बाला भूषण
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा ४	हिदायत नामा मुदर्रिसा-
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	शिशु बोध	न् हल्क़ह बन्दी
ऐक्ट नं० १८ सन् १८६५ ई०	पशुचिकित्सा	शिक्षा वली
क़वायद रेलवे और उस	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	भोज प्रबन्ध सार
के साथ क़ानून भी हैं ॥	तथा २	राजनीति
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	रेखा गणित १ भाग	स्त्रियों की हित पत्रिका
ऐक्ट १९ सन् १८७३ ई०	तथा २	अवध भूगोल
अर्थात् क़ानून लगान	सूरज पुर की कहानी	कवित्त रत्नाकर
मुमालिक मग़रबी व शि-	विद्या रत्न	भूगोल दर्पण
माली	भूगोल तत्त्व	बीज गणित १ भाग
ऐक्ट १२ सन् १८७४ ई०	पदार्थ विद्या सार	तथा २
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	वर्ण प्रकाशिका १ भाग	क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व
सर्रिश्ते तालीम की पुस्तकें	तथा २	महा भारत भाषा छन्दप्र-
विद्या की नेव नागरी अक्षरों में	वर्ण प्रकाशिका कैथी	बन्ध में जो श्री मन्महाराजा-
विद्या की नेव कैथी अक्षरों में	१ भाग	धिराज उदित नारायण सिं-
भाषा लघु व्याकरण	तथा २	ह जी काशी नरेश ने गोकुल
१ भाग	मंगल कोष	नाथादि कवीश्वरों से रचना
तथा २	पत्र दीपिका	कराय कलकत्ते में छपवाया
धात्वर्सव	भारत खण्डिका	था वही श्रीयुत माधव सिंह
अक्षराबली	क्षेत्र प्रकाश	गढ़ अमेठी नरेश की सहाय
अक्षरदीपिका	पत्र दिनेपिणी	ता और अनुग्रह से इस य-
विद्यांकुर	रामायण सातों काण्ड	न्त्रालय में अत्युत्तम टैप के
बालबोध	बाल काण्ड	पुष्ट काग़ज़ों में १९ पर्व बड़ी
	अयोध्या काण्ड	सुन्दरता से छपा है ॥